ISSN 2349-6614

अगस्त 2023

मूल्य 50 रु

प्रत्यूष

हिन्दी मासिक पत्रिका

चन्द्रयान - 3

उठेगा रहस्य से पर्दा

TRUSTROOF HEIGHTS

RERA Registration No.
Raj/P/2022/2135

Construction in Full Swing

TRUSTROOF HEIGHTS

Site Address : Plot No. 2, Mansarovar Enclave, New Navratan Complex, Bhuwana, Udaipur

प्री लॉन्चिंग बुकिंग पर पाईये ढेर सारे लाभ

- 2.69 लाख रूपये तक डिस्काउंट
- कार पार्किंग फ्री
- केश डिस्काउंट
- प्रथम पांच बुकिंग पर पाईये होण्डा एक्टिवा स्कूटर फ्री

*शर्तें लागू

Amenities

- Well Equipped Gym
- Fully Furnished & Air Conditioned Multi Purposed Hall
- Crafted Terrace Garden with Gazebos & Street Banches
- Well Furnished & Stylised Reception Area & Front Lobby

सेलिब्रेशन मॉल से 5 मिनिट की दूरी पर, सुखेर चौराहे से 2 मिनिट की दूरी पर
अर्बन मॉल से 3 मिनिट की दूरी पर

Mktd By :

ORANGE KEY REALTORS

RERA NO.: RAJ/P/2019/1149

ORANGE KEY REALTORS

Mob. : 98289 11779, 98289 11449

www.orangekey.co.in orangekeyrealtors@gmail.com

प्रत्यूष

अगस्त 2023 वर्ष 21 अंक 04

प्रत्यूष

मूल्य 50 रू
वार्षिक 600 रू

'प्रत्यूष' के प्रेरणा स्रोत मात श्रीमती प्रमिला देवी शर्मा एवं
तात श्री आनन्दी लाल जी शर्मा
प्रत्यूष परिवार का शत्-शत् नमन चरणों में पुष्प समर्पण

प्रधान सम्पादक विष्णु शर्मा हितैषी

सम्पादक रेणु शर्मा

विपणन प्रबंधक नितेश कुमार, नंदकिशोर मदन, भूमिका, उषा चन्द्रप्रभा, संगीता

टाइप सेटिंग जगदीश सालवी

सलाहकार मण्डल
गोपाल शर्मा (गोपजी), वैभव गहलोत
पवन खेड़ा, नीरज डांगी
कुलदीप इंदौरा, कृष्णकुमार हरितवाल
धीरज गुर्जर, अभय जैन
लालसिंह झाला, ओम शर्मा
अजय गुर्जर, आदित्य नाग
हेमंत भागवानी, डॉ. राव कल्याणसिंह
अशोक तम्बोली, सुंदरदेवी सालवी

चीफ रिपोर्टर : उमेश शर्मा

जिला संवाददाता
बांसवाड़ा - अनुराग चेलावत
चित्तौड़गढ़ - संदीप शर्मा
नाथद्वारा - लोकेश दवे
डूंगरपुर - सारिका राज
राजसमंद - कोमल पालीवाल
जयपुर - राव संजय सिंह
मोहसिन खान

प्रत्यूष में प्रकाशित सामग्री में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं, इनसे संस्थापक-प्रकाशक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।

प्रत्यूष
हिन्दी मासिक पत्रिका
प्रकाशक - संस्थापक :
Pankaj Kumar Sharrma
''रक्षाबंधन'', धानमण्डी, उदयपुर-313 001

स्वतंत्रता दिवस एवं रक्षाबंधन पर्व की हार्दिक शुभकामनाएं

अंदर के पृष्ठों पर...

रक्षा क्षेत्र

रक्षा उत्पादन और निर्यात में भारत की बढ़त
पेज 08

परम्परा

भाई-बहन के रिश्ते में मिठास का पर्व रक्षाबंधन
पेज 15

पर्व

झूम उठा मन आए दो सावन
पेज 24

वास्तु

रसोई की दिशा से बनते-बिगड़ते हैं रिश्ते
पेज 37

रिसता जख्म

हिरोशिमा में हुआ था मानवता के प्रति जघन्य अपराध
पेज 39

कार्यालय पता : 2, 'रक्षाबन्धन' धानमण्डी, उदयपुर (राज)
दूरभाष एवं फैक्सः 0294-2427703 वाट्सएप 9414077697
मोबाइल : 94141-57703(विज्ञापन), वाट्सएप 75979-11992(समाचार-आलेख), 98290-42499(वाट्सएप), 94141-66737
Email:pankajkumarsharma2013@gmail.com, Visit us at: www.pratyushpatrika.com

बापना द्वारा मैसर्स पायोनाइट प्रिन्ट मीडिया प्रा. लि. एम.आई.ए., उदयपुर से मुद्रित तथा 'रक्षाबन्धन' धानमण्डी उदयपुर से प्रकाशित।

Jaideep Shikshan Sansthan

Modern Complex, Bhuwana, Udaipur
Providing Inclusive Education since 1985
Tel No. 9460028679, 7891445401 | Email: jaideepschool85@gmail.com

Jaideep Senior Secondary School,
Modern Complex, Bhuwana

Jaideep Public School,
Modern Complex, Bhuwana

The Kids Paradise,
Modern Complex, Bhuwana

Jaideep Upper Primary School,
Chitrakoot Nagar, Bhuwana

Jaideep Middle School,
Dagliyo Ki Magri, Bhuwana

Dr. Devendra
Kumawat
Director

Mrs. Madhu
Kumawat
Asst. Director

Er. Vivek
Kumawat
Technical
Director

Er. Niharika
Kumawat
Administrator

English & Hindi Medium
100% Board Results | Well Equipped Labs | Smart Classrooms |
CCTV covered campus | Sports Club | Lush Green Campus | Transportation Facilities

अरिहन्त वाटिका

45,000 वर्ग फीट का हरा-भरा लॉन, आकर्षक विद्युत सज्जा

पार्किंग की
पूरी व्यवस्था

मीठे पानी
की सुविधा

12 कमरे व
2 हॉल उपलब्ध

मो.: 9414902400, 9414166467

सेन्ट ग्रिगोरियस स्कूल के पीछे, शनि महाराज मन्दिर के सामने, न्यू भूपालपुरा, उदयपुर

दूर नहीं अब भारत से चांद

चन्द्रयान मिशन-3 की 14 जुलाई को सफल लॉचिंग के साथ भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) ने इतिहास रच दिया है, इन पक्तियों के लिखे जाने तक चन्द्रयान-3 अपने लक्ष्य की ओर सही ढंग से बढ़ रहा है। इस यान का मॉड्यल 5 अगस्त तक पृथ्वी की कक्षा की परिक्रमा करता रहेगा। उसके बाद यह चन्द्रमा की कक्षा में प्रवेश करेगा। यह 23 अगस्त को चांद के गुरूत्वीय क्षेत्र में पहुंच कर 100 कि.मी के ऊपर प्रोपल्शन की मदद से सॉफ्ट लैंडिग करेगा। भारत के पहले चन्द्रयान ने 2008 में 22 अक्टूबर को उड़ान भरी थी। जिसने 8 नवम्बर को चन्द्रमा के स्थानान्तरण परिपथ में प्रवेश किया, उसके बाद 14 नवम्बर को इसका सम्पर्क टूट गया। चन्द्रयान-2 का श्री हरकोटा से ही 22 जुलाई 2019 को प्रक्षेपण किया गया। करीब 29 दिन बाद 20 अगस्त को इसने चन्द्रमा की कक्षा में प्रवेश किया लेकिन लैंडर 'विक्रम' और रोवर 'प्रज्ञान' की चन्द्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर साफ्ट लैंडिग न होने के कारण यह भी अपने उद्देश्य में सफल नहीं हो सका, लेकिन इससे हमारे वैज्ञानिकों के हौसले पस्त नहीं हुए। चन्द्रयान-3 इसका प्रमाण है। यह मिशन सफल रहता है तो भारत चांद पर अगला कदम भी बढ़ाएगा। हमारे वैज्ञानिकों को पूरा भरोसा है कि पिछली खामियों में सुधार के कारण मिशन-3 सफल होगा। अंतरिक्ष में गगनयान के जरिए इन्सानों को भेजने और चंद्रमा पर अगला मिशन भेजने का रास्ता भी इससे साफ होगा। तीन अंतरिक्ष यात्रियों के साथ गगनयान को अगले वर्ष अंतरिक्ष में भेजा जाना प्रस्तावित है। अभी तक चांद पर सर्वाधिक मिशन अमेरिका और रूस ने 70 के दशक तक भेजे हैं। अमेरिका ने जहां 6 बार इंसान चांद पर भेजे और वे सकुशल वापस भी लौटे, वहीं रूस ने कभी मानव चांद पर नहीं भेजे। लेकिन उसके यान की कई बार चांद पर सॉफ्ट लैंडिग हुई और वे नमूने उठाकर वापस धरती पर लौटे।

भारत की इस नई कोशिश पर पूरी दुनिया की निगाह है। चंद्रयान-3 की सफल सॉफ्ट लैंडिग भारत को उन देशों के क्लब में सम्मानपूर्ण प्रवेश देगी, जिसमें सिर्फ तीन सदस्य हैं- अमेरिका, रूस और चीन। भारत ऐसा करने वाला चौथा देश होगा। इस बार चांद पर जल सम्बंधी सूचना को और पुख्ता करना चन्द्रयान-3 का बड़ा लक्ष्य है। साल 2008 में भारत को ही चांद पर जल के संकेत मिले थे और 2021 में चांद पर जल की पुष्टि भी भारत की मदद से हुई थी। चन्द्रयान-3 की सफल लैंडिग भविष्य के भारतीय चन्द्र अभियानों की दिशा में महत्वपूर्ण कदम हो सकती है और इससे भारत की बढ़ती भू-राजनीतिक स्थिति को बड़ा-बल तो मिलेगा ही, यह मिशन इसरो के आगामी अंतरिक्ष अभियानों की राह को भी सुगम बनाएगा। सूर्य के अध्ययन के लिए आदित्य-एल इसी वर्ष लाँच किया जाना है। पृथ्वी के वातावरण और उसकी सतह के अध्ययन के लिए अमेरिका के साथ एक संयुक्त मिशन 2024 में तय है और अंतरिक्ष में भारत का पहला मानव मिशन गगनयान 2025 में प्रक्षेपित किया जाना है। चंद्रयान-3 की लैंडिग के लिए भी वैज्ञानिकों ने उस स्थान को चुना है, जहां दुनिया का कोई भी यान अब तक नहीं पहुंचा। पिछली नाकामी को देखते हुए इस बार सॉफ्टवेयर और हार्डवेयर में महत्वपूर्ण बदलाव किए गए हैं। इस बार लैंडर में पांच की बजाय चार थ्रस्टर इंजन हैं, मज़बूत पैर और बड़े सौर पैनल हैं। इसके पास पूर्वापेक्षा अधिक ईंधन है। यदि चन्द्रयान-3 की सफल लैंडिग हो गई, तो रोवर दो सप्ताह तक चन्द्रमा पर अनुसंधान करेगा। 1.75 टन वजनी लैंडर विक्रम पर जिम्मेदारी है कि 26 किलोग्राम का 6 पहियों वाला 'प्रज्ञान' नामक रोबोटिक रोवर चांद पर सही ढंग से उतर जाए। इसरो के अध्यक्ष श्रीधर सोमनाथ इसे अपनी अग्निपरीक्षा मानते हुए भरोसा भी जताते हैं कि वैज्ञानिकों की मेहनत इसे ज़रूर सफल करेगी। जहां 'प्रज्ञान' लैंड करेगा, उस छोर पर अंधेरा रहता है और वहां के रहस्य अबूझ हैं। माना जाता है कि वहां बर्फ के साथ खनिज के भण्डार भी हैं। करीब 6 अरब रू. की लागत से तैयार भारत का यह महत्वाकांक्षी अंतरिक्ष अभियान है। हम सब प्रार्थना करें कि अंचभित करने वाली गौरवपूर्ण कामयाबी भारत के नाम हो और अंतरिक्ष अनुसंधान की बढ़ती प्रतिद्वंद्विता में भारत के कदम आगे ही बढ़ते रहें।

रक्षा उत्पादन और निर्यात में भारत की बढ़ी दख़ल

2024-25 तक रक्षा निर्यात लक्ष्य 35,000 करोड़

सनत जोशी

देश ने पिछले पांच वर्षों में रक्षा निर्माण पर अधिक ध्यान केन्द्रित करते हुए आत्म निर्भरता हासिल करने की दिशा में कई उपाय किए हैं। अपने शासन के कार्यकाल के नौ वर्ष पूरे होने पर यदि मोदी सरकार ने अपनी उपलब्धियों को जोर-शोर से रेखांकित किया है तो इसीलिए कि उसने इस दौरान बहुत कुछ कर दिखाया है। इन वर्षों में विकास की विभिन्न योजनाओं ने जहां देश की तस्वीर बदलने का काम किया है, वहीं जनकल्याणकारी योजनाओं ने जनता को लाभान्वित करने के साथ अपनी छाप भी छोड़ी है। कुछ योजनाओं ने तो मिसाल कायम की है, जैसे कि उज्जवला गैस सिलेंडर और जन-धन योजना। इन नौ वर्षों में देश में आधारभूत ढांचे का भी उल्लेखनीय और कुछ क्षेत्रों में तो अभूतपूर्व विकास हुआ है। देश के प्रत्येक हिस्से में आधारभूत ढांचे का जिस तेजी से विकास होता दिख रहा है, उसकी अनदेखी नहीं की जा सकती। सड़क, पुल, हवाई अड्डे, रेलमार्ग आदि जिस द्रुत गति से निर्मित हो रहे हैं, वे देश की तस्वीर बदलने के साथ लोगों के दैनिक जीवन को सुगम भी बना रहे हैं।मोदी सरकार जहां घरेलू मोर्चे पर बहुत कुछ अर्जित करने में सफल रही, वहीं अंतरराष्ट्रीय मोर्चे पर भी उसने अपनी नीतियों से छाप छोड़ी। आज अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारत की छवि एवं उभरते हुए ऐसे सक्षम देश की है, जो विश्व की समस्याओं के समाधान में सहायक है। विशेष बात यह है कि वह सबसे तेज आर्थिक विकास वाला देश है और विश्व की तीसरी बड़ी अर्थव्यवस्था बनने की राह पर है।

सैन्य निर्यात में भी जबरदस्त इजाफा हुआ है। पिछले 9 वर्षों में नीतिगत पहल और सुधारों के कारण सैन्य निर्यात में तेजी से वृद्धि हुई है और आयात में गिरावट आई है। वित्तीय वर्ष 2013-14 और 2022-23 के बीच निर्यात में 23 गुना वृद्धि हुई, जबकि विदेशों से हथियारों और प्रणालियों की खरीद पर खर्च 2018-19 में कुल व्यय के 46 प्रतिशत से गिरकर दिसम्बर 2022 में 36.7 प्रतिशत हो गया। रक्षा मंत्रालय ने वित्त वर्ष 2013-14 में 686 करोड़ से बढ़कर वित्त वर्ष 2022-23 में रक्षा निर्यात लगभग 16 हजार करोड़ हो गया है। यह 23 गुना उल्लेखनीय वृद्धि वैश्विक रक्षा विनिर्माण क्षेत्र में भारत की प्रगति को दर्शाती हैं। रक्षा क्षेत्र में विकास को बढ़ावा देने के लिए महत्वपूर्ण सुधारों के कारण देश में रक्षा उत्पादन का मूल्य पहली बार एक लाख करोड़ रुपए को पार कर गया है। यह आंकड़ा 2022-23 में 1,06,800 करोड़ रुपए था, जबकि 2021-22 में 95,000 करोड़ रुपए और पांच साल पहले 54,951 करोड़ रुपए था।

सैन्य वाहन व शस्त्र उत्पादन

भारत इस वक्त तेजस लाइट कॉम्बैट एयरक्राफ्ट (एलसीए), विभिन्न प्रकार के हेलीकॉप्टरों, युद्धपोतों, टैंकों, तोपों, मिसाइलों, रॉकेटों और विभिन्न प्रकार के सैन्य वाहनों सहित हथियारों और प्रणालियों का उत्पादन करता है। देश ने पिछले पांच वर्षों में रक्षा सामग्री निर्माण पर अपना ध्यान केंद्रित किया है और आत्मनिर्भरता हासिल करने के लिए कई उपाय किए हैं। इनमें हथियारों, प्रणालियों और पुर्जों की एक शृंखला के आयात पर प्रतिबंध लगाना, स्थानीय रूप से निर्मित सैन्य हार्डवेयर खरीदने के लिए एक अलग बजट बनाना, रक्षा उत्पादन में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश को 49 प्रतिशत से बढ़ाकर 74 प्रतिशत करना और व्यापार में आसानी शामिल है।

बढ़ेगा निर्यात, घटेगा आयात

भारत की नजर 2024–25 तक रक्षा निर्माण में 1,75,000 लाख करोड़ रुपए के कारोबार पर है। देश की सरकार का फोकस न केवल आयात पर निर्भरता कम करने पर है, बल्कि निर्यात को बढ़ावा देने पर भी है।

85 देशों में कारोबार

भारत लगभग 85 देशों को सैन्य हार्डवेयर निर्यात कर रहा है, जिसमें लगभग 100 कंपनियां आउटबाउंड शिपमेंट में शामिल हैं। इसमें मिसाइल, आर्टिलरी गन, रॉकेट, बख्तरबंद वाहन, अपतटीय गश्ती पोत व्यक्तिगत सुरक्षा गियर, विभिन्न प्रकार के रडार निगरानी प्रणाली और गोला–बारूद शामिल है। भारत ने 2024–25 तक 35,000 करोड़ रुपए का रक्षा निर्यात लक्ष्य रखा है। रक्षा निर्यात को बढ़ावा देने के लिए सरकार ने पिछले नौ वर्षों में नीतिगत पहल के साथ कई सुधार किए हैं। निर्यात प्रक्रियाओं को सरल कर उद्योग के अनुकूल बनाया गया है, जिसमें एंड–टू–एंड ऑनलाइन निर्यात में देरी कम और व्यापार में आसानी हो रही है। अपनी तमाम उपलब्धियों के बाद भी मोदी सरकार को कुछ मोर्चों पर अतिरिक्त ध्यान देने की आवश्यकता है। जैसे कि देश को न्यायिक सुधारों की अभी भी प्रतीक्षा है। निसंदेह प्रशासनिक सुधार भी अपेक्षित हैं। प्रशासनिक सुधारों को इसलिए सर्वोच्च प्राथमिकता दी जानी चाहिए, क्योंकि देश की जनता को रोजमर्रा के भ्रष्टाचार से राहत नहीं मिली है। इसी तरह सरकार को बेरोजगारी के मोर्चे पर भी मुस्तैदी दिखाने की आवश्यकता है।

कविता

बगुलों का स्वाँग

डॉ. दीपक आचार्य

मद–मस्ती के साथ/ चहल कदमी
करते हैं बगुले
जब किसान खेत में हल चलाता है,
पानी देता और खरपतवार
निकालता है,
बगुले हरदम मौजूद रहते हैं
इसी फेर में कि–
कहीं कुरेदा हुआ कोई कीट
आ जाए उनकी नज़र में।

इसी तरह हौले–हौले बगुले
बढते हैं, किसी न किसी के पीछे
'शालीन' होकर,कुछ न कुछ भक्ष्य
बिना मेहनत के मिल जाने के फेर में।

यों ही गुलछर्रे उड़ाते रहे हैं बगुले
खेतों से पोखरों तक
बस्तियों से जंगलों तक
नदी–नालों से तालाबों तक
लोकपथ से राजपथ तक,
मुफ्तखोर बगुलों के लिए नहीं है–
कहीं कोई वर्जना

न दायरे तय हैं, न मर्यादाएं
इनके स्याह चरित्र से बेखबर
भोले और भ्रमित लोग नहीं जान पाते
इन धवलों के मालिन्य और
बहुरुपिया स्वाँग को।

पुरानी से लेकर वर्तमान
पीढ़ियों तक को
ये ही ये नज़र आते हैं
हर बार हर ओर
कभी बिजूकों तो कभी लोमड़छाप
बुद्धिजीवियों के रूप में।

सदियों से चला आ
रहा है यही कुचक्र
होता है केवल रूपान्तरण
बाकी सब कुछ वही का वही।

जाने कितने ही जन्मों से हो रहा
इनका उन्मुक्त प्रजनन,
अनचाहा महाविस्फोट?
इन मुफ्तखोरों का।

जन सम्मान
वीडियो
कांटेस्ट
वीडियो बनाओ
इनाम पाओ
रोज़
1st
प्रथम पुरस्कार
₹1 लाख
प्रतिदिन
2nd
द्वितीय पुरस्कार
₹50 हजार
प्रतिदिन

तृतीय पुरस्कार
₹25 हजार
प्रतिदिन

₹1000 के 100 प्रेरणा पुरस्कार भी घोषित किये जाएंगे
प्रतिदिन

आपने राजस्थान सरकार की "जन सम्मान योजनाओं" को समझा है। अब मौका है आप इसका वीडियो बनाकर योजनाओं के लाभ की जानकारी हर व्यक्ति तक पहुंचाकर जनकल्याण के कार्य में भागीदार बनें।

– अशोक गहलोत, मुख्यमंत्री, राजस्थान

आयोजना विभाग, राजस्थान

अधिक जानकारी के लिए लॉग इन करें

jansamman.rajasthan.gov.in

मौसम बारिश का, फिक्र बच्चों की

मौसम गर्मी और उमस का हो तो राहत के नाम पर सिर्फ एक ही खयाल आता है। बारिश। बारिश की बजती बूंदों का संगीत है ही ऐसा मनमोहक कि वह सबको भाता है। लेकिन बात करें सेहत की तो यह खुशगवारी कई तरह के खतरों की शक्ल भी ले लेती है। इसमें कई तरह के रोग उभरते हैं। खासकर बच्चे उनकी चपेट में जल्दी आ जाते हैं। ऐसे में सामान्य एतिहात रखना आवश्यक है।

डॉ. रजनी नागदा

बारिश का मौसम आते ही कई तरह की बीमारियों का खतरा बढ़ जाता है। इस मौसम में वातावरण में आर्द्रता अधिक होती है, जिसके कारण पाचन क्षमता भी कम हो जाती है। मौसमी बीमारियों की चपेट में सबसे ज्यादा बच्चे आते हैं, क्योंकि उनकी रोग प्रतिरोधक क्षमता अपेक्षित रूप से कमजोर होती है। बारिश के मौसम में बच्चों की सेहत का कैसे ध्यान रखें, इस पर सामान्य रूप से कुछ बातों की समझ हमें होनी चाहिए। इस मौसम में कई बार बच्चों की तबीयत अचानक काफी बिगड़ जाती है। ऐसे में सामान्य एहतियात के साथ यह भी जरूरी है कि मौसमी बीमारियों से बचने के लिए अपने डॉक्टर से चर्चा करके कुछ जरूरी दवाएं घर पर रखें ताकि आपात स्थिति से निपटने में मदद मिले।

साफ-सफाई

बारिश के मौसम में नमी की वजह से मच्छर, बैक्टीरिया सबसे ज्यादा पनपते हैं। ये मच्छर और बैक्टीरिया गंदगी और आसपास जलभराव की वजह से सबसे ज्यादा पनपते हैं। इसलिए घर और उसके आसपास स्वच्छता का विशेष ध्यान रखना बहुत जरूरी है। घर में फर्श की नियमित सफाई फिनाइल से जरूर करें। चूंकि कीचड़ की वजह से भी मच्छर पनपते हैं, इसलिए घर के अंदर जूते-चप्पल न रखें। कीचड़ से सने जूते-चप्पलों को अच्छी तरह साफ करें क्योंकि इनसे बैक्टीरिया और मच्छर घर में प्रवेश करते हैं। घर में ऐसे स्थान जहां पानी भरा रहता है, जैसे कूलर, गमले आदि की भी सफाई जरूर करें। इस तरह के एहतियात से इस मौसम में होने वाली कई बीमारियों से बचा जा सकता है।

खाना-पीना

घर के बाहर का खाना बच्चों को खूब भाता है पर इस मौसम में यह आदत सेहत के लिहाज से नुकसानदेह साबित हो सकती है। बारिश के मौसम में संक्रमण से बचाने के लिए बच्चों को घर का खाना ही खिलाएं। बच्चों को बाहर के जंक फूड खाने की आदत रहती है। बारिश में इस कारण संक्रमण का खतरा काफी बढ़ जाता है। वैसे भी बाहरी खाने में ज्यादा साफ-सफाई का ध्यान नहीं रखा जाता है, ऐसे में बच्चों के बीमार पड़ने की आशंका बनी रहती है। घर में बहुत देर का रखा हुआ बासी खाना भी नुकसानदेह साबित हो सकता है। बेहतर होगा कि इसका सेवन न आप करें, न आपके बच्चे। कई ऐसे अध्ययन हैं जिनमें बताया गया है कि दुनिया में सामान्य से लेकर घातक बीमारियों की सबसे बड़ी वजह दूषित जल का सेवन है। बरसात के दिनों में दूषित पानी बीमारी का मुख्य कारण बनता है। इसलिए बच्चों को साफ पानी ही पीने को दें। पीने के पानी को 10- 15 मिनट तक उबाल कर साफ बर्तन में रखें। घर से बाहर निकले तो पानी की बोतल साथ जरूर रखें। अगर पानी खरीदना ही पड़े तो किसी अच्छी कंपनी का सीलबंद पानी ही लें।

विटामिन सी

इस मौसम में सबसे ज्यादा बीमार बच्चे ही पड़ते हैं। इनकी रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के लिए जरूरी है कि उन्हें विटामिन सी से भरपूर चीजें ज्यादा से ज्यादा खिलाएं। इससे वे मौसमी बीमारियों के प्रकोप से आसानी से बच सकते हैं। वैसे भी जिन बच्चों को सर्दी-जुकाम की समस्या हर मौसम में होती है, उन्हें तो विटामिन सी का सेवन नियमित रूप से करवाना ही चाहिए। विटामिन सी के लिए मौसंबी, संतरा, नींबू, आंवला आदि बच्चों को खिलाना सामान्य और बेहतर विकल्प है।

पहनावे का ध्यान

सेहत का संबंध सिर्फ खानपान से नहीं बल्कि परिधान से भी है। लिहाजा अगर आप खुद को और अपने बच्चों को स्वस्थ रखना चाहते हैं तो परिधान के बारे में सजगता से विचार करें। मानसून के दौरान कभी धूप, कभी बारिश का आना-जाना लगा रहता है। ऐसे मौसम में बच्चों-बड़ों सबको सूती कपड़े पहनना चाहिए। इन्हें पहनने से आराम भी खूब मिलता मिलता है। बच्चों के मामले में यह भी ध्यान रखने की बात है कि कपड़े ऐसे हों जो उनके पूरे शरीर को ढकते हों। सूती कपड़े पसीने के रूप निकलने वाले शरीर के टॉक्सिन को आसानी से सोख लेते हैं और शरीर से गंदगी को आसानी से दूर कर देते हैं। सूती या खादी के वस्त्र पहनना बच्चों को भी सहज लगता है।

With Best Compliments

Manglam Arts

R. K. Rawat (Shyam)
Director

Sukhadia Circle, Udaipur - 313004 INDIA Tel. : +91-294-2425157/58/59/60
E-mail: shyam@manglam.com, udaipur@manglam.com, Website: www.manglamarts.com

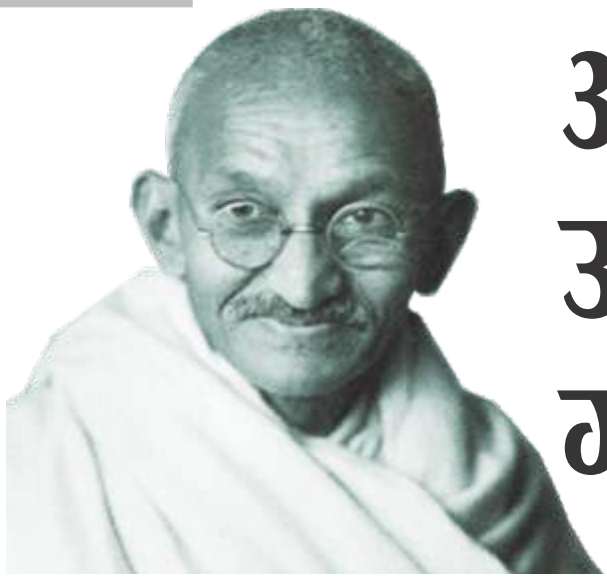

आदिवासी उत्थान पर गांधी का चिंतन

विष्णु शर्मा हितैषी

विश्व आदिवासी दिवस
विशेष : 9 अगस्त

महात्मा गांधी ने दुनियां को कोई नया वाद या सिद्धांत देने का दावा कभी नहीं किया। उन्होंने तो अपने आचरण से वह मार्ग दिखाया जिस पर चलकर समस्त प्राणियों का हित साधन हो सकता है। इसीलिए उन्होंने कहा कि 'मेरा जीवन ही संदेश है।' उनके जीवन की छोटी-बड़ी घटनाएं अपने आप में किसी सीख से कम नहीं हैं। वे कभी किसी को वह काम करने को नहीं कहते थे, जिसे उन्होंने न किया हो। आज जब हम गांधी और उनके दर्शन को लेकर बात कर रहे हैं तो ज़ेहन में स्वाभाविक रूप से प्रश्न उठता है कि यदि वे आज होते तो भारत को लेकर क्या सोचते? क्या करते? इतना तो तय है कि वे हमारी तरह नहीं सोचते। गांधी अपनी ही तरह सोचने वाले थे। इतिहास में ऐसे कम ही लोग हुए हैं, जिनके सोचने का तरीका इतना ज्यादा सकारात्मक और मौलिक रहा हो। ऐसे लोग और भी कम हैं – जिनके सोचने के तरीके में उनका जमाना पूरी तरह से शामिल हो।

आज के भारत में गांधी का होना, बेशक व्यक्ति रूप में संभव नहीं है। पर यह तो संभव है कि हम गांधी को उस झूठी छवि से मुक्त करें, जो वे थे ही नहीं। उन्हें उस रूप में जानें, जो वे थे – एक संत, महात्मा, उद्धारक, त्राता ..... नहीं बल्कि एक व्यक्ति जो अपनी परम्पराओं को जीता था, पर रूढ़ि के रूप में नहीं, जीवन-व्यवहार के रूप में और जिसने आधुनिक संसार से श्रम और समानता, सम्मान और स्वतंत्रता को अपने भीतर आत्मसात किया था। एक ऐसा व्यक्ति जो जीवन कर्म और विचारों का सतत् प्रवाह था..... और जो भारत की उसी सांस्कृतिक परम्परा से बना था, जिसकी विरासत से हम सबका जीवन समृद्ध है।

प्राय: यही माना जाता रहा है कि निरन्तर आर्थिक विकास के लिए मशीनीकरण ज़रूरी है, तभी तो दुनिया से गरीबी का अभाव दूर होगा, पर महात्मा गांधी ने अपने चिंतन से यह जान लिया था कि इस तरह के आर्थिक विकास के तहत गरीबी व विषमता बढ़ने की संभावना भी मौजूद रहती है। उन्होंने आर्थिक विकास को नहीं, बल्कि गरीब आदमी की बुनियादी ज़रूरतों को अपनी आर्थिक सोच का केन्द्र बनाया। उन्होंने सभाओं, मीटिंगों में देश के नेताओं और नियोजकों से हर वक्त आग्रह किया कि, 'जब भी तुम पर तुम्हारी हैसियत का अहम् हावी होने लगे तो सबसे पहले उस गरीब और कमज़ोर आदमी की शक्ल को याद करना..... जिसे तुमने देखा है और फिर अपने दिल से पूछना कि जिस रास्ते पर तुम कदम बढ़ाने जा रहे हो, वह उस आदमी के लिए कितना उपयोगी होगा। क्या उससे उसे कुछ लाभ मिलेगा? क्या इससे उन लोगों का स्वराज का सपना साकार होगा, जिनके पेट भूखे हैं और आत्मा अतृप्त है।' इस तरह महात्मा गांधी ने गरीब आदमी को अपने आर्थिक चिंतन का केन्द्र बनाया और देश के गरीब, किसान, आदिवासी, दस्तकार और मज़दूर की आजीविका को अंधाधुंध मशीनीकरण से बचाने पर जोर दिया। आज भी हम पंचायतों के माध्यम से गांवों में गांधी की इस कल्पना का बीजारोपण कर गरीब के जीवन स्तर को बेहतर बनाने की दिशा में कदम उठा सकते हैं। गांधी नैतिक मूल्यों पर आधारित अर्थव्यवस्था के हिमायती थे। दरअसल गांधी जी के सिद्धांत और आदर्श सर्वकालीन हैं और मौजूदा दौर में उनकी उपयोगिता पर सवाल उठाना पाखंड है। उनका मानना था कि विकास वही सही है, जो जिसमें मानव का कल्याण निहित हो। इस मामले में पूंजीवाद, समाजवाद, साम्यवाद या अन्य किसी वाद से वे कभी सहमत नहीं हुए। उनका विश्वास सदैव सर्वोदय में रहा।

समता और सादगी के उनके संदेश में पर्यावरण संरक्षण का भाव भी निहित रहता था। वे प्राय: कहते थे कि – 'प्रकृति के पास सब मनुष्यों की जरूरतों को पूरा करने के लिए तो बहुत कुछ है, पर उनका लालच पूरा करने के लिए कुछ भी नहीं।' गांधी के इस निहितार्थ की उपेक्षा हुई, वन उजड़ गए वनस्पति और वन्य जीवों की अनेक प्रजातियाँ नष्ट हो गई। वनवासियों के सामने आजीविका का भयंकर संकट पैदा हो गया। मौसम के तेवर लगातार तीखे होने से जीव-जगत का अस्तित्व ही संकट में पड़ गया। गांधीजी के समता और सादगी के आव्हान का अनुसरण कर ही पर्यावरण के विनाश को रोकना संभव हो सकता है। आदिवासी समाज को इस देश का मूल निवासी माना गया है जो आज अपने अस्तित्व को बचाने की चिंता में खोया है। आदिकाल से यह समाज प्रकृति प्रेमी रहा है। उसका जीवन ही प्रकृति पर

निर्भर है। लेकिन आज उसे वन, पहाड़, नदी सबसे अलग-थलग करने के प्रयास हो रहे हैं। खनिज सम्पदा के दोहन के लालच ने पहाड़ियों का सीना चाक कर दिया है। अनियोजित विकास और नीति-नियामकों की अनदेखी से वन उजड़ गए हैं, नदियां सूख गई हैं। संविधान में संरक्षण के बावजूद धनबल और बाहुबल आदिवासी जनजीवन की मर्यादाओं, परम्पराओं की परवाह किए बिना उनकी बेदखली के कोई प्रयास नहीं छोड़ रहा है। ऐसी स्थिति में हमें गांधी के ही आर्थिक चिंतन पर लौटते हुए आदिवासी, दलित और गरीब के हितों को सुरक्षित रखने पर अधिक ध्यान देना होगा। आदिवासी वर्ग परम्परागत ज्ञान और पूर्वजों से प्राप्त हुनर के बल पर ही अपनी आजीविका, कृषि अथवा वनौपज के जरिये चलाता है। गरीबी शोषण पिछड़ापन, धनाभाव, अशिक्षा तथा तकनीकी ज्ञान के

अभाव में यह वर्ग जो कुछ भी उत्पाद तैयार करता है, बाज़ार में उसे उसकी लागत ही नहीं मिल पाती है। अतएव वनौपज से सम्बद्ध कुटीर उद्योग आदिवासी गांवों और ढाणियों में लगाए जाने चाहिए। आदिवासी मूल रूप से संकुचित स्वभाव के होते हैं। जिसके अनेक ऐतिहासिक, सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक कारण हैं, जिनके चलते वे अन्य वर्ग के लोगों से पूरी तरह घुल-मिल नहीं पाते। बाहरी लोगों से उनका तालमेल नहीं बैठ पाता। ऐसे संकोची स्वभाव के ऐसे वर्ग के लिए उनके अनुकूल अनौपचारिक व औपचारिक विशेष शिक्षा व्यवस्था की जानी चाहिए। सरकार, राजनीतिक दल, आदिवासी उत्थान से सम्बन्धित स्वयंसेवी संस्थाओं अथवा आदिवासी नेताओं को वास्तव में कुछ करना है तो उन्हें आदिवासियों की प्रगति के उन अवरोधकों को सकारात्मक तरीके से पहचानना होगा और दूर करना होगा जो उनके विकास व उत्थान में बाधक हैं। ऐसी स्थिति में आज गांधी की उस आवाज़ को सुनने की ज़रूरत है, जो हमें कुछ भी गलत करने से रोकती है, टोकती है। उसे अनसुना करने पर हमें धिक्कारती है। यह इस बात का सबूत है कि अपने आदर्शों के रूप में वे अभी भी हम सबके बीच हैं। हमारे अन्दर का गांधी नहीं मरा है। न ही मरने देंगे। गांधी आज भी ज़िंदा है और उनके रास्ते पर चलने में ही देश का हित है।

डॉ. सुशान्त जोशी

(एम.एस., ई.एन.टी.), कान, नाक, गला, मुख और गला केंसर रोग विशेषज्ञ

!! एक छोटी सी पहल !!

अगर आपकी आयु 65 वर्ष से अधिक है तो आपसे 40 प्रतिशत कम परामर्श शुल्क लिया जाएगा (मात्र 200/- रुपए)
अगर आप गर्भवती महिला या दिव्यांग हैं तो आपको बिना प्रतीक्षा तुरंत सेवा दी जाएगी।

अगर आप महीने के पहले व तीसरे मंगलवार को दिखाने आए तो आपसे कोई परामर्श शुल्क नहीं मांगा जाएगा एवं इच्छानुसार प्राप्त शुल्क की असहाय एवं गरीब बच्चों के स्वास्थ्य व शिक्षा के लिए उपयोग में लिया जाएगा।

ENT FOR ALL

जोशी ई.एन.टी. क्लिनिक

आकार कॉम्पलैक्स के पास, पवन मेडिकल के पीछे, मैन यूनिवर्सिटी रोड, उदयपुर (राज.) 313001

✆ 0294-2940888, 8003494667

प्रत्यूष

कालसर्प योग का निवारण

काल सर्पयोग के कारण जातक को जीवन भर संतान का सुख नहीं मिल पाता और यदि संतान की प्राप्ति हो भी जाए तो वह दुःख देने वाली होती है। समय रहते यदि दोष के निवारण हेतु शास्त्र सम्मत उपाय अपना लिए जाएं तो जीवन में योग्य व शिष्ट संतान का सुख प्राप्त किया जा सकता है।

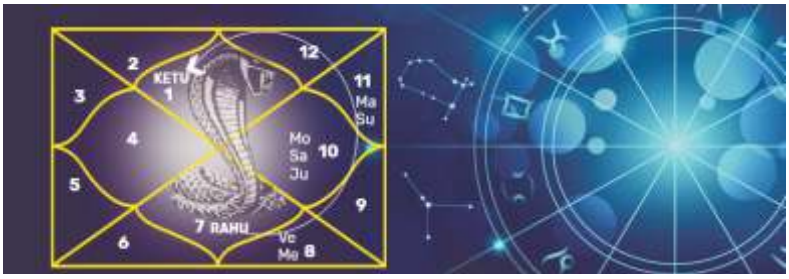

पं. कमल श्रीमाली

विवाह का उद्देश्य मात्र शारीरिक सुख नहीं बल्कि गृहस्थ जीवन का सफल संचालन एवं वंशवृद्धि के लिए संतान की उत्पत्ति करना भी होता है। जीवन के सात सुखों में संतान सुख विशेष स्थान रखता है। जहां एक और शास्त्रों की मान्यता के अनुसार पितृ ऋण से उऋण होना जरूरी है वहीं देखा जाए तो आंगन में बच्चे की किलकारियां परिवार को व्यस्त कर देती हैं व ईर्ष्या-द्वेष मिटाकर प्यार का संचार करती हैं। किसी घर संतान होती ही नहीं और किसी घर की संतान चरित्रहीन, दुष्ट हो जाए तो भी माता-पिता के लिए अपमानजनक स्थिति बन जाती है। बारह प्रकार के कालसर्प योगों में पदम नामक कालसर्प योग कुंडली के पंचम भाव से संबंधित है। पंचम भाव संतान, शिक्षा, पूर्वजन्म के कर्म आदि का भाव है। इस योग के कारण संतान सुख में रूकावट आती है, शिक्षा में बाधा उत्पन्न होती है और निरंतर चिंता तथा परेशानी के कारण जातक का जीवन संघर्षमय बना रहता है। परिवार में संतान की हर दंपती को अपेक्षा रहती है। बिना संतति के लोक व परलोक सफल नहीं होता। शास्त्रों में कहा गया है कि 'पुत्रार्थे क्रियते भार्या पुत्रः पिंड प्रायोजनः' पुत्र प्राप्ति के हेतु भी भार्या की आवश्यकता है न कि कामवासना को तृप्त करने के लिए और पुत्र के द्वारा ही उत्तर क्रिया सम्पन्न होती है। 'अपुत्रस्यगहं शून्य' व्यवहार दृष्टि से भी बिना पुत्र के घर मानो शून्य है। जिस घर में परिवार में वंश को आगे बढ़ाने वाला पुत्र न हो वहां सारे सुख व्यर्थ हो जाते हैं। वे लोग बहुत ही भाग्यशाली होते हैं जिन्हें सुपुत्र की प्राप्ति होती है। जो माता-पिता का आदर करता है और समाज में उनका नाम रोशन करता है। उनका वंश आगे बढ़ाता है। बेटी होनहार हो सकती है, बहुत नाम कर सकती है लेकिन वह ससुराल के वंश को आगे बढ़ाती है। पुत्र का सबसे बड़ा कर्तव्य ही पुनः पुत्र उत्पन्न कर पितृ ऋण से मुक्त होना है। यदि पुत्र कपूत हो तो ऐसी संतान से निरन्तर अपमान सहना पड़ता है, लोगों की शिकायतें सुननी पड़ती हैं, घर का वातावरण भी

दूषित हो जाता है। समाज में जो सम्मान अर्जित किया है वह भी बर्बाद हो जाता है। जिन लोगों के ऐसी संतान होती है वे दुर्भाग्यशाली ही होते हैं। परंतु क्या आपने कभी सोचा है कि ऐसा क्यों होता है? क्यों किसी के लाख प्रयासों के पश्चात भी संतान नहीं होती? क्यों किसी के संतान तो होती है परंतु पुत्र की प्राप्ति नहीं होती? क्योंकि किसी को पुत्र की प्राप्ति तो होती है परंतु वह दुराचारी और कुपुत्र हो जाता है? इन प्रश्नों का उत्तर आपकी कुंडली में निश्चित रूप से मिल सकता है। संभव है कि आपको उपरोक्त दोष या कष्ट आपकी कुंडली में स्थित कालसर्प योग के कारण प्राप्त हो रहे हों। बृहत्पराशर होराशास्त्र के अनुसार निम्नलिखित योगों में सर्प के शाप से संतान हानि होती है।

पुत्रस्था नगते राहौ कुजेन च निरीक्षते।
कुजक्षेत्रगते वाप सर्पशापात् सुतक्षयः ।
पुत्रेशे राहु संयुक्ते पुत्रस्थे भानुनंदने।
चंद्रणे संयुते दुष्टे सर्पशापात् सुतक्षयः।।
कारके राहुसंयुक्ते पुत्रेशे बलवर्जिते।
लग्नेशे कुंजसंयुक्ते सर्पशापात् सुतक्षयः।।
कारके भौम संयुक्ते लग्ने च राहु संयुते।
पुत्रस्तानाधिपे दुःस्थे सर्पशापात् सुतक्षयः।।

अर्थात संतान भाव में स्थित राहू को मंगलपूर्ण दृष्टि से देखे अथवा राहू मेष या वृश्चिक राशि में हो। संतान भाव का स्वामी राहू के साथ कहीं भी हो तथा पंचम में शनि हो या शनि को या मंगल को चंद्रमा देखे या उससे युति करें। संतानकारक अर्थात पंचम कारक गुरू राहू के साथ हो और पंचमेश निर्बल हो, लग्नेश व मंगल साथ-साथ हों। गुरू व मंगल एक साथ हों, लग्न में राहू स्थित हो, पंचमेश छठे आठवें या 12 वें घर में हो।

उपर्युक्त सभी सर्प शाप के योग हैं जिनसे जातक को संतान कष्ट होता है।

भौमांशे भीमसंयुक्ते पुत्रेशे सोमनंदने।
राहुमांदियुते लग्ने सर्पशापात् सुतक्षयः।
पुत्रभावे कुजक्षेत्रे पुत्रेशे राहुसंयते।
सौम्यदृष्टे युते वापि सर्पशापात् सुतक्षयः।।
पुत्रस्था भानुमंदाराः स्वर्भानुशशि जरोडगिराः।
निर्बलौ पुत्रलग्नेशौ सर्पशापात् सुतक्षयः।।
लग्नेशे राहुसंयुक्ते पुत्रेशे भौमसंयुते।
कारके राहुयुक्ते या सर्पशापात् सुतक्षय ।

अर्थातः संतान भाव में 3.6 राशियां हों, मंगल अपने ही नवांश में हो, लग्न अपने ही नवांश में हो, लग्न में राहू व गुलिक हो। संतान भाव में 1.8 राशियां हों, पंचमेश मंगल राहू के साथ हो अथवा संतानेश मंगल से बुध की दृष्टि या युति संबंध हो। संतान भाव में सूर्य,शनि या राहू, बुध, गुरू एकत्र हों और लग्नेश व पंचमेश निर्बल हों। लग्नेश व राहू एकसाथ हों, संतानेश व मंगल और गुरू व राहू एक साथ हों। उपर्युक्त योगों में भी सर्प शाप से संतान नहीं होती अथवा जीवित नहीं रहती।

बृहत्पराशर होरा शास्त्र में सर्प शाप का शांति विधान इस प्रकार है:

ग्रहयोगवशेनैवं नृणां ज्ञात्वाअनपत्यता।
तद्दोष परिहारार्थं नागपूजां च कारयेत।।
स्वगृहयोक्तविधानेन प्रतिष्ठांकारयेत् सुधीः।
नागमूर्ति सुवर्णेन कृत्वा पूजां समाचारेत् ।।
गोभूतिलहिरण्यादि दघाद् वित्तानुसारतः।
एवं कृते तु नागेंद्र प्रसादाद् वर्धते कुलम्।।

अर्थात सर्प शाप से मुक्ति के लिए नागपूजा अपनी कुल परम्परा के अनुसार करें। नागराज की मूर्ति की प्रतिष्ठा करें अथवा नागराज की सोने की मूर्ति बनाकर प्रतिदिन पूजा करें। तत्पश्चात गोदान, भूमिदान, तिलदान, स्वर्णदान अपनी सामर्थ्य के अनुसार करें।

भाई-बहन के रिश्ते में मिठास का पर्व रक्षाबंधन

भाई-बहन का रिश्ता मिश्री सा मीठा और मखमल की भांति मुलायम होता है। इस मिठास और कोमलता को बढ़ा देती है राखी। कहने को तो राखी केवल एक धागा है, लेकिन इस धागे में बंधा होता है, बहन-भाई का विश्वास, सहारा और प्यार। रक्षाबंधन का पर्व भाई बहन के रिश्ते की मोहक अनुभूति को सघनता से अभिव्यक्त करता है।

रेणु शर्मा

भारतीय धर्म-संस्कृति के अनुसार रक्षाबंधन का त्योहार श्रावण माह की पूर्णिमा को मनाया जाता है। यह त्योहार भाई-बहन को स्नेह की डोर में बांधता है। इस दिन बहन अपने भाई के मस्तक पर टीका लगाकर रक्षा का बंधन बांधती है, जिसे राखी कहते हैं। श्रावण (सावन) में मनाए जाने के कारण इसे श्रावणी (सावनी) या सलूनो भी कहते हैं। रक्षाबंधन में राखी या रक्षासूत्र का सबसे अधिक महत्व है। राखी कच्चे सूत जैसे सस्ती वस्तु से लेकर रंगीन कलाव, रेशमी धागे और सोने या चांदी जैसी महंगी वस्तु तक की हो सकती है। रक्षाबंधन भाई-बहन के रिश्ते का प्रसिद्ध त्योहार है, रक्षा का मतलब सुरक्षा और बंधन का मतलब बाध्य है। रक्षाबंधन के दिन बहनें अपने भाईयों की तरक्की के लिए भगवान से प्रार्थना करती हैं। राखी सामान्यत: बहनें भाई को ही बांधती हैं, परंतु ब्राह्मणों, गुरुओं और परिवार में छोटी लड़कियों द्वारा सम्मानित संबंधियों (जैसे पुत्री द्वारा पिता) को भी बांधी जाती है। यह एक ऐसा त्योहार है, जो भाई-बहन के प्यार को और मजबूत बनाता है, इस दिन पूरा परिवार एक हो जाता है और राखी, उपहार व मिठाई देकर अपना प्यार साझा करता है। अब तो प्रकृति संरक्षण हेतु वृक्षों को राखी बांधने की परम्परा भी प्रारंभ हो गई है।

मान्यताएं: उत्तरी भारत में यह त्योहार भाई-बहन के अटूट प्रेम को समर्पित है। इसका प्रचलन सदियों पुराना बताया गया है। रक्षाबंधन का उल्लेख हमारी पौराणिक कथाओं व महाभारत में मिलता है और इसके अतिरिक्त इसकी ऐतिहासिक व साहित्यिक महत्ता भी उल्लेखनीय है। भगवान विष्णु ने वामन अवतार धारण कर बलि राजा के अभिमान को इसी दिन चकानाचूर किया था। इसलिए यह त्योहार बलेव नाम से भी प्रसिद्ध है। महाराष्ट्र राज्य में नारियल पूर्णिमा या श्रावणी के नाम से यह त्योहार विख्यात है। इस दिन लोग नदी या समुद्र के तट पर जाकर अपने जनेऊ बदलते हैं और समुद्र की पूजा करते हैं। हिंदु पुराण कथाओं के अनुसार महाभारत में पांडवों की पत्नी द्रोपदी ने भगवान कृष्ण की कलाई से बहते खून को रोकने के लिए अपनी साड़ी का किनारा फाड़ कर बांधा जिससे उनका खून बहना बंद हो गया। तभी से कृष्ण ने द्रोपदी को अपनी बहन स्वीकार कर लिया था। वर्षों बाद जब पांडव द्रोपदी को जुए में हार गए थे और भरी सभा में उनका चीरहरण हो रहा था तब कृष्ण ने द्रोपदी की लाज बचाई थी। इस दिन श्रावण मास की पूर्णिमा थी, तभी से त्योहार मनाया जाने लगा। एक अन्य उदाहरण के अनुसार चित्तौड़ की राजमाता कर्मावती ने मुगल बादशाह हुमायूं को राखी भेजकर भाई बनाया था और वह भी संकट के समय बहन कर्मावती की रक्षा के लिए चित्तौड़ आ पहुंचा था। प्राचीन काल में ऋषि-मुनियों के उपदेश की पूर्णाहुति इस दिन होती थी। वे राजाओं के हाथों में रक्षासूत्र बांधते थे। इसलिए आज भी इस दिन ब्राह्मण अपने यजमानों को राखी बांधते हैं।

रक्षबंधन केवल एक त्योहार नहीं बल्कि हमारी परम्पराओं का प्रतीक है, जो आज भी हमें अपने परिवार व संस्कारों से जोड़े रखे हैं। रक्षाबंधन बहन की रक्षा का प्रतिबद्धता का दिन है, जिसमें भाई हर दुख-तकलीफ में अपनी बहन का साथ निभाने का वचन देता है। यही वह वचन है जो आज के दौर में भी भाई-बहन को विश्वास के बंधन से जोड़े हुए है। यही वह त्योहार है, जिसे बहन अपने घर अर्थात अपने मायके में मनाती है। तभी तो हर रक्षाबंधन पर बहन जितनी बेसब्री से अपने भाई के आने का इंतजार करती है, उतनी ही शिद्दत से भाई भी अपनी बहन से मिलकर उसका हालचाल जानने को उसके पास खिंचा चला आता है और भाई और बहन का मिलन होता है, तब सारे गिले-शिकवे दूर होकर माहौल में बस हंसी-ठिठौली के स्वर ही गुंजायमान होते हैं, जो खुशियों के पर्याय होते हैं।

‘करो या मरो’ सिर्फ नारा नहीं था

आजादी के इन 75 वर्षों में हमने शानदार तरक्की की। चार दशक पहले तक हमारे पास पेट भरने के लिए भोजन तक न था। आज जब रूस और यूक्रेन युद्ध की वजह से संसार भर में खाद्यान्न का भयावह संकट पैदा हो गया है, तब समूची दुनिया भारत की ओर उम्मीद भरी नजरों से देख रही है।

शशि शेखर

8 अगस्त ‘भारत छोड़ो आंदोलन’ की 8वीं वर्षगांठ है। इस दिन एक ऐसी परिवर्तनकारी शुरूआत हुई जिसे तत्कालीन हुक्मरानों ने शुरूआत में ‘कुचल दिया गया’ मान लिया था। वे इतिहास का एक साधारण सबक बिसरा बैठे थे। बेहद साधारण दिखने वाली कुछ घटनाएं कभी-कभी बड़े बदलावों को जन्म दे देती हैं। उन बगावती दिनों को याद कर आज हम अपने महान पुरखों को श्रद्धांजलि दे सकते हैं।

5 अगस्त 1942 को बंबई (अब मुंबई) के गोवलिया टैंक मैदान (अब अगस्त क्रांति मैदान) में आयोजित महासभा को संबोधित करते हुए मोहनदास करमचंद गांधी ने कहा था- ‘मैं आप सबको एक छोटा-सार मंत्र देता हूं। आप इसे अपने हृदय पर अंकित कर सकते हैं और अपनी हरेक सांस से इसे अभिव्यक्ति दे सकते हैं। यह मंत्र है- ‘करो या मरो’! या तो हमें आजाद भारत मिलेगा या हम इसे पाने के लिए मिट जाएंगे। हम लगातार अपनी गुलामी देखते रहने के लिए जिंदा नहीं रहेंगे।

‘करो या मरो’ वे जादुई शब्द थे, जिनका आने वाले दिनों में बड़ा असर पड़ना था। हालांकि, कुछ लोगों का मानना है कि यह आंदोलन परवान नहीं चढ़ सकता था। इसकी वजह यह थी कि 9 अगस्त को महात्मा गांधी, जवाहरलाल नेहरू, सरदार वल्लभ भाई पटेल, अबुल कलाम आजाद सहित कांग्रेस कार्यसमिति के तमाम सदस्यों को ‘राजद्रोह’ के आरोप में गिरफ्तार कर सलाखों के पीछे डाल दिया गया था। अगले कुछ दिन दमन और जरूरत से ज्यादा शासकीय प्रतिहिंसा के थे। हकबकाए अंग्रेज अफसरों ने एक लाख से अधिक लोगों को बंदी बना लिया था। इन उपनिवेशवादियों को लगा था कि हिन्दुस्तानी न तो कुछ ‘कर’ सके और न ही ‘मर’ सके। इसकी एक वजह यह भी थी कि हिंदू महासभा, मुस्लिम लीग और राजे-रजवाड़े उनके साथ खड़े थे। कांग्रेस के भी कुछ नेताओं पर शक था कि उन्होंने गद्दारी की और बड़े नेताओं के छिपने की जगह गोरे अधिकारियों को बता दी। सूरमाओं के इस देश में जयचंदों और मीर जाफरों की भी एक शर्मनाक परंपरा है।

उस समय भारत में छह सौ से अधिक रियासतें हुआ करती थीं। यह वह दौर था, जब हमारे अधिसंख्य स्कूलों में ‘ग्रेट ब्रिटेन’ का राष्ट्रगान गॉड सेव द किंग गाया जाता था। ऐसे लोग ब्रिटिश सत्ता को अपना संरक्षक मानते थे। ताबड़तोड़ गिरफ्तारियों से उन्हें लगा कि आंदोलन असफल हो गया है, वे गलत थे। इस आंदोलन ने अहिंसक तरीके से राष्ट्रीय रूप ले लिया था। हिंसा न होने की वजह से अधिक हो-हल्ला नहीं हुआ और ‘राजभक्तों’ को गलतफहमी हो गई कि यह मौन विराम का प्रतीक है। वे भूल गए कि थोपी गई संप्रभुत्ता के बावजूद सदियों पुरानी भारतीय राष्ट्र की अस्मिता धूमिल नहीं हो सकी थी। ‘भारत छोड़ो आंदोलन’ ने इस पहचान को और बल दिया था। भारत के राष्ट्रीय स्वाधीनता संग्राम की सफलता के लिए इससे ज्यादा कुछ और जरूरी था?

उधर, समूची धरती हलचल की शिकार थी। वह द्वितीय महायुद्ध का चरमोत्कर्ष काल था। 7 दिसंबर, 1941 को इस लड़ाई में अमेरिका की दखल ने साबित कर दिया था कि दुनिया अब दो भागों में बंट चुकी है और हार-जीत के लिए निर्दोषों के नरसंहार का यह सिलसिला फिलहाल खत्म नहीं होने वाला। अमेरिका महायुद्ध की शुरूआत से पहले 1929 में ही भयानक आर्थिक मंदी की चपेट में आ चुका था। उस समय के राष्ट्रपति फ्रैंकलिन डी रूजवेल्ट को लगता था कि यह लड़ाई और

इससे उपजा राष्ट्रीय जोश न केवल हमें मंदी से उबारेगा, बल्कि संसार की सबसे बड़ी महाशक्ति बनने का अवसर प्रदान करेगा। नतीजतन, कार बनाने वाली अमेरिकी कंपनियां हथियार बनाने लगी थीं। इस महायुद्ध से निपटने के लिए अमेरिका ने जो राह चुनी, उसने रूजवेल्ट को सही साबित किया। द्वितीय विश्व युद्ध के समापन से आज तक अमेरिका संसार की सबसे बड़ी ताकत बना हुआ है।

गांधी और उनके सहयोगी जानते थे कि इस अमेरिकी उभार से ब्रिटिश साम्राज्यवाद की चूलें जरूर हिलेंगी। तब तक दीख चला था कि ग्रेट ब्रिटेन पर दूसरी बड़ी लड़ाई महंगी पड़ रही है। उनकी अर्थव्यवस्था की चरमराहट जगजाहिर थी। लंदन तक में जरूरी चीजों की किल्लत महसूस की जाने लगी थी। दुकानों से जरूरी वस्तुएं नदारद थीं और लोग किफायत बरतने को मजबूर थे।

यहां बताना जरूरी है कि 1914 से 1918 के बीच लड़े गए प्रथम विश्व युद्ध में भारतीय सैनिकों ने गजब का योगदान किया था। अंग्रेजों ने उन्हें छलपूर्वक अग्रिम मोर्चों पर रखा था। अपने शौर्य और बलिदान से उन्होंने असंभव को भी संभव कर दिखाया था। दूसरे विश्व युद्ध के दौरान ब्रिटिश हुकूमत ने 'अगस्त प्रस्ताव', 'क्रिप्स मिशन' आदि के जरिये मित्र-देशों और भारतीयों को भरमाए रखने की नीति अपना रखी थी। यही वजह है कि गांधी द्वितीय विश्व युद्ध में भारतीय सैनिकों की सहभागिता से असहमत थे, फिर भी हिन्दुस्तानी सूरमा अग्रिम पंक्तियों में झोंक दिए गए थे, क्योंकि वे तकनीकी तौर पर 'ब्रिटिश रॉयल आर्मी' का हिस्सा थे। इस जंग में 87 हजार से अधिक भारतीय जवान शहीद हुए। प्रथम विश्व युद्ध पहले ही 74 हजार हिन्दुस्तानी जांबाजों को लील चुका था।

भारतीय मानस इससे मर्माहत था। हर कस्बे और गांव में इन शहादतों ने गम और गुस्से के बीज रोप रखे थे। ऊपर से कृषि प्रधान इस देश में अधिसंख्य लोगों के पास पेट भरने का अनाज तक न था। जमींदारों के कारिंदे कर वसूली के लिए मध्ययुगीन तरीके आजमाते थे। जो भी उन्हें देखता, उसे रोंगटे खड़े हो जाते। क्या आपको नहीं लगता कि 'करो या मरो' का नारा देने का यह सही समय था? मुझे कहने में कोई संकोच नहीं कि अगले पांच वर्षों की तमाम घटनाओं की नींव इस आंदोलन ने रखी। आगे चलकर हम भारतीय अहिंसक और हिंसक, दोनों तरीकों से अपनी अनूठी लड़ाई को अंजाम तक पहुंचाने में सफल रहे।

अब मौजूदा वक्त पर लौटते हैं। आजादी के इन 75 वर्षों में हमने शानदार तरक्की की। चार दशक पहले तक हमारे पास पेट भरने के लिए भोजन तक न था। अब जब रूस और यूक्रेन युद्ध की वजह से संसार भर में खाद्यान्न का भयावह संकट पैदा हो गया है, तब समूची दुनिया भारत की ओर उम्मीद भरी नजरों से देख रही है। अगर हमारे पास अन्न के भरे हुए भंडार हैं, तो यह भी सच है कि लगभग 19 करोड़ लोग प्रतिदिन भरपेट भोजन से वंचित हैं। इन दिनों गर्व करने के लिए हमारे पास बहुत कुछ है, पर सच्चाई यह भी है कि हम हिन्दुस्तानी अब तक तमाम आर्थिक और सामाजिक विरोधाभासों से मुक्त नहीं हो पाए हैं।

आजादी की लड़ाई भारतवासियों ने मिलकर लड़ी थी, पर आज तरह-तरह के अलगावों के स्वर सुनाई पड़ते हैं। मतलब साफ है, 'स्वतंत्रता का अमृत महोत्सव' अगर हमें गौरवान्वित करता है, तो नई उपजी चुनौतियों से पार पाने की प्रेरणा भी देता है। (लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं)

पहली जंगे आजादी से अछूता नहीं था राजस्थान

आजादी की 1857 में हुई पहली जंग से राजस्थान भी अछूता नहीं रहा था। रोटी और कमल के प्रतीकों के जरिए जनचेतना फैलाने का काम राजस्थान में भी हुआ। यहां क्रांति की शुरूआत नसीराबाद की छावनी में भारतीय सेना के हथियार उठाने से हुई। इस क्रांति में यूं तो राजस्थान का विशेष योगदान नहीं माना जाता लेकिन राष्ट्रीय अभिलेखागार और राजस्थान राज्य अभिलेखागार में संग्रहीत अभिलेखों से पता चलता है कि राजस्थान भी इससे अछूता नहीं रहा। सरकारी सूत्रों के मुताबिक 1857 की क्रांति के शंखनाद के समय बंगाल मेटिव की 15वीं और 30वीं पैदल सेना व कांटिनजेंट में नेटिव केवेलरी की एक रेजीमेंट थी। देवली के कंटमेट में एक इंफेंट्री थी जबकि नीमच में एक भारतीय ब्रिगेड थी जिसमें घुड़सवार, पैदल व आयुधधारी दस्ते थे। ऐरनपुरा में जोधपुर राज्य की जोधपुर लेगन थी। खेरबाड़ा में ब्रिटिश अधिकारियों के तहत भी एक टुकड़ी थी। ऐसी ही एक टुकड़ी ब्यावर में भी मेरो की थी। एजीजी ब्रिगेडियर जनरल पेट्रिक लारेंस की शंका उस समय सही निकली जब 28 मई को नसीराबाद में 15वीं रेजीमेंट ने हथियार उठा लिए और तोपखाने पर कब्जा कर लिया। मुंबई के भालेदार सैनिकों के कब्जे से बाहर हुए क्रांतिकारियों ने अंग्रेज अधिकारी को मार डाला। इसके बाद सैनिक अजमेर की बजाए दिल्ली की तरफ कूच कर गए।

नसीराबाद में हुई इस बगावत का असर अन्य स्थानों पर भी पड़ा। उदयपुर में महल की तरफ जाते कैप्टन शोबर्स को जनविरोध का सामना करना पड़ा। सलूंबर के राव केसरी सिंह ने भी विद्रोही तेवर दिखाए। नीमच के विद्रोही सैनिकों का पीछा करते हुए कैप्टन शोबर्स और उसकी टुकड़ी को न तो पेशवाई नजर की गई और न ही सम्मान दिया गया। शाहपुरा के लोगों ने तो किले के दरवाजे ही बंद कर लिए। मेवाड़ में अर्जुन सिंह की सेना के सामने रोटी खाने से विद्रोह होने की अफवाह थी तो टोंक में बागी सैनिकों का शानदार स्वागत किया गया। होडल में भरतपुर की टुकड़ी ने विद्रोह कर दिया। अंग्रेजों के टैंट जला दिए गए और समान लूट लिया गया। भरतपुर में हुए विद्रोह के कारण मेजर मोनीसरन को भरतपुर छोड़ने को कहा गया। बीकानेर के राजा ने नानासाहेब की मदद का आश्वासन दिया जबकि सलूंबर ठाकुर का क्रांतिकारियों से लगाव सभी अंग्रेजों को मालूम था जिसने समय-समय पर तातियां का साथ दिया, उसके सैनिकों को शरण दी। लेकिन अंग्रेज उस पर कार्रवाई करने में असहाय थे। जयपुर में क्रांतिकारियों के साथ संपर्क रखने के आरोप में नवाब विलायत अली खां, मियां अरमान खां और शादुल्ला खां को कैद कर मुकदमा चला कर सजा सुनाई गई। लेकिन सादुल्ला खां किसी तरह भाग निकले।

-गौरव शर्मा

भावांजलि

'आत्मसमर्पण'
गुरुवर ,
मैं कुम्हार की वो मिट्टी हूं।
जो आपके आंगन में है ।
जिसे आपको ढालना है ।
चाक पर चलाकर कोई आकार देना है।
आग की आंच में तपाना है।
मैं तो आपके समक्ष नतमस्तक हूं।
अपना अस्तित्व को आपको समर्पित किया है।
आप ही वो मूर्तिकार हैं।
जो मुझे मिट्टी का ढेला रहने देंगे।
या अपने हुनर से एक खूबसूरत
मूर्ति के सांचे में ढाल देंगे।
जो सम्पूर्ण विश्व में आपके नाम
से प्रसिद्ध नर्तकी होगी।
पूर्ण समर्पण मेरा आपको।
तराशना या यूंही छोड़ देना
आंगन में पड़ी कुम्हार की मिट्टी की तरह।
मेरे जीवन के आप ही तारणहार हैं।
ईश्वर की उपासना आप ही हैं।

-सोनल गर्ग

जे पी ऑर्थोपेडिक हॉस्पिटल
उदयपुर

26 वर्षों से
आपके लिए

For More Visit Us : www.jporthohospital.com

24x7 HELPLINE No: +91 7229933999

Facilities

- ICU, Modular Theater
- Digital X-Ray
- Modular Plaster Room
- C-ARM Machine
- Physiotherapy
- All Kinds Of Orthopadic Surgery
- Nailing
- Plating
- Prosthesis,
- Fixator etc.

100, Main MB College Road, Kumharo Ka Bhatta,
Udaipur-313001 Tel : 0294-2413606
E-mail : jp_taruna@yahoo.co.in

...समय लिखेगा उनका भी अपराध

वेदव्यास

आजकल सभी तरफ लोकतंत्र के राजनीतिकरण और राजनीति के अपराधीकरण की चर्चा है। दलबदलू, हत्यारे, डकैत, लुटेरे और यहां तक कि साधु-सन्यासी भी राजनीति में अपना डेरा-तंबू लगाकर जमे हुए हैं। 1952 से लेकर अब तक के चुनाव को देखें तो इससे पता चलेगा कि हमारी संसद में सबसे अधिक सांसदों का पेशा खेती-बाड़ी है तो सबसे कम सांसदों का पेशा कलाकारी है। इस सूची में नागरिक प्रशासन, सैन्य प्रशासन, कूटनीतिज्ञ, अर्थशास्त्री, इंजीनियर, पूर्व राजा-महाराजा, श्रमिक नेता, न्यायाधीश, वकील, डॉक्टर, वायुयान चालक, सामाजिक कार्यकर्ता, धर्मगुरु, शिक्षक, व्यापारी और उद्योगपति भी शामिल हैं तो मुट्ठीभर सांसद पेशे से पत्रकार और लेखक भी हैं।

क्योंकि भारत एक कृषि प्रधान देश है और साहित्य प्रधान देश नहीं है। इसलिए यहां संसद और विधानसभाओं में भी उसी का डंका बज रहा है जिसके पास वोट हैं। जनप्रतिनिधियों के इस खेल में पत्रकार की दाल भी इसलिए गल जाती है कि वह एक मीडिया की तोप होने के कारण राजनीति में वोटों को और नोटों को प्रभावित करता है। लेकिन इस चुनावी महासमर में लेखक और साहित्यकार शुरू से ही नाक-भों सिकोड़कर बाहर खड़ा है। साहित्यकार राजनीति को मानवीय चेहरा देना चाहता है किंतु राजनीति में मानवतावाद और शाश्वत मूल्यवाद का कहीं कोई स्थान नहीं है। यहां तक की राजनीति में फिल्मी कलाकारों की धूम है तथा फिल्म अभिनेता खिलाड़ी और संगीत के कलाकार तो भारत रत्न से सम्मानित हो चुके हैं लेकिन साहित्यकार यहां भी वैज्ञानिकों की तरह चुनावी राजनीति में पिछड़ा हुआ है।

देखने में तो यह भी आया है कि तीसरी श्रेणी का लेखक यदि राजनीति में घुस भी गया तो वह फिर कहीं न कहीं साहित्यकार होने का रुतबा हासिल कर लेता है, लेकिन अभी तक ऐसा कोई चमत्कारी उदाहरण हमारे सामने नहीं है जिससे यह कहा जा सके कि अमुक साहित्यकार ने लोकसभा और विधानसभा में किसी जीत का झंडा गाड़ दिया हो। ज्ञानपीठ पुरस्कार विजेता शिवराम कारंत ने लोकसभा का चुनाव लड़ा था और उनकी जमानत जप्त हो गई थी। इसी क्रम में 544 सदस्यों की लोकसभा का यह रिकॉर्ड है कि यहां साहित्यकारों को चुनावी टिकट कोई भी पार्टी नहीं देना चाहती क्योंकि मतदान का संबंध आवाम से है और मतदाताओं से है तथा इस मामले में एक साहित्यकार को प्रत्याशी बनाना नि:संदेह घाटे का ही सौदा है।

इसके विपरीत भारतीय लोकतंत्र ने साहित्यकारों के लिए संसद में जाने का एक सुगम रास्ता यह बना दिया है कि वहां साहित्य मनीषियों का मनोनयन राज्यसभा के लिए और राज्यों की विधान परिषदों के लिए कर दिया जाता है। राजनीति अथवा लोकतंत्र की मुख्यधारा में जाने का यह ऊपरी दरवाजा राष्ट्रपति द्वारा मनोनयन से खुलता है। आपको याद होगा कि राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त, रामधारी सिंह दिनकर, भगवतीचरण वर्मा, अमृता प्रीतम, श्रीकांत वर्मा, श्री नारायण चतुर्वेदी और करतार सिंह दुग्गल सरीखे साहित्यकार ही मनोनयन से राज्यसभा में गए हैं। फिल्मी कलाकारों का राज्यसभा में मनोनयन तो एक आम बात है लेकिन साहित्यकार का इस मनोनयन में पहुंचना एक जटिल कार्य है। कारण एक यह भी है कि लेखक और साहित्यकार कभी भी किसी सत्ता और व्यवस्था के लिए सुविधाजनक नहीं होते और इसलिए कोई कवि/ कहानीकार सामान्यत: किसी राजनीतिक दल का कभी सक्रिय सदस्य भी नहीं बनता। साहित्यकार को विपक्ष में रहने और बैठने में ही मजा आता है। कुछ अपवादों को छोड़कर देखें तो यही मालूम पड़ेगा कि यदि कोई साहित्यकार किसी राजनीतिक पार्टी का सक्रिय कार्यकर्ता बन भी गया तो वह या तो पंडित विष्णु शास्त्री (भारतीय जनता पार्टी) हो जाएगा या फिर सुभाष मुखोपाध्याय (भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी) की तरह मुख्यधारा से अलग पड़ा रहेगा। इसलिए राजनीति में एक लचक और संशोधनवाद की दरकार हमेशा बनी रहती है जबकि साहित्यकार भावुक, उदार और मानवीय तो हो सकता है लेकिन वह पार्टी का तोता नहीं बन सकता।

इन सभी दांवपेंचों पर आपने कभी इसलिए भी नहीं सोचा होगा कि आमतौर पर साहित्यकार और लेखक वाचाल नहीं होते। वह राजनीति को प्रभावित करने का सक्रियतावाद पसंद करते हैं लेकिन पार्टी के रात दिन वाले खटकर्म से परहेज करते हैं। उन्हें किंगमेकर बनने का शौक है अथवा गलतफहमी तो है, लेकिन आमतौर पर वह राजनीति को आत्मिक शांति और एकाग्रता भंग करने का काम ही समझता है। राजनीति और साहित्य को लेकर अक्सर बहस भी होती है तथा धर्म को राजनीति से अलग रखने जैसे तर्क भी साहित्यकार देते हैं, लेकिन मेरी समझ से एक साहित्यकार तो जन्मजात समाज विज्ञानी होता है इसलिए वह मनुष्य और समाज की व्यापक संरचना से कभी नहीं बच सकता। संगठन और पार्टियां तो विचार और विवेक को आगे बढ़ाने का एक जनमोर्चा ही रहती हैं। इसलिए वह यदि चुनाव न भी लड़े लेकिन उसे चुनाव के परिणामों को प्रभावित करने की सामाजिक-राजनीतिक प्रक्रिया में सक्रिय हिस्सेदारी जरूर करनी चाहिए।

आप स्वतंत्रता संग्राम के पूरे इतिहास को देखें तो आपको ज्ञात होगा कि रविंद्रनाथ टैगोर,

बंकिमचंद्र, सुब्रमण्यम भारती, प्रेमचंद, गुरुचरण सिंह, कालीचरण महापात्र, फैज अहमद फैज, काजी नज़रूल इस्लाम, विजयसिंह पथिक, गणेशीलाल व्यास उस्ताद, कैफ़ी आज़मी, अली सरदार जाफरी जैसे सैकड़ों महत्वपूर्ण लेखक और साहित्यकार अपने समय की राजनीति से प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से जुड़े हुए थे। स्वतंत्रता सेनानियों की सूची में आज भी हजारों साहित्यकार शामिल हैं तथा साहित्य और राजनीति का चोली-दामन का साथ है।

साहित्य और राजनीति के इसी मुख्यप्रवाह में राजस्थान से ही पंडित जनार्दन राय नागर, प्रकाश आतुर और भीम पांड्या जैसे कवि/लेखक कभी अपनी भूमिका निभा चुके हैं। वहां लोकसभा के चुनाव में भी अजमेर सीट पर कवयित्री प्रभा ठाकुर और उदयपुर की सीट पर डॉ. गिरिजा व्यास ने भी अपनी हलचल मचाई है। श्रीमती लक्ष्मीकुमारी चूंडावत तो बहुत पहले राज्यसभा में जा चुकी हैं तथा पद्मश्री से सम्मानित भी हो चुकी हैं। हमारे उपन्यासकार मुद्राराक्षस भी उत्तर प्रदेश में लोकतंत्र की चुनावी जंग लड़ चुके हैं। यहां सवाल सफलता और असफलता का नहीं है, अपितु इस बात का है कि कोई शब्द के संचार से आगे बढ़कर लोकतंत्र के इस महासमर में तो आया।

अब यह बहस तो बेमानी है कि साहित्य को राजनीति के नाते ईमानदारी को लक्ष्मी से दूर रहना चाहिए क्योंकि एक लेखक और साहित्यकार के नाते ईमानदारी और प्रतिबद्धताओं के सारे संघर्ष चुनावी और संसदीय राजनीति में जाकर भी बनाए रखे जा सकते हैं। राजनीति से दूर रहने का जो आदर्शवाद हमने ओढ़ रखा है उसी का यह परिणाम है कि ईमानदार और प्रतिबद्ध लोगों की जगह राजनीति में अपराधीकरण और वंशवाद ही चल रहा है तथा आमजन का संघर्ष कमजोर पड़ रहा है। इस स्थिति में राज्यसत्ता से पुरस्कार/सम्मान लेते रहने से अथवा नदी के बाहर खड़े रहकर धारा को कोसते रहने से तो अधिक ईमानदार सृजन यह है कि आप शब्दों और विचारों का जो अलौकिक सूत और धागा बैठकर कातते हैं उसे राजनीति में जाकर काता जाए। मैक्सिम गोर्की, फैज अहमद फैज , ज्यां पॉल सार्त्र, लूशीन जैसे विश्व विख्यात साहित्यकार और प्रेमचंद, निराला, मुक्तिबोध, हरिशंकर परसाई जैसे अनेक साहित्यकारों ने आधारभूत मान्यताएं ही बदल दीं। आज महाश्वेता देवी का संपूर्ण लेखन किसी चुनौती राजनीति से कम थोड़े ही है। चुनाव नहीं लड़ने वाला ही तो राजनीति में अंतिम निर्णायक होता है और साहित्य में भी जन पक्षधरता को अपनी रचना का संघर्ष बनाने वाला लेखक ही तो समय और समाज का सेतु बनता है।

यह एक लंबी बहस है और इसलिए भी जरूरी है कि समाज के सकारात्मक तत्वों की उदासीनता और जड़ता से आज मानवीय लोकतंत्र की हर गली में चोर और संसद में ठग घुसते जा रहे हैं और उन्होंने संपूर्ण मानवीय सदाचार को भ्रष्टाचार में और शासन और प्रशासन को जनविरोधी गिरोह में बदल दिया है। दुष्यंत कुमार ने इसलिए कहा था कि-' अब तो इस तालाब का पानी बदल दो/ ये कमल के फूल मुरझाने लगे हैं।' यानी कि सवाल चुनाव लड़ने का ही नहीं है अपितु एक सामाजिक सक्रियता का भी है जो इस लोकतंत्र की गंदी राजनीति को साहित्य की पवित्र समझ और सरोकार दे सकें। आप यह बहस अपने भीतर उठाइए क्योंकि साहित्यकार का मूकदर्शक और तटस्थ बना रहना भी एक अपराध है और कायरता है। ' जो तटस्थ है समय लिखेगा उनका भी इतिहास' जैसी कविता पंक्तियां दिनकर जी ने इसलिए कही थी कि आप संसद में जाएं लेकिन मनुष्य के संघर्ष को लेकर जाएं। एक साहित्यकार की यह समझ ही उसकी -आज सबसे बड़ी सामाजिक राजनीति भी है। अत: सोचिए क्योंकि यह लोकतंत्र के स्वास्थ्य के लिए सही सोच का रचनात्मक समय है और लोकतंत्र और संविधान की रक्षा का वर्ष है।

(लेखक वरिष्ठ साहित्यकार और पत्रकार हैं)

स्वाधीनता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

Pradeep Gandhi
Director

GRACE

Grace Marble & Granite P. Ltd.

Grace Exports

N.H. 8, Amberi, Udaipur - 313 016 (Raj.) India
Tel. : 91-294-2440474, 2440475 Fax : +91-294-2440135
E-mail : grace_export@yahoo.co.in, Info@graceexport.com
Website : www.graceexport.com

मानूसन के मौसम में फूड पॉइजनिंग के मामले बढ़ जाते हैं। अनियमित दिनचर्या और संक्रमित खान-पान इस खतरे को और बढ़ा देते हैं। खासतौर पर पानी और मांसाहार के सेवन में सावधानी बरतना जरूरी है।

फूड पॉइजनिंगः इस मौसम में रहें सावधान

गायत्री शर्मा

खान–पान के जरिये विषैले तत्वों का शरीर में प्रवेश करना हमें बीमार कर देता है। इसके कारण उल्टी, जी मिचलाना, सिरदर्द, चक्कर आना, मरोड़ और दस्त आदि की समस्याएं होने लगती हैं। सामान्य मामलों में फूड पॉइजनिंग में घरेलू उपायों से ही दो–तीन दिन में आराम आ जाता है। पर, गंभीर मामलों में डॉक्टर की सलाह पर दवाओं का सेवन जरूरी हो जाता है। बैक्टीरिया और वायरस (सूक्ष्मजीवन एंटअमीबा, साल्मोनैला, लिस्टेरिया, ई कोलाई, नोरोवायरस, शिगेला आदि) फूड पॉइजनिंग की मुख्य वजह है। खासतौर पर कच्ची सब्जियां, पदार्थ और अंकुरित अनाज को खाते समय सावधानी बहुत जरूरी है।

फूड पॉइजनिंग

फूड पॉइजनिंग की कई वजह हो सकती हैं। फूड पॉइजनिंग की समस्या बैक्टीरिया या वायरस, किसी भी संक्रमण से हो सकती है। मांसाहारियों में इसके मामले अधिक होते हैं। प्रदूषित पानी पीना, अधपका मांसाहार और देर रात तक खुले में रखी चीजें संक्रमण की आशंका को बढ़ाते हैं।

खाद्य पदार्थों को सही तापमान पर स्टोर नहीं किए जाने से भी उनमें बैक्टीरिया पनपने लगते हैं। गंदे बर्तनों में भोजन बनाने या खाने से भी संक्रमण की आशंका बढ़ती है। खासकर, बाजार में बिकने वाली चीजें, मसलन–देर तक खुले में रखे कटे फल और दूसरी चीजों को खाने से बचना चाहिए। पकाई हुई चीजों को फ्रिज से निकालने के बाद बिना ढंग से गर्म किए हुए खाना भी पेट को नुकसान पहुंचाता है। इस मौसम में जहां तक हो सके, बासी खाने से बचें।

मानूसन का समय कई तरह के जीवाणुओं, विषाणुओं, परजीवियों के पनपने का है। ये सूक्ष्मजीव शरीर में पहुंच कर पेट की प्रणाली को अस्त–व्यस्त कर देते हैं। खाने की चीजों को विषाक्त बनाने वाले 200 से अधिक जहरीले कारक हैं, जिनका प्रमुख स्रोत गंदगी है, इसलिए साफ–सफाई का ध्यान रखना सबसे जरूरी है।

लक्षण: पेट दर्द, उल्टी, जी मिचलाना, दस्त, बुखार, शरीर दर्द, मरोड़ के साथ पेट में दर्द, डायरिया आदि की समस्याएं नजर आने लगती है। अगर आपका खाया खाना लंबे समय तक पच नहीं रहा है, उल्टियां हो रही हैं तो यह संक्रमण के कारण हो सकता है। कभी–कभी दस्त के साथ हल्का खून भी आता है। बुजुर्गों, कमजोर रोग प्रतिरोधक क्षमता वाले लोगों, गर्भवती महिलाओं और एचआईवी संक्रमितों को इसकी अनदेखी नहीं करना चाहिए।

कैसे बचें: फलों व सब्जियों को अच्छी तरह धोकर खाएं। खाना बनाने वाली जगह बर्तन और चाकू आदि को साफ–सुथरा रखें। सब्जियों, मांस व मछली को काटने से पहले ही नहीं, बाद में भी धोएं। फ्रिज को भी समय–समय पर अंदर से साफ करना जरूरी है। सी फूड के सेवन से बचें। किसी भी संक्रमित या गंदी चीज को छूने के बाद साबुन और पानी से हाथ जरूर धोएं। मैले कपड़े या घर की गंदगी साफ करते समय दस्ताने पहनें।

अगर हो गई है फूड पॉइजनिंग

■ फूड पॉइजनिंग होने पर पेट को आराम देना बहुत जरूरी है। ऐसे में कुछ भी गलत खाने से बचें। शरीर में टॉक्सिन बाहर निकालने के लिए अधिक मात्रा में पानी पिएं। हो सके तो गुनगुना पानी पिएं।

■ प्रोबायोटिक फूड, जैसे दही और छाछ का सेवन ज्यादा करना चाहिए। तला–भुना और भारी भोजन बिल्कुल न करें। ठोस आहार की जगह फल और तरल सब्जियां ज्यादा मात्रा में खाएं। दवाओं का सेवन डॉक्टर के परामर्श से ही करें। बिना सलाह एंटीबायोटिक दवाएं न लें। इसके अलावा ज्यादा दस्त के कारण शरीर में सोडियम, पोटेशियम आदि पोषक तत्वों की कमी हो जाती है। ऐसे में नमक, चीनी का पानी, इलेक्ट्रल, नारियल पानी और सूप आदि पीते रहें। उल्टी और दस्त हैं, तो तरल चीजें ज्यादा लें। कम मसालेदार भोजन खाएं। पेट दर्द तेज है तो तुरंत डॉक्टर से मिलें।

कुछ घरेलू उपाय

जलन और जी मिचलाने जैसी समस्याओं से राहत पाने के लिए अदरक की चाय पिएं। सेब के सिरके का सेवन शरीर से टॉक्सिन बाहर करने में मदद करता है। नींबू पानी पीना भी फायदेमंद रहता है। दिनभर में दो से तीन बार इसे पिएं। तुलसी की पत्तियों को पीसकर उसके रस में शहद मिलाकर लेते रहने से भी फूड पॉइजनिंग में तुरत राहत मिलती है। आयुर्वेद के अनुसार फूड पॉइजनिंग के असर को काम करने के लिए जीरे को पानी में उबालकर पीना भी लाभ पहुंचाता है। संजीवनी वटी, गिलोय, सौंठ व गुलकंद का सेवन भी शीघ्र राहत पहुंचाता है। बारिश के मौसम में जहां तक हो सके, घर में बनी ताजी चीजें ही खाएं।

स्वतंत्रता दिवस की शुभकामनाएं

।। श्री कृष्णा ।। ।। श्री गणेशाय नमः ।। ।। ॐ हनुमन्ते नमः ।।

बीकानेर मावा भण्डार

BMB

घीदार मावा एवं मीठा मावा के विक्रेता

शादी पार्टी में मावा के आर्डर बुक किए जाते हैं।

4, मेहतों का पाड़ा, धानमण्डी स्कूल मार्ग, उदयपुर (राज.)

Mobile - 9468704600, 9782704600

हैड ऑफिस :- डी.एस. बीकानेर

Happy Independence Day

Dilip Galundia
Director

NPL

NANO POLYPLAST PRIVATE LIMITED

A-104, 1st Floor, GLG Complex, Dr. Shurveer Singh Marg,
Fatehpura, Udaipur - 313004 (Rajasthan)) India
Ph.: +91 294 2452626/27, Mobile: +91 98290 95489
Fax: +91 294 2452005 Website: www.galundiagroup.com
E-mail: sales@galundiagroup.com, nanoplast@yahoo.co.in

झूम उठा मन आए दो सावन

हरियाली तीज मुख्यतः स्त्रियों का त्योहार है। यह पर्व उनकी सांस्कृतिक मान्यताओं का प्रतीक है। इस दिन वे झूलों पर पींगे भरती हैं। सोलह शृंगार और उपवास करती हैं। देवी पार्वती ने भगवान शिव को पति रूप में पाने के लिए श्रावणी तीज व्रत का पालन किया था। यह त्योहार जीवन में उत्साह, आनंद और उमंग का भी प्रतीक है। इस बार दो सावन का योग है। 4 जुलाई से प्रारंभ होकर इसका समापन 31 अगस्त को होगा। ऐसा सांयोग 19 वर्ष बाद बन रहा है।

पुष्पा जांगिड़

सावन का महीना एक अलग ही मस्ती और उमंग लेकर आता है। चारों ओर हरियाली की चादर सी बिखर जाती है। जिसे देखकर मन झूम उठता है। ऐसे ही सावन के सुहावने मौसम में आता है तीज का त्योहर, श्रावण मात्र शुक्ल पक्ष की तृतीया को। उत्तर भारत में यह हरियाली तीज के नाम से भी जाना जाता है। सावन के महीने में तीज, नाग पंचमी एवं सावन के सोमवार जैसे उत्सव उत्साहपूर्वक मनाए जाते हैं। तीज मुख्यत: स्त्रियों का त्योहार है। आस्था, प्रेम, सौंदर्य व उमंग का प्रतीक है। यह पर्व महिलाओं की सांस्कृतिक मान्यताओं का भी प्रतीक है।

संस्कृति के रंगों से सराबोर राजस्थान, उत्तरप्रदेश, पंजाब, हरियाणा, बिहार और मध्यप्रदेश सहित उत्तरी राज्य जिस मौसम में झूम कर गा उठता है। पैर अपने आप रिमझिम बरसती बूंदों पर थिरकते हैं, वह मौसम हैं सावन का।

साावन में जब आकाश अपने काले बादलों को हवा के झोंके के साथ नन्हीं-नन्हीं बूंदों में पिरोकर, घरों की छतों को भिगोने का आदेश देता है, तो कच्ची छत हो या टीन की अथवा झोपड़ी की खपरैल, सब पर बूंदों की टिप-टिप, टप-टप एक ही ताल में बजती है।

इसके साथ धरती ओढ़ लेती हरे रंग की चादर और रच जाती हैं हथेलियां हरी मेहंदी के लाल रंग में और रंग-बिरंगी ओढ़नी से लिपटी खुशबू बिखेरती नई पुरानी दुल्हनें, पार्वती की तरह अपने पिया को रिझाने को खिल उठती हैं।

सावन की तीज बहू-बेटियों से ही खूबसूरत बनती है। यही वजह है कि अक्सर महिलाएं इस समय अपने मायके आती हैं। नई-नई शादी हुई बेटियों का पहला सावन मायके में ही होता है। बेटियों के मायके से उपहार जाता है। जिसमें फल, मिठाई, कपड़े, मेहंदी, चूड़ी होती हैं।

कुछ राज्यों में इसे श्रावण शगुन या सावनी पुड़िया कहते हैं। इसके पीछे मान्यता यह है कि बेटियों को यह शगुन देने से बेटियां अपने मायके को धन-धान्य से पूर्ण रखने की ईश्वर से प्रार्थना करती हैं। वे ईश्वर से कहती हैं कि जितना उन्हें दिया जाता है, उससे दस गुना अधिक धन की वर्षा मायके में हो, खुशियों के इस आदान-प्रदान से बेटियों का मायके से रिश्ता फिर से हरा हो जाता है। उन्हें अहसास होता है कि वे मायके से विदा हुई हैं, माता-पिता और मायके वालों के दिलों से नहीं।

आमतौर से तीज की तैयारी एक माह पहले शुरू हो जाती है। बाजार में भी हरे रंग की चूड़ियां, साड़ी, बिंदी सब मिलने लगते हैं। महिलाएं इसी रंग में रंग कर त्योहार मनाती हैं। हरा रंग पहनने की वजह प्रकृति से जुड़ी हुई है। बारिश के इस मौसम में वन-उपवन हरियाली की चादर लपेटे हुए रहते हैं। संपूर्ण प्रकृति हरे रंग के मनोरम दृश्य से मन को तृप्त करती है। स्त्रियां भी प्रकृति के साथ एकाकार होती हुई हरे वस्त्र व चूड़ियां पहनती हैं। यह त्योहार पर्यावरण से प्यार करने का भी संदेश देता है।

कजरी के बोल

श्रावणी तीज को हरियाली तीज और कजरी तीज भी कहते हैं। दरअसल लोकगायन की एक प्रसिद्ध शैली इसी नाम से प्रसिद्ध है, जिसे कजली या कजरी कहते हैं। जब सावन जैसे खूबसूरत मौसम में प्रियतम परदेस होते हैं तो कजरी के मार्मिक दिल को छू लेने वाले गीतों से विरहणी दिलों के पपीहे की तरह पुकारती है और हरियाली तीज पर आकाश से आती बूंदे मानो विरहिणी की आंखों के आंसू बन जाती हैं। तीज के मौके पर कजरी गाने की परंपरा है। इस मौके पर गांवों में बड़े-बड़े झूले पड़ जाते थे। घर का काम-काज कर महिलाएं रात को झूले के पास जमा होकर कजरी गातीं। आज इसकी गूंज थोड़ी कम हुई है।

LAUREATE
HIGH SCHOOL

Mrs. Surabhi Kharti Panwar
Director, 869099906

ADMISSION OPEN

For Enquiry call: +91-8696998806

Laureate High School, Sector-4, Udaipur

राजीव सेठिया, डायरेक्टर
7737676260,
9079231843

रामरतन सेठिया,
डायरेक्टर
9784292340

सवेरा

सुप्रीम चाय

सवेरा सुप्रीम चाय के थोक विक्रेता

सेठिया टी सेंटर

धानमण्डी, उदयपुर (राज.) 0294-2420894
49, कृषि उपज मण्डी, उदयपुर (राज.)

चन्द्रयान-3: अंतरिक्ष में नई राह खोलने पर अग्रसर

भारत ने 14 जुलाई को आंध्र प्रदेश के श्रीहरिकोटा से एलवीएम3-एम4 राकेट के जरिए अपने तीसरे चंद्र मिशन- चंद्रयान-3 का सफल प्रक्षेपण किया। इस अभियान के तहत चांद की सतह पर एक बार फिर 'साफ्ट लैंडिंग' का प्रयास किया जाएगा। इसमें सफलता मिलते ही भारत ऐसी उपलब्धि हासिल कर चुके अमेरिका, पूर्व सोवियत संघ और चीन जैसे देशों के क्लब में शामिल हो जाएगा और यह इस तरह का कीर्तिमान स्थापित करने वाला विश्व का चौथा देश बन जाएगा।

13 जुलाई को शुरू हुई 25.30 घंटे की उलटी गिनती के अंत में एलवीएम3-एम4 रोकेट अंतरिक्ष प्रक्षेपण केंद्र के दूसरे 'लांच पैड' से 14 जुलाई अपराह्न2.35 बजे निर्धारित समय पर धुएं का घना गुबार छोड़ते हुए आकाश की ओर रवाना हुआ। उड़ान भरने के लगभग 16 मिनट बाद प्रणोदन माड्यूल राकेट से सफलतापूर्वक अलग हो गया और यह चंद्र कक्षा की ओर बढ़ते हुए पृथ्वी से 170 किमी निकटतम और 36,500 किमी सुदूरतम बिंदू पर एक अंडाकार चक्र के लगभग पांच-छह बार पृथ्वी की परिक्रमा करेगा। एलवीएम3-एम4 राकेट अपनी श्रेणी में सबसे बड़ा और भारी है, जिसे वैज्ञानिक 'फैट बाय' या 'बाहुबली' कहते हैं। 'चंद्रयान-3' मिशन पर लगभग 600 करोड़ रूपए की लागत आई है। प्रक्षपेण देखने के लिए मौजूद हजारों दर्शक चंद्रयान-3 के रवाना होते ही खुशी से झूम उठे और सफल प्रक्षेपण के बाद वैज्ञानिकों ने तालियां बजाईं। लैंडर के साथ प्रणोदन मॉड्यूल, गति प्राप्त करने के बाद चंद्रमा की कक्षा तक पहुंचने के लिए यान तब तक आगे बढ़ेगा जब तक कि यह चंद्र सतह से 100 किमी ऊपर नहीं पहुंच जाता।

वांछित ऊंचाई पर पहुंचने के बाद लैंडर माड्यूल चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव क्षेत्र पर 'साफ्ट लैंडिंग' के लिए उतरना शुरू कर देगा। 'चंद्र मिशन' 2019 के 'चंद्रयान-2' का अनुवर्ती मिशन है। भारत के इस तीसरे चंद्र मिशन में भी अंतरिक्ष वैज्ञानिकों का लक्ष्य चंद्रमा की सतह पर लैंडर की 'साफ्ट लैंडिंग' का है। 'साफ्ट लैंडिग' इस अभियान का सबसे चुनौतीपूर्ण हिस्सा होगी। 'चंद्रयान-2' मिशन के दौरान अंतिम क्षणों में लैंडर 'विक्रम' पथ विचलन के चलते 'साफ्ट लैंडिंग' करने में नाकाम रहा था।

चंद्रयान-2 से काफी अलग है चंद्रयान-3

चंद्रयान-3 को लेकर की गई तैयारियां चंद्रयान-2 से उलट हैं। इसमें उन बातों का ध्यान रखा गया है कि किन-किन स्थितियों में क्या-क्या चीजें गड़बड़ हो सकती हैं। ऐसी आशंकाओं को सामने रखते हुए सारी तैयारियां की गई हैं। इसे फेल्योर बेस्ट मॉडल कहा जा रहा है। वहीं, चन्द्रयान-2 में चंद्रमा की कक्षा में ऑर्बिटर की स्थापना करनी थी, जो इस बार नहीं करना है। ऑर्बिटर 2019 में वहां स्थापित किया गया था जो आज भी वहां मौजूद है। चंद्रयान-3 की सफलता में उसकी भी एक अहम भूमिका होगी।

सॉफ्ट लैडिंग के लिए पहले से बड़ा इलाका चुना गया

इस मिशन की सॉफ्ट लैंडिग के लिए इसरो ने चांद की सतह पर पहले से ज्यादा बड़ा इलाका चुना है। चंद्रयान-2 के ऑर्बिटर ने इस काम में अहम भूमिका निभाई है। आर्बिटर चार सालों से लैंडिंग के लिए मुफीद इलाके की तस्वीरें उपलब्ध करा रहा है। इन्ही तस्वीरों के आधार पर सॉफ्ट लैंडिग वाली जगह का चुनाव किया गया है।

मिशन से जुड़ी कुछ खास बातें

- ***पंद्रह*** *साल में इसरो का यह तीसरा चंद मिशन है। 'चंद्रयान-2' मिशन के दौरान अंतिम क्षणों में लैंडर 'विक्रम' पथ विचलन के चलते 'साफ्ट लैंडिंग' करने में सफल नहीं हुआ था।*
- ***चंद्रमा*** *के दक्षिणी ध्रुव क्षेत्र को अन्वेषण के लिए चुना गया है क्योंकि चंद्रमा का दक्षिणी ध्रुव, उत्तरी ध्रुव की तुलना में बहुत बड़ा है। वहां पानी की मौजूदगी की संभावना हो सकती है।*
- ***लैंडर*** *की 'साफ्ट लैंडिंग' के बाद इसके भीतर से रोवर बाहर निकलेगा और चंद्र सतह पर घूमते हुए अपने उपकरण- एपीएक्सएस-एल्फा पार्टिकल एक्स-रे स्पेक्ट्रोमीटर की मदद से अन्वेषण कार्य को अंजाम देगा।*
- ***रोवर*** *की अभियान अवधि एक चंद्र दिवस (धरती के 14 दिन) के बराबर होगी। इसमें चंद्रमा की मिट्टी और चट्टानों की मौलिक संरचना का निर्धारण करने के लिए 'लेजर' इंडयूस्ड ब्रेकडाउन स्पेक्ट्रोस्कोप (एलआइबीएस) उपकरण लगा है।*

ब्रह्माण्ड अब केवल जिज्ञासा का विषय नहीं, बल्कि विज्ञान ने इसकी संभावनाओं को खंगालना शुरू कर दिया है। दुनिया अब दूसरे ग्रहों पर मानव बस्तियां बसाने की होड़ में है। इस दृष्टि से सबसे अनुकूल वातावरण चन्द्रमा का है, मगर अभी उसके बहुत सारे रहस्य खुलने हैं।

संकलन: *अभिजय/प्रिशा शर्मा*

गर्व के क्षण

यह अंतरिक्ष विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में प्रगति के प्रति राष्ट्र की दृढ़ प्रतिबद्धता को प्रदर्शित करता है। इसरो टीम और उससे जुड़े हर व्यक्ति को शुभकामनाएं।

– द्रौपदी मुर्मु, राष्ट्रपति

यह असाधारण उपलब्धि देश की अंतरिक्ष विज्ञान और अनुसंधान में की गई । प्रगति को प्रदर्शित करती है।

–जगदीप धनखड़, उपराष्ट्रपति

चन्द्रयान–3 भारत की अंतरिक्ष यात्रा में नया अध्याय है। यह उपलब्धि वैज्ञानिकों के अथक समर्पण का प्रमाण है। हर भारतीय अपने सपनों और महत्वाकांक्षाओं को ऊपर उठाते हुए इसके साथ ऊंची उड़ान भरता है।

– नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री

आज एक अरब से अधिक लोग गर्व से चमकते हुए आकाश की और देख रहे हैं। सचमुच यह एक अविश्वसनीय उपलब्धि होगी।

– राहुल गांधी, पूर्व अध्यक्ष, कांग्रेस

भारत के लिए यह गौरव का क्षण है। यह दिन उस सपने की पुष्टि है जो विक्रम साराभाई ने 6 दशक पहले देखा था।

– जितेन्द्र सिंह, प्रौद्योगिकी राज्यमंत्री

बधाई हो, भारत ! हमारे प्रिय एलवीएम–3 ने पहले ही चंद्रयान–3 को पृथ्वी के चारों ओर सटीक कक्षा में स्थापित कर दिया है... और आइए हम चंद्रयान–3 को आगे की कक्षा में बढ़ाने की प्रक्रिया तथा आने वाले दिनों में चंद्रमा की ओर इसकी यात्रा के लिए शुभकामनाएं व्यक्त करें। चंद्रयान–3 को चंद्रमा की कक्षा में पहुंचाने की कवायद एक अगस्त से किए जाने की योजना है। 'सॉफ्ट लैंडिंग' 23 अगस्त को शाम पांच बजकर 47 मिनट पर कराए जाने की योजना है।

– एस.सोमनाथ अध्यक्ष, भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन

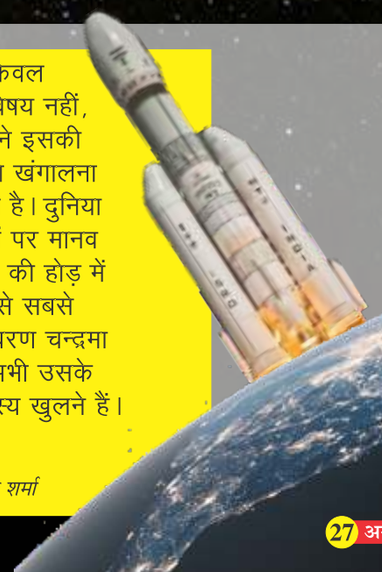

पोसवाल कलेक्टर, मीणा टीएडी आयुक्त व मयंक निगमायुक्त

उदयपुर। उदयपुर में डेढ़ साल से कलेक्टर का जिम्मा संभाल रहे ताराचंद मीणा की जगह चित्तौड़गढ़ कलेक्टर अरविंद पोसवाल ने कार्यभार संभाला। ताराचंद मीणा को उदयपुर में ही टीएडी आयुक्त के पद पर नियुक्त किया गया हैं। टीएडी आयुक्त मयंक मनीष ने नगर निगम आयुक्त का पद्भार संभाला। निगम आयुक्त वासुदेव मालावत को अतिरिक्त आयुक्त विनियोजन एवं अप्रवासी भारतीय उद्योग संवर्धन ब्यूरो जयपुर के पद पर लगाया गया है। खान विभाग के अतिरिक्त निदेशक हर्ष सावनसुखा को उच्च शिक्षा विभाग में संयुक्त शासन सचिव नियुक्त किया गया है। अतिरिक्त आबकारी आयुक्त (प्रशासन) बालमुकुंद असावा को राजस्व विभाग जयपुर में संयुक्त शासन सचिव के पद पर लगाया गया है।

प्रो. सारंगदेवोत को डी लिट्

उदयपुर। कम्प्यूटर साइंस एवं इनफार्मेशन टेक्नोलॉजी क्षेत्र में शिक्षा, शोध, अनुसन्धान, पेटेंट, कॉपीराइट्स, नवाचारों एवं प्रशासनिक क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य के लिए अमरीका की मेरीलैंड स्टेट यूनिवर्सिटी ने प्रो. शिवसिंह सारंगदेवोत को डी. लिट् की उपाधि से नवाजा है। नई दिल्ली में आयोजित समारोह में जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ के कुलपति कर्नल प्रो शिव सिंह सारंगदेवोत को डी.लिट् (डॉक्टर ऑफ लेटर्स) की उपाधि से नवाजा गया। प्रो. सारंगदेवोत ने कहा कि विद्यापीठ निरंतर प्रगति की ओर अग्रसर है। संस्थान द्वारा नवाचार, शोध कार्य, विकास कार्य, फेकल्टी डपलपमेंट के साथ साथ कई पेटेंट कराए गए हैं। मेरीलैंड स्टेट यूनिवर्सिटी के चांसलर ने अपने संबोधन में प्रो सारंगदेवोत का विशेष उल्लेख करते हुए उन्हें दीक्षांत समारोह के अग्रणी किंवदंती के रूप में वर्णित किया।

अनिल मिश्रा आईआईएमएम उदयपुर ब्रांच के चेयरमैन

उदयपुर। इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ मेटेरियल्स मैनेजमेन्ट की वार्षिक बैठक में वर्ष 2023-2025 के लिए नई कार्यकारिणी समिति का चुनाव किया गया। जे.के. टायर एंड इण्डस्ट्रीज के वरिष्ठ महाप्रबन्धक (वाणिज्य) अनिल मिश्रा को आईआईएमएम उदयपुर ब्रांच का चेयरमैन चुना गया। प्रिया मोगरा एवं डॉ. मनीषा अग्रवाल का नेशनल काउन्सलर के पद पर निर्वाचन किश्चया गया। चुनाव अधिकारी आर.सी.मेहता ने वाइस चेयरमैन के पद पर राजेश जैन, मानद सचिव के पद के लिए पीपी भट्टाचार्य एवं मानद कोषाध्यक्ष के पद पर अनिल पारिख के निर्वाचन की घोषणा की। कार्यकारिणी सदस्यों के तीन पदों पर चुनाव अधिकारी द्वारा निखिल शारदा, मुबारक खान एवं सीए पल्लवी नाहर के निर्वाचन की घोषणा की गई।

आसान लोन्स की पुणे में नई शाखा

पुणे। अग्रणी प्रौद्योगिकी संचालित ऋण प्लेटफॉर्म आसान लोन्स ने पुणे में अपनी नई शाखा का उद्घाटन किया। पर्वती के पाटिल प्लाजा अपार्टमेंट में स्थित, नई शाखा पुणे में सम्पन्न व्यापारिक समुदाय की विविध वित्तीय आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए रणनीतिक रूप से मददगार होगी। अपने प्रौद्योगिकी संचालित दृष्टिकोण और क्षमता और इरादे वाले लोगों को ऋण प्रदान करने की प्रतिबद्धता के साथ, आसान लोन्स का लक्ष्य छोटे व्यवसायों को त्वरित आर्थिक सहायता और अनुरूप वित्तीय समाधान प्रदान करके सशक्त बनाना है। निर्मल कुमार जैन, चेयरमैन एवं मैनेजिंग डायरेक्टर ने कहा पुणे में यह विस्तार टियर 3 और 4 बाजार में छोटे व्यवसायों को समर्थन देने की हमारी प्रतिबद्धता और उन्हें ऋण तक सुविधाजनक पहुंच प्रदान करने के प्रति हमारे समर्पण को दर्शाता है।

अमित शाह को हस्तनिर्मित पेंटिंग भेंट

उदयपुर। केन्द्रीय गृहमंत्री अमित शाह के आगमन पर पिछले दिनों यहां होटल हॉवर्ड जॉनसन में जनजाति संवाद सम्मेलन के दौरान श्री नारायण भक्ति पंथ मेवाड़ एवं होटल के निदेशक जितेश कुमावत, कविता कुमावत, गीतादेवी कुमावत, उदयपुर महापौर गोविंद सिंह टाँक, पूर्व सभापति युधिष्ठिर कुमावत ने उनका स्वागत किया। साथ ही श्री नारायण के शेष शाही अवतार की हस्तनिर्मित पेंटिंग शाह को कुमावत परिवार की ओर से भेंट की गई। पेंटिंग में श्री नारायण के साथ ही श्री नारायण भक्ति पंथ के प्रवर्तक संत लोकेशानंद महाराज का हस्त निर्मित चित्र है। इस उपलक्ष में पंथ के योगेश कुमावत, दुर्गेश कुमावत, ईश्वर कुमावत, डॉ रवि टाँक, परिवार के सदस्यों ने भी गृहमंत्री का अभिनंदन करते हुए शहादा महाराष्ट्र में बन रहे पंथ के भव्य मंदिर के बारे में जानकारी दी।

बैंक ऑफ बड़ौदा की मिलिट्री स्टेशन में प्रस्तुति

उदयपुर। 3 राज रायफल्स यूनिट मिलिट्री स्टेशन उदयपुर में बड़ौदा सैन्य वेतन पैकेज, बड़ौदा योद्धा ऋण और बड़ौदा सह ब्रांडेड योद्धा क्रेडिट कार्ड के बारे में जागरूकता कार्यक्रम हुआ। इसमें भारतीय सैन्य कर्मियों के लिए डिजाइन उत्पादों के बारे में बताया गया। इस अवसर पर बैंक ऑफ बड़ौदा के सहायक महाप्रबंधक व क्षेत्रीय प्रमुख उदेश कुमार, मुख्य प्रबंधक एवं उप क्षेत्रीय प्रमुख अनादि भट्ट मौजूद थे।

जैन बने सीसीएफ

उदयपुर। वन विभाग में आईएफएफ अधिकारी आरके जैन ने मुख्य वन संरक्षक (वन्यजीव) का प्रभार संभाला। उन्होंने आरके खेरवा से पदभार ग्रहण किया। जैन ने बताया कि संभाग में 7 अभयारण्य, एक बायोलॉजिकल पार्क एवं नेचर पार्क है, उनका विकास एवं संरक्षण उनकी प्राथमिकता रहेगी। जैन के पास वन संरक्षक वन्यजीव का प्रभार भी है। उन्होंने अधिकारियों की बैठक कर संभाग की गतिविधियों की जानकारी ली।

Kuldeep Durgawat
Director, 97721-13555

TAPASYA CONSTRUCTION

Manufacture & Supplers
Cement Bricks & Pavers Block, CC Road
Work & All Construction Materials

64, Manglam Complex, Shoubhagpura, Udaipur (Raj.)

तारा संस्थान के नि:शुल्क आँखों के अस्पताल

उदयपुर, दिल्ली, मुम्बई, फरीदाबाद, लोनी (गाजियाबाद)

नि:शुल्क नेत्र जाँच व नि:शुल्क मोतियाबिन्द ऑपरेशन फेको पद्धति द्वारा

तारा नेत्रालय के ओ.पी.डी. (आउटडोर पेशेंट युनिट) का दृश्य

अन्तर्गत : तारा संस्थान, उदयपुर

236, हिरण मगरी, सेक्टर 6 (जे.बी. हॉस्पीटल के पास वाली गली), उदयपुर 313002 (राज.)
मो. +91 9549399993, 9649399993, Website : www.tarasansthan.org

मंत्र की शक्ति से सर्वसिद्धी संभव

डॉ. ओ.पी. महात्मा

वर्णों का विशेष संयोजन ही मंत्र है। मंत्रों की शक्ति अनंत है एवं इससे सर्व प्रकार के अभिष्ठ कार्य सिद्ध किये जा सकते हैं। वर्ण अपने आप में शक्ति रूप हैं। शक्तियों के पंजीभूत वर्णों से निर्मित होने के कारण मंन्त्र स्वत: ही शक्ति मान हो जाता है। अत: कई शक्तियों के परस्पर गुंफन से निर्मित मंत्र अजेय हो जाता है एवं सारे सकल्पों को सिद्ध करता है। वर्णों के समूह से मंत्र का निर्माण होता है। प्रत्येक वर्ण एक अलग अस्तित्व तथा अपने आप में असीम शक्ति समेटे हुए है। महार्थ मंजरी के अनुसार मनन योग्य शब्द ध्वनि ही मन्त्र है। मनन से ही पराशक्ति का अभ्युदय और उसका वैभव प्रकाशमान होता है और उस पराशक्ति से ओत-प्रोत शब्द समूह ही मंत्र पद का अधिकारी है। शिवसूत्र विमर्शनी (लेखक: नारायण दत्त श्रीमाली) में चित्त मंत्र कह कर चित्त को ही मंत्र कहा है। चित्त जब बाह्य संस्कारों से कटकर अंर्तमुख हो जाता है और अभेदावस्था को प्राप्त कर जब मंत्र से सम्पकृत होता है तब वह दिव्य बनता है और तभी उस मंत्र से निहित देवता से साधक के चित्त का पूर्ण तादात्म्य होता है और इस प्रकार की अवस्था हो जाने पर मंत्र के रहस्य और उसमें निहित शक्ति व पूर्ण सिद्धि प्राप्त होती है। ऐसे मंत्र न तो काल से बाधित होते हैं न स्थान से उनकी गति सर्वत्र होती है वे पूर्ण सफलता देने में सक्षम होते हैं। सारांशत: गौपन रूप में आत्मतत्व से वेष्ठित शब्द समूह मंत्र ध्यान से ही कार्य सिद्धि होती है। विज्ञान लेख तंत्र में मंत्रों की दो अवस्थाएं बताई गई हैं।

1. चित्तयुक्त मंत्र
2. ध्वनि युक्त मंत्र

1. चित युक्त मंत्र मन ही मन जपा जाता है और ध्वनि युक्त मंत्र होठों के बाहर उच्चारित होकर वायुमण्डल में ध्वनित होता है।

विज्ञान के अनुसार: मानव जो भी शब्द उच्चारण करता है वह विश्व के वायुमंडल में तैर जाता है। जैसे रेडियो से गीत कहीं पर भी उसकी फ्रीक्वेन्सी पर सुना जा सकता है।

ध्वनि कभी भी मिटती नहीं है। हजारों साल पुराने महाभारत काव्य की ध्वनियां सुनी जा सकती हैं। वैज्ञानिकों के अनुसार ध्वनि के माध्यम से असंभव कार्यों को संभव किया जा सकता है परन्तु वह एक विशिष्ट ध्वनि हो। डॉ. क्रिस्टलोय ने ध्वनि के कम्पनों से शरीर स्थित परमाणुओं में कम्पन पैदा कर दिखाया तथा इस कम्पन से शारीरिक रोगों को ध्वनि के माध्यम से दूर करने में सफलता प्राप्त की है। जेट विमान के तीव्र ध्वनि कम्पन से मकानों में दरारें पड़ जाती हैं। इससे ध्वनि का महत्व स्वत: ही सिद्ध हो जाता है।

मंत्र उच्चारण से भी एक विशिष्ट ध्वनि कम्पन बनता है जो तुरन्त ईथर में मिलकर पूरे विश्व के वायुमंडल में व्याप्त हो जाता है। उदाहरणार्थ सूर्य से सम्बन्धित कोई मन्त्र है तो उसके उच्चारण से एक विशेष ध्वनि कम्पन बनता है। ये कम्पन ऊपर उठते हुए ईथर के माध्यम से कुछ ही क्षणों में सूर्य तक पहुंच कर लौट आता है और लौटते समय उस कम्पन में सूर्य की सूक्ष्म शक्ति तेजस्विता एवं प्राणवत्ता साधक को प्राप्त हो जाती है।

मंत्र को समझने के लिये आवश्यक है कि उसकी आत्मा को समझा जाए। क्या मंत्र शिव है? या शक्ति है? या अणु- परमाणु है।

किसी भी तत्व में शिव शक्ति और अणु इन तीनों का समावेश जरूरी है इन तीनों के बिना पदार्थ या तत्व की कल्पना नहीं की जा सकती। यह सम्पूर्ण विश्व इन तीनों तत्वों से प्रतिष्ठित है। अत: मंत्र में भी इन तीनों तत्वों का उचित सामंजस्य पूर्ण अस्तित्व होता है। शिव निरापद हैं और शक्ति सानन्द। इन दोनों का प्रार्थक्य संभव नहीं है। शिव शक्ति के माध्यम से ही सृष्टि स्थित संहार आदि कृत्य करते हैं और इन कृत्यों का आधार आत्मा ही होती है। इस प्रकार शिव, शक्ति और आत्मा ये तीनों तत्व सर्वोपरि हैं और इन के उचित प्रमुदित रूप को हो मंत्र कहा जाता है।

मंत्र अपने आप में शक्तिशाली तेजयुक्त एवं शिवत्व की अभिव्यक्ति देने में समर्थ हैं। शिव शक्ति के उचित सांमजस्य के कारण ही मंत्र योग एवं मोक्ष दोनों ही गतियां देने में समर्थ हैं।

मंत्र स्त्रोत में भी भेद समझ लेना चाहिये। स्त्रोत केवल मात्र किसी देवता की स्तुति / प्रार्थना होती है जो किसी भी प्रकार के शब्दों में संभव है अर्थात् यदि स्त्रोत में निहित शब्दों को बदल भी दें

तो कोई अन्तर नहीं पड़ता पर मंत्र में निहित शब्दों को बदलने की बात तो दूर उसके अनुस्वार आदि में भी अन्तर नहीं किया जा सकता। उसमें समान धर्मी या समान अर्थ बोधक शब्द को बदल कर रखना भी ग्राह्य नहीं है।

प्रार्थना स्तुति/ स्त्रोत में एक ही भाव भिन्न-भिन्न शब्दों में प्रस्तुत किया जा सकता है परन्तु मंत्र में संभव नहीं है।

मानव का आभ्यन्तरिक मन ईश्वर की ही प्रतिकृति है और विशिष्ट साधु-सन्तों का यह अभ्यान्तरिक मन अत्यधिक प्रबल होता है।

जब ऐसे महर्षि या संत अपने आभ्यन्तरिक मन के संयोग से कोई स्तुति या स्त्रोत का पाठ नियमित करते हैं तो वह स्तुति मंत्र का रूप धारण कर लेती है, कालान्तर में वह स्तुति भी उतनी ही फलप्रद बन जाती है जितना कि मंत्र। हनुमान चालीसा या कनक धारा स्त्रोत। इसी प्रकार के मंत्र रूप प्रयुक्त होते हैं और साधक के कार्य में मन्त्रवत सफलता भी देते हैं।

मंत्र का स्वरूप

क्या मंत्र सशरीर है या निराकार ? वस्तुत: मंत्र सशरीर नहीं हैं। मूलत: मंत्र निराकार होते हुए भी सामर्थ्यवान एवं संवेग और अपने अनुकूल वेग के द्वारा ही साधक एवं संबंधित देवता के बीच सफल मध्यस्थता का कार्य करते हैं ।

उदाहरणार्थ: साधक यज्ञ के समय आहुति देते हैं तो इन्द्र मंत्र के माध्यम से उर्मिया ईथर में मिलकर इन्द्र को स्पर्श करती हैं तो इन उर्मियों के साथ होता है, हविष्य, साधक / यज्ञ कर्ता की गंध, भावनाएं, इच्छायें साथ ही यज्ञ कराने वाले का ज्ञान, प्रबल व्यक्तित्व। जब हवि उर्मियां इन्द्र से टकराती हैं तो वे भावनायें- इच्छाएं एवं हविष्य गंध उसे समर्पित होती है तथा लौटते समय ये उर्मिया लाती हैं, इन्द्र की तेजस्विता दृढ़ता एवं आर्शीवाद जो कि पुन: लौट कर यज्ञकर्ता के स्थूल शरीर से टकराती हैं और यज्ञकर्ता को शरीर प्राण में इन्द्र की यह तेजस्विता दृढ़ता देती है। इस तरह देवता एवं यज्ञ कर्ता के मध्य मध्यस्थता का कार्य मंत्र करते हैं।

मंत्र सामर्थ्य

मंत्रों में सामर्थ्य किससे प्राप्त होती है क्या साधक, सम्बन्धित देवता या वे स्वत: ही शक्तिमान होते हैं। वस्तुत: साधक जब आसन पर बैठता है तो वह सामान्य नहीं होकर कुछ ऊपर उठ जाता है। मानव के मन में अन्तश्चेतना और बाह्य चेतना दो मन होते हैं। बाह्य चेतना जैसे भूख, प्यास आदि के रूप है परन्तु अन्तश्चेतना मानव की मूल शक्ति है। इससे सभी कार्य संभव होते हैं। जब साधक मंत्र जप करता है तो यह अन्तश्चेतना ही उसके लिये सर्वाधिक सहायक होती है। इस अन्तश्चेतना के साथ साधक मंत्र जब आप्लावित होता है तब मंत्र सजग एवं प्राणवाहक बनकर फलप्रद बन जाता है। अत: मंत्रों में सामर्थ्य कहीं बाहर से नहीं अपितु उसके भीतर ही उत्पन्न हो जाती है।

जिस कार्य में जितनी ज्यादा अन्तश्चेतना जागृत या सक्रिय होती है मानवता की दृष्टि से वह व्यक्ति उतना ही ज्यादा उच्च स्तर पर होता है। यह सब अभ्यास पर निर्भर करता है। शान्त एवं एकाग्रता जितनी सघन होगी उतनी ही उसमें अधिक सामर्थ्यता आयेगी ।

अन्तश्चेयता / अर्न्तमन व्यापक है और क्षणांश में ही पूरे विश्व के सौ चक्कर लगा सकने में समर्थ होता है। इस अन्तश्चेतना की व्यापकता से ही संत / साधु सैकड़ों मील दूर की घटनाओं को प्रत्यक्षत: देख सकते हैं। यह अन्तरश्चेतना कालातीत है। इसलिये साधक भविष्य को सही- सही पहचान सकने में समर्थ होता है।

वास्तव में हमारे साधना क्षेत्र की आधारभूत यह अन्तश्चेतना ही है जिसके उत्थान से और उपयोग से मंत्र में चैतन्यता दे सकने में समर्थ हो सकते हैं।

(संकलन)

राजस्थान : ब्राह्मण चेहरे पर भाजपा का दांव?

विनोद लाहोटी

भाजपा के चित्तौड़गढ़ सांसद सीपी जोशी को पार्टी का प्रदेश अध्यक्ष बनाए जाने पर राजस्थान में ब्राह्मण राजनीति केंद्र बिंदु बन गया है। इस समुदाय के राजनीतिक महत्व पर एक बार फिर से मरूधरा में चर्चा शुरू हो गई है। राजनीतिक विश्लेषकों के अनुसार भाजपा ने सीपी जोशी को प्रदेश अध्यक्ष घोषित कर राजस्थान में अपने सबसे महत्वपूर्ण वोट बैंक में से एक, ब्राह्मण समुदाय को साधने की कोशिश की है। हालांकि बड़ा सवाल यह है कि इस फैसले से प्रभावित होने वाले अन्य जातीय समीकरणों को भाजपा कैसे संभालेगी ?

चुनाव से पहले भाजपा का ब्राह्मण चेहरे पर दांव

यह कोई संयोग नहीं है कि सीपी जोशी राजस्थान भाजपा के अध्यक्ष बने हैं। इस समाज के राजनीतिक महत्व का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि पिछले दिनों जयपुर में आयोजित ब्राह्मण महापंचायत में भाजपा-कांग्रेस के कई बड़े नेताओं ने शिरकत की। जिसमें उन्होंने मजबूत राजनीतिक प्रतिनिधित्व की मांग की। पिछले कई साल से, इस समुदाय का कांग्रेस और भाजपा की राजनीति में बहुत कम प्रतिनिधित्व रहा है ।

ब्राह्मण राजनीति आई केंद्र में

इससे पहले 2009 से 2013 के बीच अरूण चतुर्वेदी भाजपा के अध्यक्ष थे । उनसे पहले महेश चंद्र शर्मा, ललित किशोर चतुवेर्दी, भंवरलाल शर्मा, रघुवीर सिंह कौशल और हरिशंकर भाभड़ा अध्यक्ष थे। भाजपा ने 9 साल बाद ब्राह्मण समुदाय के किसी दिग्गज को प्रदेश अध्यक्ष बनाया है। दूसरी ओर, कांग्रेस में 2007 से 2011 के बीच ब्राह्मण नेता ने अध्यक्ष के रूप में कार्य किया। उनसे भी पहले कई प्रदेश अध्यक्ष ब्राह्मण थे। जिनमें बी.डी. कल्ला, डॉ. गिरिजा व्यास, गिरधारी लाल व्यास और जयनारायण व्यास शामिल रहे।

अभी राज्य में 17 ब्राह्मण विधायक

हालांकि, कांग्रेस में पिछले 12 साल से इस पद पर किसी भी ब्राह्मण नेता को मौका नहीं मिला। वर्तमान में राजस्थान में 17 ब्राह्मण विधायक हैं। इनमें दो कैबिनेट मंत्री हैं- डॉ. बीडी कल्ला और डॉ. महेश जोशी। इसके अलावा दो ब्राह्मण सांसद हैं- सी.पी. जोशी और घनश्याम तिवारी ।

वहीं, केंद्र में राजस्थान से कोई ब्राह्मण मंत्री नहीं है। इसलिए सभी की निगाहें इस बात पर टिकी हैं कि क्या रेगिस्तानी राज्य में ब्राह्मणों का मजबूत प्रतिनिधित्व होगा या नहीं ?

भाजपा के इस दांव का क्या होगा असर?

इस बीच, 2023 के विधानसभा चुनाव जैसे-जैसे नजदीक आ रहे हैं, राजस्थान में राजनीतिक दलों के साथ-साथ विभिन्न समाज और संगठन भी सक्रिय होते जा रहे हैं। नेता भी समाज से जुड़ने और अपनी जाति और समुदायों के बेहतर प्रतिनिधित्व के लिए आवाज बुलंद करने में कोई कसर नहीं छोड़ रहे। पिछले कुछ दिनों के परिदृश्य का आंकलन करें तो जाट और ब्राह्मण समुदाय ने बड़ी-बड़ी सभाएं कर अपनी ताकत दिखाई है। जाट महाकुंभ जहां 5 मार्च को जयपुर में हुआ था, वहीं ब्राह्मण महापंचायत 19 मार्च को ही जयपुर में हुई थी। दो अप्रैल को जयपुर में राजपूतों की बड़ी पंचायत भी हुई। आगामी नवम्बर-दिसम्बर में हाने वाले राजस्थान विधानसभा के चुनाव स्वयं सी.पी. जोशी के राजनैतिक भविष्य की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है।

कैसा लगा यह अंक

प्रत्यूष

इस अंक में कौन सा आलेख आपको ज्यादा पसंद आया। आप किन विषयों पर आलेख पढ़ना ज्यादा पसंद करेंगे?
किस विषय पर आप हमें अपना मौलिक आलेख, शोध, कविता, कहानी भेजना चाहेंगे। कृपया हमें लिखें।
आपके रचनात्मक सुझावों का सदैव स्वागत होगा।

Happy Independence Day

Jayant Lal Jain

Jayant

Builders & Developers

Plot No. 433, Savina, 100 Feet Road, Opposite RSEB Office,
Udaipur (Raj) Mobile No.: 94136 11111

प्रत्यूष

विश्वविद्यालयों में दीक्षांत समारोह की धूम

गीतांजलि में 42 स्वर्ण पदक सहित 522, साईं तिरूपति में 300 और अनंता में 134 को डिग्रियां, मेवाड़ यूनिवर्सिटी ने बनाए तीन वर्ल्ड रिकॉर्ड

उदयपुर के डीम्ड विश्वविद्यालयों के छात्रों के लिए जून माह खास रहा। जब उन्होंने अपने परिश्रम का मीठा फल चखा। शिक्षा एवं चिकित्सा जगत की जानी-मानी हस्तियों के हाथों डिग्रियां पाकर वे निहाल हो गए। दूसरी ओर गंगरार की मेवाड़ यूनिवर्सिटी ने योग विद्या के तीन वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाएं।

उदयपुर/चित्तौड़गढ़ प्रत्यूष संवाददाता

गीतांजलि यूनिवर्सिटी कन्वोकेशन

गीतांजलि यूनिवर्सिटी का कन्वोकेशन-2023 11 जून को स्व. नर्मदादेवी अग्रवाल ऑडिटोरियम में हुआ। मुख्य अतिथि लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने कहा कि गीतांजली यूनिवर्सिटी की ख्याति पूरे देश में है। इस मेडिकल कॉलेज की स्थापना आमजनों को कम लागत में अत्याधुनिक उपचार मिल सके सोच के साथ की गई थी, जो सच साबित हुई। समारोह के विशिष्ट अतिथि एम्स नई दिल्ली के पूर्व डायरेक्टर पद्मश्री डॉ. रणदीप गुलेरिया और गीतांजली ग्रुप के चेयरमैन व गीतांजली यूनिवर्सिटी के चांसलर जेपी अग्रवाल थे। स्वागत वाइस चेयरमैन कपिल अग्रवाल और एग्जीक्यूटिव डायरेक्टर अंकित अग्रवाल ने किया। अतिथियों ने गीतांजलि विवि के एमबीबीएस, फार्मेसी, नर्सिंग, डेंटल, फिजियोथैरेपी के 42 गोल्ड मेडल्स और 511 ग्रेजुएट्स, पोस्ट ग्रेजुएट व पीएचडी विद्यार्थियों को डिग्रियां दी। डॉ. सुनंदा गुप्ता, डॉ. ए.के. गुप्ता और डॉ. अब्बास अली सैफी को चिकित्सा क्षेत्र में अविस्मरणीय योगदान के लिए सम्मानित किया गया। डॉ. एफएस मेहता ने वार्षिक रिपोर्ट पेश करते हुए विवि में होने वाली रिसर्च, स्पोर्ट्स आदि की जानकारी दी।

अनंता का प्रथम दीक्षांत समारोह

देलवाड़ा (राजसमंद)। अनंता इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइसेंज एंड रिसर्च सेंटर का पहला दीक्षांत समारोह भी 19 जून को आरएनटी मेडिकल कॉलेज उदयपुर के सभागार में हुआ। इसमें 2016 बैच के 134 मेडिकल छात्रों को डिग्री देकर सम्मानित किया गया। कार्यकारी निदेशक डॉ. नितिन शर्मा ने बताया कि इस अवसर पर पूरे राजस्थान (आरयूएचएस) में प्रथम रही दीपिका शर्मा को मुख्य अतिथि विधानसभा अध्यक्ष डॉ. सी.पी. जोशी ने डिग्री व प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया। इससे पहले समारोह का शुभारंभ मुख्य

साईं तिरूपति विश्वविद्यालय का द्वितीय दीक्षांत समारोह

साईं तिरूपति विश्वविद्यालय का द्वितीय दीक्षांत समारोह 19 जून को शिल्पग्राम स्थित मेवाड़ बैंक्विट हॉल में हुआ। समारोह में वर्ष 2016 व 2017 बैचों के 150-150 एमएमबीएस विद्यार्थियों को डिग्रियां प्रदान की गई। समारोह के मुख्य अतिथि आरएनटी मेडिकल कॉलेज के प्रिंसिपल डॉ. विपिन माथुर थे। साईं तिरूपति विश्वविद्यालय के चेयरपर्सन आशीष अग्रवाल, को-चेयरपर्सन शीतल अग्रवाल, कुलपति डॉ. जेके छापरवाल, रजिस्ट्रार डॉ. देवेन्द्र जैन, पीआईएमएस के प्राचार्य व नियंत्रक डॉ. सुरेश गोयल उपस्थित थे। एमबीबीएस 2016 बैंच की परीक्षा में प्रथम स्थान पर तान्या खेमचंदानी और द्वितीय स्थान पर कनिष्का अग्रवाल रहीं, जबकि 2017 बैंच में अनुकृति पानेरी प्रथम व द्वितीय स्थान पर पुजारा रिया रहीं। चेयरपर्सन अग्रवाल ने कहा कि विश्वविद्यालय अपनी स्थापना के आठ वर्ष पूर्ण कर चुका है। इस दौरान कई उतार-चढ़ाव देखें और हर परिस्थिति का सामना किया। इसी के चलते आज विवि व हॉस्पिटल निरंतर प्रगति के पथ पर आगे बढ़ रहा है। को-चेयरपर्सन ने कहा कि यह सभी के लिए बहुत ही खास अवसर है क्योंकि आज आपको डॉक्टर होने का सम्मान दिया जा रहा है और यह आपके द्वारा इतने वर्षों में की गई कड़ी मेहनत का जीता जागता प्रमाण है। कुलपति डॉ. छापरवाल ने विश्वविद्यालय की उपलब्धियों की संक्षिप्त रिपोर्ट प्रस्तुत की। पीआईएमएस के प्रिंसिपल डॉ. सुरेशचन्द्र गोयल ने विद्यार्थियों को कर्म के प्रति निष्ठा की शपथ दिलवाई।

अतिथि जोशी, विशिष्ट अतिथि सुविवि कुलपति प्रो. आईवी त्रिवेदी, संभागीय आयुक्त राजेन्द्र भट्ट, जिला कलेक्टर चित्तौड़गढ़ अरविंद पोसवाल, अनंता के चेयरमैन नारायणसिंह राव, आरएनटी के प्रिंसिपल डॉ. विपिन माथुर आदि ने किया।

मेवाड़ यूनिवर्सिटी के वर्ल्ड रिकॉर्ड

गंगरार। 56 घंटे तक योग और प्राकृतिक चिकित्सा के ऑनलाइन कार्यक्रम में 72 देशों के 596 प्रमुख वक्ताओं को शामिल कर तीन वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाने वाली मेवाड़ यूनिवर्सिटी, गंगरार (चित्तौड़गढ़) का नाम गोल्डन बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में दर्ज हुआ है। वक्ताओं में पतंजलि योगपीठ के योगगुरू बाबा रामदेव का नाम भी शामिल है। वसुंधरा स्थित मेवाड़ ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूशंस के विवेकानंद सभागार में आयोजित एक समारोह में गोल्डन बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड के एशिया हैड डॉ. मनीष विश्नोई और उनके सहायक आलोक कुमार ने तीनों वर्ल्ड रिकॉर्ड के प्रमाण पत्र मेडल आदि मेवाड़ यूनिवर्सिटी के कुलाधिपति डॉ. अशोक कुमार गदिया को प्रदान किए। इस अवसर पर पतंजलि विश्वविद्यालय के भारत स्वाभिमान ट्रस्ट के सेंट्रल हैड परमार्थ देव महाराज भी मौजूद थे। मेवाड़ यूनिवर्सिटी के कुलाधिपति डॉ. अशोककुमार गदिया ने कहा कि भारतीय मनीषा यानी योग, ध्यान, आयुर्वेद और प्राकृतिक चिकित्सा को अपनान होगा। इसे अपनाकर हम अपने जीवन को स्वस्थ और निरोगी बना सकते हैं। इस मौके पर मेवाड़ ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूशंस की निदेशिका डॉ. अलका अग्रवाल, डॉ. मनीष विश्नाई ने भी विचार व्यक्त किए। संचालन जयवीरसिंह आर्य ने व प्रोफेसर राजेशकुमार सैनी ने आभार व्यक्त किया।

चुनावी रण में कांग्रेस का हरावल दस्ता

जयपुर/प्रत्यूष ब्यूरो

लंबे इंतजार के बाद प्रदेश कांग्रेस में जिला अध्यक्षों की नियुक्ति और कार्यकारिणी का विस्तार हो ही गया। प्रदेश कार्यकारिणी में सभी धड़ों को साधने का प्रयास किया गया है। प्रदेश कांग्रेस के अध्यक्ष गोविंदसिंह डोटासरा अपने विश्वस्त लोगों को कार्यकारिणी में एडजस्ट करवाने में कामयाब रहे हैं। कार्यकारिणी में मुख्यमंत्री अशोक गहलोत के समर्थकों को पूरी तवज्जो दी गई है तो पूर्व डिप्टी सीएम सचिन पायलट समर्थकों को भी कार्यकारिणी में जगह मिली है। कार्यकारिणी में 14 विधायकों को भी लिया गया है, इनमें 5 को उपाध्यक्ष और नौ को महामंत्री बनाया गया है।

नए जिलाध्यक्ष

एआईसीसी की ओर से जारी सूची के अनुसार बांसवाड़ा में रमेश पांडिया, भरतपुर में दिनेश सुपा, भीलवाड़ा में अक्षय त्रिपाठी, बीकानेर ग्रामीण में विश्नाराम सियाग, बूंदी में सीएल प्रेमी, चित्तौड़गढ़ में भैरूलाल चौधरी, चूरू में इंद्राज खींचड़, धौलपुर में साकेत बिहारी शर्मा, डूंगरपुर में वल्लभराम पाटीदार, श्री गंगानगर में अंकुर मगलानी को जिलाध्यक्ष बनाया गया है। हनुमानगढ़ में सुरेंद्र दादरी, जालोर में भंवरलाल मेघवाल, झुंझुनूं में दिनेश सुंडा, करौली में शिवराज मीणा, कोटा शहर में रविन्द्र त्यागी, कोटा ग्रामीण में भानु प्रतापसिंह, प्रतापगढ़ में भी एक अन्य भानु प्रतापसिंह, पाली में अजीत दर्द, सिरोही में आनंद कुमार जोशी, सवाईमाधोपुर में गिरिराज सिंह गुर्जर, टोंक में हरीप्रसाद बैरवा, उदयपुर शहर में फतेहसिंह राठौड़ और उदयपुर ग्रामीण में कचरूलाल चौधरी जिला अध्यक्ष बनाए गए है।

कोषाध्यक्ष यथावत: पार्टी ने कोषाध्यक्ष के पद पर सीताराम अग्रवाल को काबिज रखा है। वह पहले भी कोषाध्यक्ष थे।

संगठन महासचिव होंगे तूनवाल: ललित तूनवाल को संगठन महासचिव बनाया गया है।

इन्हें बनाया उपाध्यक्ष

प्रदेश कांग्रेस में डॉ. जितेन्द्र सिंह, नसीम अख्तर इंसाफ, गजराज खटाना, हाकम अली, घनश्याम मेहर, भरतराम मेघवाल, जगदीश चन्द्र जांगिड, मंजू मेघवाल, वीरेन्द्र बेनीवाल, हीरालाल, हगामीलाल मेवाड़ा, कैलाश मीणा, रतन देवासी, रामविलास चौधरी, रमेश खंडेलवाल, सुशील शर्मा, जगतार सिंह कांग, समरजीत सिंह, रफीक मंडेलिया, राजकुमार जयपुर और दर्शन सिंह को उपाध्यक्ष बनाया गया है।

ये बने महासचिव

प्रशांत बैरवा, राकेश पारीक, रीटा चौधरी, जिया उर रहमान, जसवंत गुर्जर, आरसी चौधरी, स्वर्णिम चतुर्वेदी, विशाल जांगिड़, देशराज मीणा और फूलसिंह ओला, राजेन्द्र मूंड, प्रतिष्ठा यादव, राखी गौतम, महेन्द्रसिंह गुर्जर, प्रशांत शर्मा, पुष्पेन्द्र भारद्वाज, रामसिंह कस्वां, चेतन डूडी, मोहन डागर, रोहित बोहरा, सुदर्शनसिंह रावत, मनोज मेघवाल, अजीतसिंह यादव, इंद्राज सिंह गुर्जर, गणेश घोघरा, पूसाराम गोदारा, अमित धारीवाल, विक्रमसिंह शेखावत, लालसिंह झाला, विजेन्द्रसिंह सिद्धू, अमित चाचान, महेन्द्रसिंह बारजोद, सुमन यादव, साफिया जुबेर, राजपाल शर्मा, गोपाल कृष्ण शर्मा, चांदमल जैन, राजेन्द्र शर्मा, हरीश चौधरी, इंदिरा मीणा, मीनाक्षी चंद्रावत, मुकेश भाकर, राजेश चौधरी, सुरेश मिश्रा, अंजना मेघवाल, संजय कुमार जाटव, शिमला देवी नायक और ओमाराम मेघवाल को महासचिव बनाया है।

उदयपुर: परिदृश्य

हीरालाल दरांगी प्रदेश उपाध्यक्ष | लालसिंह झाला महासचिव | गोपाल शर्मा महासचिव | दिनेश श्रीमाली सचिव | भीमसिंह चूंडावत महासचिव | फतहसिंह राठौड़ जिलाध्यक्ष शहर | कचरूलाल चौधरी देहात जिलाध्यक्ष

प्रदेश सचिव

भूराराम सिरवी, मुकेश वर्मा, सचिन सरवटे, श्रवणराम पटेल, कैप्टन अरविंद कुमार, रघुवीर राठौड़, नरेश चौधरी, राहुल भाकर, राघवेन्द्र मिर्धा, हिम्मतसिंह गुर्जर, पीएल प्रजापति, शिवलाल गोदारा, इंद्रजीतसिंह बराड़, मनीष मक्कड़, दयानंद बेरवाल, कैलाश झालीवाल, गब्बरसिंह मीणा, संजय यादव, सत्येन्द्र मीणा, संदीप पुरोहित, ललित बोरीवाल, नारायण मेनारिया, हनुमंतसिंह शेखावत, छोटूराम मीणा, मोहित सोनी, कविता गुर्जर, राहुल तंवर, विकास नागर, मुकेश गोयल, रामलाल लील, राजेन्द्र पोसवाल,गोविंदराम भार्गव, वीरेन्द्र झाला, ताराचंद सैनी, योगेन्द्र परमार, डॉ. सुमित गर्ग, दिनेश कस्वा, भीमसिंह चूंडावत, दिनेश श्रीमाली, रणधीर, लक्ष्मणसिंह गोदारा, योगेश नागर, महेश व्यास, अयूब खान, पुष्पेन्द्र धाबाई, बिजेन्द्र सिंह महलावत, प्रभूदयाल सैनी, रामूराम साख, अरुण कुमावत, आनंदलाल मीणा, अहसर अहमद, दिलीप चौधरी, रामनिवास गवाला और चतुरसिंह बासड़ा, चन्द्रसिंह राणा, आलोक पारीक, शिवकांत नंदवाना, शंकर डंगायच, रंजना शर्मा, शंकरलाल गादरी, गोवर्धनलाल, डॉ. हिमांशु कटारा, राजेन्द्र प्रसाद मीणा, हंसराज मीणा, देवकीनंदन वर्मा, सरलेश सिंह राणा, सूरज शर्मा, रामनिवास कूकना, मकबूल बालोच, बृजलाल मीणा, भूपेन्द्र भारद्वाज, रामस्वरूप गुर्जर, वीरेन्द्र सिंह महला, हिम्मतसिंह चौधरी, रियाजत खान, अनिल बुरड़क, रामजीलाल शर्मा, संदीप शर्मा, अजय अग्रवाल, मूलचंद राजपुरोहित, तारा बेनीवाल, रूबी खान, कल्पना भटनागर, अनिता मीणा, लीलावती वर्मा, सुनील लारा, देशराज पहाड़िया, धर्मराज, रंजीतसिंह लोठ, रवि जोशी, गिर्राज खंडेलवाल, आईदान भाटी, राहुल कुमार मीणा, मानवेन्द्र बुडानिया, गंगन वारेंग, रामदेई बावरी, गोपाललाल शर्मा, जगदीश चौधरी, शिवप्रसाद मीणा, अर्चना सुराणा, जोगेन्द्र कोचर, हरीश परिहार, विभा माथुर, गरिमा राजपुरोहित, डिम्पल राठौड़, शबनम गोदारा, मुस्ताक खान, अमनप्रीत सिंह, सईदी सयाम, आजाद सिंह राठौड़, विक्रम वाल्मिकी, नरपत मेघवाल, सुरेन्द्र लांबा, संजय अदाराम मेघवाल, पूजा वर्मा, अनिल चोपड़ा, आसिफ अली और रमेश महिंद्रा।

रसोई की दिशा से बनते-बिगड़ते हैं रिश्ते

वास्तु शास्त्र का मूल आधार भूमि, जल, वायु एवं प्रकाश है, जो जीवन के लिए अति आवश्यक है। इनमें असंतुलन होने से नकारात्मक प्रभाव उत्पन्न होना स्वाभाविक है। लेकिन कई बार वास्तु के नियमों का पालन न करने पर व्यक्ति विशेष का स्वास्थ्य ही नहीं, बल्कि उसके रिश्ते पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

हीरालाल नागदा

वास्तुशास्त्र के अनुसार रसोईघर, चिमनी, भट्टी, धुएं की चिमनी आदि मकान के विशेष भाग में निर्धारित की जाती है ताकि हवा का वेग धुएं तथा खाने की गंध को अन्य कमरों में न फैलाए तथा इससे घर में रहने व काम करने वालों का स्वास्थ्य न बिगड़े।

गलत दिशा

- यदि रसोईघर नैरत्य कोण में हो तो यहां रहने वाले हमेशा बीमार रहेंगे हैं।
- यदि रसोई घर में अग्नि वायव्य कोण में हो तो यहां रहने वालों का अक्सर झगड़ा होता रहता है। मन में शांति की कमी आती है और कई प्रकार की परेशानियों का भी सामना करना पड़ता है।
- यदि अग्नि उत्तर दिशा में हो तो यहां रहने वालों को धन हानि होती है।
- यदि अग्नि ईशान कोण में हो तो बीमारी और झगड़े अधिक होते हैं। साथ ही धन हानि और वंश वृद्धि में भी कमी होती है।
- यदि घर में अग्नि मध्य भाग में हो तो यहां रहने वालों को हर प्रकार की परेशानियों का सामना करना पड़ता है।

कहां होनी चाहिए रसोई

- रसोईघर हमेशा आग्नेय कोण में ही होना चाहिए।

कुछ बातों का रखें ध्यान

- रसोई में तीन चकले न रखें, इसमें घर में क्लेश हो सकता है।
- रसोई में हमेशा गुड़ रखना सुख-शांति का संकेत माना जाता है।
- टूटे-फूटे बर्तन भूलकर भी उपयोग में न लाएं, ऐसा करने से घर में अशांति का माहौल बना रहता है।
- रसोई घर पूर्व मुखी अर्थात् खाना बनाने वाले का मुंह पूर्व दिशा में ही होना चाहिए। उत्तर-मुखी रसोई खर्च ज्यादा करवाती है।
- यदि आपका किचन आग्नेय या वायव्य कोण को छोड़कर किसी अन्य क्षेत्र में हो, तो कम से कम वहां पर बर्नर की स्थिति आग्नेय अथवा वायव्य कोण की तरह ही हो।

- रसोईघर के लिए दक्षिण-पूर्व क्षेत्र सर्वोत्तम रहता है। वैसे यह उत्तर-पश्चिम में भी बनाया जा सकता है।
- यदि घर के अग्नि आग्नेय कोण में हो तो यहां रहने वाले कभी भी बीमार नहीं होते, ये लोग हमेशा सुखी जीवन व्यतीत करते हैं।
- यदि भवन में अग्नि पूर्व दिशा में हो तो यहां रहने वालों का ज्यादा नुकसान नहीं होता है।
- रसोईघर हमेशा आग्नेय कोण, पूर्व दिशा में होना चाहिए या फिर इन दोनों के मध्य में होना चाहिए वैसे तो रसोईघर के लिए उत्तम दिशा आग्नेय ही है।

क्या करें, क्या न करें

- उत्तर-पश्चिम की ओर रसोई का स्टोर रूम, फ्रिज और बर्तन आदि रखने की जगह बनाएं।
- रसोईघर के दक्षिण-पश्चिम भाग में गेहूं, आटा, चावल आदि अनाज रखें।
- रसोई के बीचों बीच कभी भी गैस, चूल्हा आदि नहीं जलाएं और न ही रखें।
- कभी भी उत्तर दिशा की तरफ मुख करके खाना नहीं पकाना चाहिए, सिर्फ थोड़े दिनों की बात है ऐसा मान कर किसी भी हालात में उत्तर दिशा में चूल्हा रखकर खाना न पकाएं।

सत्य के आश्रय में ही सुख

डॉ. दीपक आचार्य

सत्य जीवन का सर्वोपरि कारक है। इसका आश्रय ग्रहण करने पर धर्म और सत्य हमारे जीवन में संरक्षक और मार्गदर्शक की भूमिका में आ जाते हैं। इसका आजीवन सकारात्मक प्रभाव हमारे प्रत्येक कर्म पर तो पड़ता ही है, हमारा समूचा आभामण्डल ही प्रभावोत्पादक और शुभ्र परिवेश बन जाता है। धर्म और सत्य ऐसे महानतम कारक हैं जो अवलम्बन करने वाले की हर प्रकार से रक्षा करते हैं और उन्नति के लिए ऊर्जा का संचरण करते रहते हैं। इतने प्रभावी होने के बावजूद इसका आश्रय लोग या तो ले नहीं पाते अथवा अपनी क्षुद्र कामनाओं के वशीभूत इनसे दूरी ही बनाए रखते हैं। जीवन में एक किनारे पर धर्म, सत्य और आनंद रहते हैं जो सत्यं-शिवं-सुन्दरं का वरदान प्रदान करते हैं। दूसरी ओर अधर्म, असत्य और पाप का डेरा होता है जो क्षणिक आत्मतुष्टि तो प्रदान करता है किन्तु वह कभी शाश्वत नहीं रह पाती। इसके साथ ही यह अलक्ष्मी, भय और उद्विग्नता साथ लेकर आती है। सत्य की जड़ें बहुत गहरी होती हैं और उन्हें जमने में समय लगता है। इसका फलन भी खूब लंबे समय बाद होता है जबकि असत्य की जड़ें खरपतवार की तरह छिछली होती हैं जो पानी हो या जमीन, हर कहीं जल्दी ही फलित हो जाती हैं। हर आदमी चाहता है कि कम से कम समय में अधिक से अधिक फायदा मिले। इसलिए आम लोगों का रुझान असत्य, झूठ और फरेब जैसे मार्गों की ओर ही होता है।

असत्य कभी अकेला नहीं आता, और न ही अकेला रहता है। उसकी परछायी दूर-दूर तक पसरी रहती है। एक बार असत्य का आश्रय पा लेने के बाद यह फफूंद या संक्रमण की तरह फैलने लगता है। असत्य एक पूरी श्रृंखला होती है। यही कारण है कि किसी भी मामले में एक झूठ को छिपाने के लिए एक के बाद एक झूठ का सहारा लेना पड़ता है और फिर जीवन में जुठ की कड़ी से कड़ी जुड़ती चली जाती है तथा आदमी को लगता है जैसे वह असत्य की कई-कई जंजीरों में फंसता ही चला जा रहा है। एक बार झूठ की शरण में जाने पर झूठ के तानों-बानों में उलझता हुआ आदमी मकड़ी ही होकर रह जाता है। ऐसे लोगों के लिए झूठ अपने दैनंदिन स्वभाव का हिस्सा बन जाता है। उन्हें लगता है कि वे जो

कुछ बोल और सुन रहे हैं वह सब उनका अपना सत्य है। यही झूठ उनके अहंकार को इतना अधिक विराट और व्यापक कर लेता है कि फिर वे झूठ को जिन्दगी का परम मित्र मान लेते हैं और उसे छोड़ नहीं पाते। मरते दम तक झूठ के पाश उन्हें बांधे रखते हैं। जो लोग झूठ का सहारा लेते हैं उन्हें अपना झूठ छिपाने के लिए हमेशा एक पर एक झूठ बोलने को विवश होना पड़ता है और ऐसे में वे झूठ का पुलिंदा बन जाते हैं। जिसकी वाणी में झूठ प्रवेश कर जाता है उसके पूरे शरीर और जीवन में झूठ का समावेश इस प्रकार हो जाता है कि व्यक्ति को कभी यह अहसास नहीं होता कि वह झूठ बोल रहा है क्योंकि सच और झूठ में फर्क करने और परिणाम के बारे में चिंतन करने वाली विवेक बुद्धि अंधकार की घनघोर काली छाया से ग्रसित हो जाती है और ऐसे में उसे लगता है कि झूठ का संरक्षण ही उसे बचा सकता है। जो लोग बात-बात पर झूठ बोलते हैं वे पुरुषार्थहीन, निर्वीर्य, कायर, नपुसंक और भयग्रस्त होने के साथ ही उनके जीवन में हमेशा अपराधबोध और आत्महीनता की भावना रहती है। ऐसे लोगों को अपने अस्तित्व की रक्षा करने अथवा साबित करने के लिए झूठी बातों का सहारा लेना पड़ता है। ऐसे खूब सारे झूठे लोग हैं जो रोजाना हमारे संपर्क में आते हैं अथवा हमारे आस-पास ही भटकते रहते हैं। अपने क्षेत्र में झूठों की कई किस्में हैं। झूठ भी भ्रष्टाचार, की तरह यत्र-तत्र-सर्वत्र है। झूठ के लिए कहीं कोई भेदभाव नहीं है। हर आकार-प्रकार और विचार का, हर किस्म का व्यक्ति झूठ का दामन थाम सकता है। झूठे लोग कल्पनाओं और ख्वाबों में जीने के आदी होते हैं। ये लोग अपनी वाहवाही के लिए चाहे जितना झूठ बोल सकते हैं। कोई भी आदमी एक बार झूठ बोलना शुरू कर दे तो फिर उसे झूठ में दक्षता पाने के लिए कोई प्रशिक्षण नहीं लेना पड़ता। ऐसा व्यक्ति झूठ साम्राज्य का बादशाह बन जाता है। दुनिया में सबसे ज्यादा अविश्वासी, विश्वासघाती और महादुष्ट यदि कोई हैं तो वह हैं झूठे आदमी। ऐसे लोग अपने छोटे-मोटे स्वार्थ के लिए किसी का काम तमाम कर सकने तक की सारी योग्यताएं रखते हैं। क्योंकि इनके लिए अपने झूठ के कवच के सामने सारे नियम-कानून और हथियार बेकार हैं। एक बार जो झूठ का सहारा ले लेता है उसके लिए हर प्रकार का अपराध खेल जैसा हो जाता है। हो भी क्यों न। उसे झूठ बोलकर ही तो बचाव कर लेना है। फिर आजकल झूठे लोगों को संरक्षण देने वाले उनके भाईबंद-भतीजों के कई-कई गिरोह प्रतिष्ठित हैं जो हमेशा ऐसे लोगों के बचाव की मुद्रा में ही रहते हैं। झूठों की दोस्ती झूठों से होना स्वाभाविक भी हैं क्योंकि खच्चरों को अपने स्वजातिजनों से विशेष प्रेम होता है। ये खच्चर मैदानी इलाकों से लेकर पहाड़ों के शिखर तक परिभ्रमण कर रहे हैं। और वह भी इस सोच के साथ कि सारी दुनिया का बोझ वे ही उठाते हैं। झूठे लोग भले ही फरेब तथा षड्यंत्रों के सहारे पैसा बना लें, आलीशान भवन खड़े कर लें, अनाप-शनाप धन-दौलत जमा कर लें और प्रतिष्ठा के शिखरों को चूम लें, लेकिन ये न खुद को संतुष्ट रख सकते हैं, न औरों को। जीवन का असली आनंद सत्य संभाषण, सत्य श्रवण और सत्य मनन में ही है और यही व्यक्ति को झूठ से बचाने में समर्थ है। एक बार सत्य का आश्रय ले लेने पर जीवन भर के लिए निरपेक्षता, निर्भयता और प्रसन्नता अपने आप व्यक्ति में आ जाती है। अपने आस-पास झूठे लोगों के होने पर का दुष्प्रभाव हम पर भी पड़ता है और हमारा आभामण्डल भी फीका पड़ने लगता है। जो लोग झूठ बोलते हैं उनसे सम्पर्क छोड़ देना चाहिए। झूठों की छाया पड़ना भी आत्मघाती है।

झूठे लोगों से व्यवहार रखने वाले व्यक्ति के पुण्यों का क्षय हो जाता है और खराब ग्रह और अधिक अनिष्टकारी व कुपित हो जाते हैं। झूठों से मैत्री और सम्पर्क पितृदोष, कुलदोष भी घातक स्तर पाप लेता है और ऐसे लोगों में आधिभौतिक, आधिदैविक और आधिदैहिक तापों का असर ज्यादा देखने को मिलता है।

प्रथम अणु विस्फोट

हिरोशिमा में हुआ था मानवता के प्रति जधन्य अपराध

राजेन्द्र चतुर्वेदी

एक भयानक धमाके से पूरा हिरोशिमा कांप उठा, धमाका होने के अगले ही क्षण पूरा नगर लगभग छह हजार डिग्री की गरमी से जलने लगा, एक विशेष प्रकार की भयानक आग ने कुछ क्षणों के लिए सारे शहर को अपनी लपेट में ले लिया।

6 अगस्त 1945, स्थान: जापान का हिरोशिमा नगर, समय: प्रात: 8.15 बजे। दूसरा विश्व युद्ध चल रहा था और अमेरिका के बम वर्षक बी. 29 विमान जापान के विभिन्न नगरों को अपना निशाना बना रहे थे। कब बम वर्षा होने लगे, इसका कोई पता नहीं था। फिर भी हिरोशिमा में दिन की शुरूआत शांतिपूर्ण हुई थी। जापानी रेडियो ने यह सूचना प्रसारित की कि शत्रु के तीन बम-वर्षक विमान जो नगर के ऊपर देखे गये हैं तथा वे पश्चिम में हिरोशिमा की ओर बढ़ रहे हैं, अत: हिरोशिमा के लोग पूरी सावधानी बरतें। रेडियो ने यह सूचना दुहरानी चाही परन्तु वह दुहराई न जा सकी और एक भयानक धमाके से पूरा हिरोशिमा कांप उठा, धमाका होने के अगले ही क्षण पूरा नगर लगभग छह हजार डिग्री की गरमी से जलने लगा, एक विशेष प्रकार की भयानक आग ने कुछ क्षणों के लिए सारे शहर को अपनी लपेट में ले लिया। इसके उपरान्त आसमान में कई हजार मीटर की ऊंचाई पर बादल छाकर रेडियो-धर्मिता उत्सर्जित करने लगे जिसके परिणाम स्वरूप तेज हवा के साथ मूसलाधार वर्षा होने लगी परन्तु इस वर्षा में

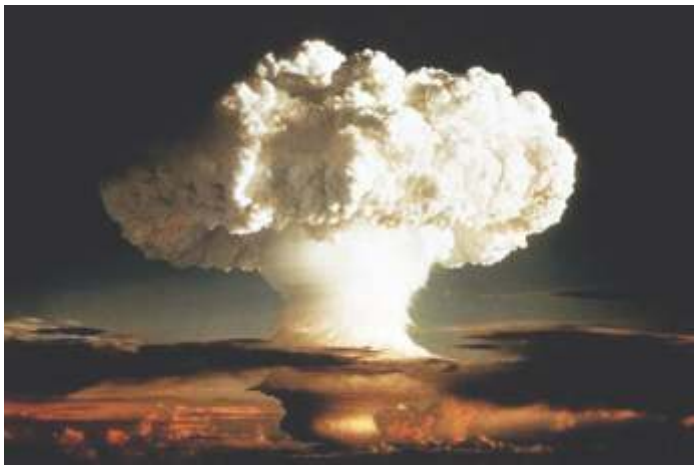

पानी के स्थान पर तेजाब की तरह का तरल पदार्थ बरस रहा था। यह तेजाबी वर्षा लगभग दो घंटे तक होती रही। परिणामस्वरूप जापान का एक अति सुन्दर नगर हिरोशिमा श्मशान में तब्दील हो गया। चालीस हजार कोरियाई मजदूरों के साथ विस्फोट केन्द्र और उसके आसपास के सभी लोग विलुप्त और चार पांच किलोमीटर की परिधि में रहने वाले लोग बुरी तरह घायल हो गये। बहुसंख्यक घायल अंधे और बहरे हो गये थे। उनमें से बहुत से लोगों की चमड़ी पूरी तरह जल गई थी। हां, उस भीषण त्रासदी की कहानी सुनाने के लिए कुछ लोग दो-तीन साल तक अवश्य जीवित बचे रहे। यदि वे लोग जीवित न रहते तो हमें यह कौन बताता कि उस तेजाबी वर्षा की एक-एक बूंद से शरीर में तीर जैसी चुभन महसूस होती थी और ऐसी पीड़ा होती थी जैसे शरीर से मांस नोचा जा रहा हो। हिरोशिमा बम-विस्फोट के ठीक तीसरे दिन क्रूर दानवों ने जापान के दूसरे नगर नागासाकी पर भी कहर बरपाया जिसमें लगभग चालीस हजार लोगों ने अपने प्राण गंवाये और पच्चीस हजार लोग बुरी तरह घायल हुए। हिरोशिमा में हुई जन हानि का आकलन भी म्युनिसिपल कमेटी हिरोशिमा ने अगस्त 1946 में प्रकाशित किया था। इसके अनुसार हिरोशिमा अणु बम विस्फोट में 1,18,661 लोगों की मौत हुई थी, 79,130 लाख घायल हुए थे और 36,661 लोग लापता थे। इसके अलावा ये दोनों नगर परमाणु विस्फोट के कारण हुए परमाणु असंतुलन के दुष्प्रभाव को लम्बे समय तक झेलते रहे हैं। जापानियों ने अपने अनवरत परिश्रम से हिरोशिमा की सुंदरता और विकास को नया रूप दिया। आज यह नगर विश्व का सबसे महत्वपूर्ण शांति स्मारक भी है, क्योंकि परमाणु अस्त्र-शस्त्र कितने विनाशक हो सकते हैं, हिरोशिमा इसका जीता-जागता उदाहरण है।

अजंता-एलोरा गुफा से भी पुरानी मधुबनी पेंटिंग

चित्रकला का समस्त भारतीय कलाओं में विशेष स्थान है। मनुष्य सृष्टि के प्रारंभ से ही अपने विचारों, भावों तथा अपनी सामाजिक स्थिति एवं समस्याओं को चित्रों के माध्यम से अभिव्यक्त करता आया है। कालान्तर में इन्होंने ही लोक चित्रकला का रूप ले लिया। अतीत के विश्वासों तथा ऐतिहासिक घटनाओं को इन लोक चित्रकला के माध्यम से सफलतापूर्वक प्रकट किया जाता है। ऐसी ही एक कला 'मिथिला चित्रकला' या 'मधुबनी पेंटिंग' है।

मधुबनी अथवा मिथिला कला का इतिहास बहुत पुराना है। मिथिला के प्राचीन साहित्य से पता लगता है कि यह चित्रकला अजन्ता-एलोरा के गुफा चित्रों से भी पुरानी है। पौराणिक आख्यानों के अनुसार राजा जनक के महल की महिलाएं दीवारों पर ये चित्र बनाती थीं। एक अन्य मान्यता यह है कि श्रीराम और सीता के साथ लक्ष्मण के भी वन चले जाने के बाद उनकी पत्नी उर्मिला दीवार पर अपने पति का चित्र बनाकर उसकी पूजा करती थी। इसके बाद वह अपनी वेदना को भी चित्रों के माध्यम से अभिव्यक्त करती थी। यही शैली आगे चलकर मिथिला या मधुबनी चित्रकला के रूप में प्रसिद्ध हुई। मधुबनी, सिमरी, लहेरिया सराय, रांटी, भवानीपुर आदि इसके प्रमुख क्षेत्र हैं। यह शैली मिथिला की महिलाओं के धार्मिक पर्व, त्यौहार, अनुष्ठान, विवाह, यज्ञोपवीत आदि से जुड़ी है। इसमें चित्र उंगली या बांस की कूची से बनाए जाते थे। पर अब ब्रश का प्रयोग भी होने लगा है। इसमें हरा, लाल, नीला, केसरिया जैसे प्राकृतिक रंग ही प्राय: प्रयुक्त होते हैं। इन रंगों के निर्माण में काला रंग काजल एवं लौ से, पीला रंग यूचना और बेर के पत्ते के दूध से, नारंगी पलाश के फूलों से, लाल कुसुम के फूलों से तथा सीम के पत्ते से हरा रंग प्राप्त किया जाता है।

पहले ये चित्र प्राय: दीवारों पर बनाए जाते थे, पर अब कपड़े और कागज पर भी बनाए जाने लगे हैं। मधुबनी चित्रकला के धार्मिक चित्रों में दुर्गा, राधा-कृष्ण, सीता-राम, शिव-पार्वती, विष्णु-लक्ष्मी, सीता स्वयंवर में वरमाला डालने का चित्रण आदि

उल्लेखनीय हैं। कोहबर और अरिपन इसकी दो प्रमुख श्रेणियां हैं। विवाहोपरांत कन्या के घर में ही वर का अस्थायी निवास (कोहबर घर) होता है। इसके बाहर और अन्दर बने चित्र विशिष्ट प्रतीक माने जाते हैं। कोहबर के बाहर कामदेव-रति के चित्र, अंदर पुरूष-नारी की जननाकृतियां तथा चारों कोणों के पास यक्षिणी बनाई जाती है। केला मांसलता का, मछली कामोत्तेजना का, सुग्गे कामवाहक का, बांस वंशवृद्धि का, सिंह शक्ति का, हाथी-घोड़े ऐश्वर्य के, हंस-मयूर शांति के तथा सूर्य-चन्द्र दीर्घजीवन के प्रतीक होते हैं। कोहबर चित्रकारी में यांत्रिकता भी होती है जैसे उलटा त्रिभुज, शक्तिमुख, सर्प, स्वस्तिक आदि। पत्तियों के विशिष्ट आकार भी चित्रित किए जाते हैं। इसी प्रकार अरियन आंगन का चौखट के सामने जमीन पर बनाई जाने वाली चित्रों की परम्परा है, बंगाल की अल्पना की तरह अरयन भी उंगली से बनाई जाती है। इसकी पांच प्रमुख श्रेणियां हैं, जिनमें पिसे चावल और रंगों का प्रयोग कर मनुष्य और पशु-पक्षी के चित्र, फूल, फल, पेड़, तंत्रवाही प्रतीकों के चित्र, स्वस्तिक, दीप आदि के आकार बनाए जाते हैं। अपने सीमित साधनों के सहारे यह कला अब चित्रकला न रहकर वस्त्र-सज्जा के क्षेत्र में प्रवेश कर चुकी है। अब इस शैली के चित्र साड़ी, कुरते, जैकेट आदि पर भी बनाए जाते हैं। इसके विस्तृत क्षेत्र को देखकर नई पीढ़ी में इसमें प्रति आकर्षण बढ़ा है, जो इस लोक कला के भविष्य के लिए एक शुभ संकेत है।

प्रस्तुति- अमित शर्मा

आई है ये थाली गुजरात से

आशा माथुर

दूध पाक

सामग्री: फुल क्रीम दूध–एक लीटर, चावल बासमती–3 बड़े चम्मच, चीनी–5 से 6 बड़े चम्मच, हरी इलायची–2, कटी मेवा–2 बड़े चम्मच, केसर– 4 से 5 धागे (ऐच्छिक)।

यूं बनाएं: दूध में साबुत इलायची डालकर उबलने रखें। चावल धोकर डाल दें। एकदम मंदी आंच में पकने दें। अच्छी तरह पक जाने पर चीनी डालकर और पकाएं। यह पाक मध्यम गाढ़ेपन तक पकाया जाता है। कटी मेवा व केसर डाल दें।

मसाला थेपला

सामग्री: गेहूं का आटा एक प्याला, बेसन–2 बड़े चम्मच, चावल का आटा–एक बड़ा चम्मच, नमक–एक छोटा चम्मच, लालमिर्च पाउडर–1/3 छोटा चम्मच, हल्दी–1/4 छोटा चम्मच, जीरा पाउडर– 1/3 छोटा चम्मच, कसूरी मेथी–3 बड़े चम्मच, अजवायन कुटी हुई–1/4 छोटा चम्मच, अदरक–हरीमिर्च पेस्ट–एक बड़ा चम्मच, तिल–एक बड़ा चम्मच, पर्याप्त तेल।

यूं बनाएं: आटा, बेसन व चावल का आटा मिलाएं। सभी मसाले व कसूरी मेथी मिलाएं (इसमें ताजी मेथी भी डाल सकते हैं)। दो बड़े चम्मच तेल व अदरक–हरीमिर्च पेस्ट मिलाएं। पानी की सहायता से नरम गूंथ लें। छोटी–छोटी रोटी (थेपला) बनाकर तेल की सहायता से सेकें।

लापसी

सामग्री: दलिया– एक प्याला, गुड़ कद्दूकस – 1/2 प्याला, दालचीनी–एक इंच का टुकड़ा, लौंग–2 से 3, छोटी इलायची–5 से 6, जायफल पाउडर–एक चुटकी, देसी घी–2 से 3 बड़े चम्मच, कटी मेवा– 2 से 3 बड़े चम्मच।

यूं बनाएं: कड़ाही में घी गरम करें और लौंग व दालचीनी डाल दें। दो से 3 सेकंड भूनने पर दलिया डालकर खूब मंदी आंच में हल्का भूरा होने तक सेक लें। दूसरी ओर ढाई प्याला पानी में गुड़ डालकर उबाल लें। इसे छानकर दलिए में डाल दें। ढक कर मंदी आंच में पकने दें। यह मिश्रण खिला–खिला पकना चाहिए। कटी मेवा व इलायची पाउडर डालकर उतार लें।

खट्टी-मीठी दाल

सामग्री: अरहर की दाल–एक प्याला, जमीकंद – 100 ग्राम, मूंगफली – 50 ग्राम, गुड़–50 ग्राम, इमली का पानी–1 /2 प्याला, हरीमिर्च का पेस्ट–डेढ़ छोटा चम्मच, धनिया पाउडर–2 छोटा चम्मच, हल्दी पाउडर–2 छोटा चम्मच, नमक– स्वादानुसार, छुहारे–दो।

तड़के के लिए: जीरा व राई–प्रत्येक 1/2 छोटा चम्मच, दालचीनी–एक इंच का टुकड़ा, लौंग–2, हींग–चुटकी भर, करीपत्ते–7, साबुत लालमिर्च–2, घी–2 छोटा चम्मच।

यूं बनाएं: दाल को धोकर 5 प्याला पानी, जमीकंद के टुकड़े, नमक व हल्दी डालकर कुकर में नरम होने तक पकाएं। अब कुकर खोलकर तड़के के अलावा सारी सामग्री मिलाकर 7–8 मिनट तक खुला उबालें। अब तड़के के लिए घी गरम करें। सारी तड़के की सामग्री मिलाकर तड़का तैयार करें। इसे उबलती दाल में डाल दें। पांच मिनट और उबाल कर दाल उतार लें। ऊपर से हरा धनिया काटकर डालें।

स्वाद भरी सब्जियां

सेव-टमाटर नू शाक

सामग्री: लाल टमाटर मध्यम आकार के–4, गुड़ कद्दूकस किया– एक छोटा चम्मच, इमली का पेस्ट–एक छोटा चम्मच, लालमिर्च पाउडर–एक छोटा चम्मच, जीरा– धनिया पाउडर– एक छोटा चम्मच, नमक–एक छोटा चम्मच, जीरा व राई मिक्स–एक छोटा चम्मच, करीपत्ते–7 से 8, तेल– एक बड़ा चम्मच, तिल का पाउडर– एक बड़ा चम्मच, सेव बारीक– 21/2 प्याला, हींग– चुटकी भर।

यूं बनाएं: सबसे पहले टमाटर को मध्यम आकार में काट लें। तेल गरम करके जीरा राई डालें। चटकने पर हींग व करीपत्ते डालें। अब मसाले व तिल पाउडर डालकर थोड़ी देर चलाएं (3 से 4 सेकंड)। गुड़ व इमली का पेस्ट और 1/2 प्याला पानी डालकर थोड़ा भूनें। अब टमाटर डालकर सब्जी पका लें। टमाटर के पक जाने पर परोसते समय सेव व बारीक कटा हरा धनिया मिला दें।

बटाटा नू शाक

सामग्री: आलू मध्यम आकार के–4 से 5, तेल–4 से 5 बड़े चम्मच, काजू–8 से 10, किशमिश – 10 से 12, तिल–एक छोटा चम्मच, जीरा–एक छोटा चम्मच, राई– 1/2 छोटा चम्मच, धनिया– जीरा पाउडर– एक छोटा चम्मच, हल्दी पाउडर एक छोटा चम्मच, मिर्च पाउडर–एक छोटा चम्मच, नमक– एक छोटा चम्मच, हींग–एक चुटकी, इमली का पेस्ट–एक बड़ा चम्मच, गुड़ कद्दूकस एक बड़ा चम्मच, हरा धनिया कटा– सजाने के लिए।

यूं बनाएं: आलू छीलकर मनपसंद आकार में काट लें। तेल गरम करके कटे आलू गुलाबी तल लें। बचे तेल में जीरा, हींग, राई व करी पत्ते डालें। काजू व तिल डालकर चलाएं। मसाले डालकर 2 से 3 सेकंड चलाएं। गुड़ व इमली का पेस्ट डालें। तले आलू डालकर थोड़ी देर और चलाएं। किशमिश व हरा धनिया डालकर उतारें।

राजस्थान साहित्य अकादमी में जनार्दनराय नागर साहित्यिकी

व्यक्ति सिर्फ देह नहीं, कृतित्व के बूते पर पूरा इतिहास: दिव्यप्रभा

'व्यक्ति इस सांसारिक जीवन में जो कुछ करके जाता है, इतिहास उसे ही याद रखता है। व्यक्ति सिर्फ देह नहीं कि वह नष्ट हो जाए। व्यक्ति अपने कृतित्व के बूते पर पूरे इतिहास का निर्माण करता है और वही याद रखा जाता है।'

उक्त विचार राजस्थान साहित्य अकादमी सभागार में 16 जून को अकादमी के संस्थापक अध्यक्ष पंडित जर्नादनराय नागर की जयंती पर आयोजित संगोष्ठी में बोलते हुए राजस्थान विद्यापीठ विश्वविद्यालय की पूर्व कुलपति डॉ. दिव्यप्रभा नागर ने व्यक्त किए। उन्होंने जनुभाई के सामाजिक सरोकारों को याद करते हुये कहा कि एक व्यक्ति घर-परिवार से इतर कितना कुछ कर सकता है, यह जानने का ऐसे कार्यक्रम अवसर हैं। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता साहित्यकार-पत्रकार विष्णु शर्मा हितैषी ने कहा कि जनुभाई ने सामाजिक कार्यकर्ताओं को तैयार करने की जो मुहिम शुरू की उसके ही परिणाम रहे कि मेवाड़ जन में जागरण और लोकतंत्र मजबूत हुआ। उन्होंने कहा कि जनुभाई द्वारा स्थापित विद्यापीठ विश्वविद्यालय तो बहुत बाद में बना लेकिन जनुभाई अपने आप में एक समृद्ध विश्वविद्यालय और गुरूकुल थे। उनका साहित्यिक अवदान अविस्मरणीय है। नागर पर पत्रवाचन करते हुए शिक्षाविद् डॉ. हुसैनी बोहरा ने कहा कि साहित्य में अध्यात्म, दर्शन और पौराणिक संदर्भों के बीच से जन -मन की बात कैसे की जा सकती

है, यह नागर जी के लेखन को पढकर जाना जा सकता है। विशिष्ट अतिथि जनुभाई के पुत्र प्रफुल्ल नागर ने कहा कि एक पिता से आगे हमने घर में एक समाजसेवी के दर्शन किए और उनकी प्रेरणा के बूते पर उनके विचारों का विस्तार ही हमारा ध्येय है। कार्यक्रम के प्रारंभ में अकादमी सचिव बसंतसिंह सोलंकी ने स्वागत किया। अकादमी अध्यक्ष डॉ. दुलाराम सहारण ने अध्यक्षता करते हुए कहा कि यह संस्थानों का सौभाग्य होता है कि उनको जनुभाई जैसे संस्थापक मिलते हैं। संस्थान अपने पुरोधाओं को याद कर दायित्व का ही निर्वहन करता है। उन्होंने कहा कि अकादमी के माध्यम से साहित्य और साहित्यकारों की सेवा का जो अवसर मुझे मिला है, उसे मैं सौभाग्य मानते हुए निष्ठा के साथ पूरा करूंगा। आभार रामदयाल मेहरा ने व्यक्त किया। संगोष्ठी का संयोजन अकादमी सरस्वती सभा के सदस्य और शिक्षाविद् प्रो. हेमेंद्र चंडालिया ने किया। उन्होंने भी जनुभाई के शिक्षा और साहित्य में अवदान का जिक्र किया। कार्यक्रम में अकादमी सरस्वती सभा के सदस्य टीसी डामोर, डॉ. मंजु चतुर्वेदी, हितेश व्यास, ज्योतिपुंज, मधुमती के संपादक डॉ. दिनेश चारण, रीना मेनारिया, अशोक मंथन जैन, डॉ. कुंदन माली, चेतन औदिच्य, गौरीकांत शर्मा, विमला सिंघवी, दिव्यलक्ष्मी देथा, श्रेणीदान चारण, निर्मला शर्मा, करूणा दशोरा, श्रीरतन मोहता, हिम्मत सेठ, डॉ. भरत, पुरूषोत्तम शर्मा, सुजाता श्रीवास्तव आदि साहित्य प्रेमी मौजूद रहे।

रिपोर्ट: रामदयाल मेहरा

पाठक पीठ

'दवा से भी प्रभावी व्यायाम' डॉ. सुनील शर्मा का जुलाई अंक में छपा लेख काफी सारगर्भित था। योग-व्यायाम तो सदियों से हमारी दिनचर्या का हिस्सा रहे हैं, लेकिन भौतिकता की अंधी दौड़ में हम भटक गए। अब पुन: इस ओर लौटना एक अच्छा संकेत है।

मनीष गोयल, आरएएस अधिकारी

जुलाई का 'प्रत्यूष' अंक मिला। आनंद बनर्जी का आलेख 'रघु जैसा खुशनसीब हो हर हाथी' आलेख अच्छा लगा। जिस तरह से हाथियों और अन्य वन्य प्राणियों को लेकर आक्रामकता उपज रही है, वह मनुष्य की कायराना प्रवृत्ति के अलावा और कुछ भी नहीं। इनके संरक्षण के प्रयास ईमानदारी से होने चाहिए।

अलका भारद्वाज, सचिव, उदयपुर जिला सहकारी भूमि विकास बैंक लि.

गुफी पैंटल के देहावसान से हमने एक ऐसा फिल्म और रंगमंच का कलाकार खो दिया, जो महाभारत टीवी धारावाहिक में शकुनि के किरदार से हमेशा अमर रहेगा। रोहित बंसल का उनकी संघर्ष यात्रा को लेकर लिखा गया आलेख अच्छा लगा।

राजीव सेठिया, उद्योगपति

नये संसद भवन का निर्माण स्वतंत्र भारत की एक ऐतिहासिक घटना है। मनीष उपाध्याय का इस संबंध में बहुरंगी आलेख जानकारी से भरपूर था। इसके उद्घाटन को लेकर जिस तरह की राजनीति सामने आई, वह मेरी राय में अनावश्यक थी।

राजू भाई, उद्योगपति

इस माह आपके सितारे

पं. शोभालाल शर्मा

मेष

इस माह रूका हुआ पैसा प्राप्त हो सकेगा। लम्बित कार्य संपन्न होगा। गलत संगत नुकसानदेह होगी। छात्रों को अच्छे परिणाम मिलेंगे। नई नौकरी मिल सकती है, व्यापार के क्षेत्र में भी लाभ मिलेगा। स्वास्थ्य सामान्य, मधुमेह रोगी उपचार में लापरवाही न बरतें।

वृषभ

नए व्यापारिक समझौते होंगे। कार्यक्षेत्र में राजनीति संभव, आपको उकसाने के प्रयास होंगे। घर में सुख–शांति एवं आध्यात्मिक माहौल रहेगा। जुकाम–खांसी से परेशानी हो सकती है। राज्यकर्मियों को शुभ संकेत मिलेंगे एवं लाभ होगा।

मिथुन

परिवार के सदस्यों की चिंता रहेगी। घर में किसी सदस्य का स्वास्थ्य खराब होने की संभावना बनेगी, आर्थिक पक्ष मनोबल गिराने वाला होगा। उधार दिया पैसा समय पर नहीं मिलेगा। सरकारी कर्मचारियों के लिए यह माह आपाधापी भरा रहेगा। काम का बोझ तनाव देगा। नये विचारों का समावेश होगा।

कर्क

मां से वैचारिक मतभेद, स्वास्थ्य नरम, घर में तनाव रहेगा। इस माह आपको अधिक परिश्रम की आवश्यकता है। नौकरी पेशा जातकों का स्वभाव चिड़चिड़ा रहेगा, प्रतियोगिता में सफलताएं मिलेंगी, अस्थमा रोगियों को कष्ट, दाम्पत्य जीवन में नीरसता का अनुभव।

सिंह

उग्र स्वभाव के कारण रिश्तों में दरार आ सकती है। कोई बड़ा निर्णय लेने से पूर्व बड़ों का परामर्श अवश्य लें। व्यापार में मिश्रित परिणाम रहेंगे। सहकर्मियों के साथ अनबन, स्वास्थ्य ठीक रहेगा। जीवन साथी के प्रति उपेक्षा भाव न रखें।

कन्या

परिवार में संशय और गलतफहमी रहेगी, जिससे तनाव में रहेंगे। संतान सुख उत्तम, व्यापार में सही निर्णय बड़ा लाभ दिला सकता है, राजनीति में कार्यरत लोगों को शुभ संकेत मिलेंगे, कार्य क्षेत्र में प्रशंसा मिलेगी, आत्मविश्वास में बढ़ोतरी होगी, रीढ़ की हड्डी में जकड़न अनुभव, खाने का ध्यान रखें।

तुला

परिवार में सामंजस्य स्थापित करें। घर में मांगलिक कार्यक्रम संभव है, यात्रा के योग भी बनेंगे। व्यापारी वर्ग को व्यर्थ के कार्यों में दूर रहना होगा। शारीरिक रूप से कमजोर महसूस करेंगे। बुरे विचारों से अवसाद की स्थिति बन सकती है।

इस माह के पर्व/त्योहार

1 अगस्त	श्रावण शुक्ल पूर्णिमा	बाल गंगाधर तिलक जयंती
9 अगस्त	श्रावण कृष्ण नवमी	विश्व आदिवासी दिवस/ अगस्त क्रांति दिवस
15 अगस्त	श्रावण कृष्ण चतुर्दशी	स्वतंत्रता दिवस
19 अगस्त	श्रावण शुक्ल तृतीया	हरियाली तीज/स्वर्ण गौरी व्रत
21 अगस्त	श्रावण शुक्ल पंचमी	नाग पंचमी
23 अगस्त	श्रावण शुक्ल सप्तमी	गो. तुलसीदास जयंती
30 अगस्त	श्रावण शुक्ल चतुर्दशी	रक्षाबंधन

वृश्चिक

परिवार में नई खुशियां आएंगी व आप सभी के प्रति आशान्वित रहेंगे, कुछ नया करने की सोचेंगे। आपको ननिहाल पक्ष से खुशखबरी मिल सकती है। नए निवेश की योजना बनेगी तथा भूमि निवेश का लाभ मिलेगा। स्वास्थ्य की दृष्टि से यह माह अनुकूल नहीं हैं, कोई न कोई समस्या रहेगी।

धनु

पारिवारिक विवाद सुलझेगा, घर में मेहमानों का आना–जाना चलता रहेगा, सहभागिता से परिवार में प्रतिष्ठा बनेगी, व्यापार में मिश्रित फल मिलेगा एवं व्यापारिक खर्चे बढ़ेंगे, नौकरीशुदा जातक संतुष्ट रहेंगे, विद्यार्थी वर्ग में मेहनत के अनुरूप परिणाम प्राप्त न होने से निराशा रहेगी। स्वास्थ्य की दृष्टि से माह दूसरा सप्ताह परेशानी दे सकता है।

मकर

परिवार के रिश्तों में मजबूती आएगी। भाई–बहनों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। घर में सुख–शांति बनी रहेगी। व्यापारिक खर्चे बढ़ने से चिंता हो सकती है, मित्रों से सही तालमेल स्थापित करें। सरकारी नौकरी में समस्याएं आ सकती है। पूर्व की कोई बीमारी गंभीर रूप ले सकती है। चिकित्सकों के उचित परामर्श व सम्पर्क में रहे।

कुम्भ

स्वभाव में थोड़ी उग्रता आ सकती है, जिससे परिवार में नोंकझोंक संभव है, वार्तालाप में शब्दों का सही चयन करें, व्यापार में लाभ मिलेगा। अधूरे कार्य पूर्ण होंगे, महत्वपूर्ण लोगों से भेंट हो सकती है। जीवन साथी के साथ निराशा का भाव रहेगा। शारीरिक रूप से एकदम स्वस्थ रहेंगे, चर्म रोग से सावधानी बरतें।

मीन

घर में सुख शांति, यह माह अपेक्षाकृत अधिक व्ययशील होगा। पारिवारिक सदस्य आपके कार्यों से असंतुष्ट रहेंगे। अधिकतर समय सामाजिक कार्यों में खर्च होगा। दीर्घकालीन व्याधि से ग्रसित जातकों को विशेष सावधानी रखनी चाहिए। ठंडी चीजें खाने से परहेज करें।

प्रत्यूष समाचार

वेदांता का सीआईआई के साथ एमओयू

उदयपुर। वेदांता लिमिटेड ने वेदांता स्पार्क के तहत सीआईआई सीआईईएस के साथ एमओयू साइन किया है। सीआईआई सीआईईएस स्टार्टअप की पहचान और मूल्यांकन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा, जो वेदांता स्पार्क की सफलता को नई ऊंचाईयों तक ले जाने में सहायक होगा। कार्यक्रम में

कठिन स्क्रीनिंग और मूल्यांकन विधियों के माध्यम से शीर्ष स्टार्टअप की पहचान के लिए व्यापक चयन प्रक्रिया अपनाई जाएगी। स्पार्क का लक्ष्य कुल 100 अद्वितीय स्टार्टअप के साथ जुड़ना है, जो जटिल व्यावसायिक समस्याओं को हल करने के लिए नवाचार की प्रतिभा का उपयोग करते हैं।

डॉ. कुमावत को सरदार पटेल गौरव रत्न सम्मान

उदयपुर। समाज सेवा से लोकतंत्र की जड़ों को मजबूत करने में योगदान के लिए आलोक संस्थान के निदेशक डॉ प्रदीप कुमावत को स्टार रिकॉर्ड बुक ऑफ इंटरनेशनल ने सरदार पटेल गौरव रत्न सम्मान प्रदान किया है। यह सम्मान उन्हें स्टार रिकॉर्ड बुक ऑफ इंटरनेशनल के प्रतिनिधि ने प्रदान किया।

एमके जैन क्लासेज में टॉपर्स का सम्मान

उदयपुर। मेडिकल व इंजीनियरिंग की तैयारी कर रहे नीट व जेईई के टॉपर्स का एमके जैन क्लासेज में सम्मान हुआ। मुख्य अतिथि सामाजिक न्याय विभाग उदयपुर के उपनिदेशक मांधातासिंह राणावत थे। उन्होंने बच्चों को मुख्यमंत्री अनुप्रति योजना के बारे में बताया। निदेशक डॉ. एमके जैन ने संस्थान के परिणाम व कार्यक्रमों की जानकारी दी।

डॉ. गायत्री को बेस्ट पेपर प्रेजेंटेशन अवार्ड

उदयपुर। महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय के संघटक सामुदायिक व व्यावहारिक विज्ञान महाविद्यालय की मानव विकास एवं पारिवारिक अध्यक्ष विशेषज्ञ डॉ. गायत्री तिवारी को गत दिनों श्रीनगर में आयोजित जलवायु परिवर्तन और इसके प्रभाव विषय पर पांचवें अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में ऐन एक्सप्लोरेटरी स्टडी ऑन क्लाइमेट चेंज एंड मेनोपॉजल प्रोब्लेम्स पर प्रस्तुत रीसर्च पेपर के लिए बेस्ट पेपर प्रेजेंटेशन अवार्ड से सम्मानित किया गया।

राजानी और गखरेजा बने संरक्षक

उदयपुर। शहीद हेमू कालानी युवा मंच की गत दिनों बैठक सम्पन्न हुई। मंच के उपाध्यक्ष विक्की राजपाल ने बताया कि मंच अध्यक्ष राजेश खत्री की अनुशंसा पर संगठन कार्यकारिणी विस्तार के लिए चर्चा की गई जिसमें राजस्थान सिंधी अकादमी के पूर्व अध्यक्ष हरीश राजानी को युवा मंच का वरिष्ठ संरक्षक व संरक्षक हेमंत गखरेजा को बनाया गया। युवा मंच के महासचिव विनोद वाधवानी ने बताया कि बैठक में राजेश खत्री, विक्की राजपाल, स्वरूप तुल्सीजा, कैलाश जेतवानी, विजय वलेचा, विवेक कालरा, गौरव हसीजा मौजूद थे।

वार्षिक प्रतिभाखोज शिविर

उदयपुर। जिला क्रिकेट संघ के तत्वावधान में आयोजित वार्षिक प्रतिभा खोज शिविर 27 मई से 14 जून तक शिकारबाड़ी मैदान पर हुआ। शिविर में 114 बालक बालिकाओं ने भाग लिया। समापन समारोह में विशिष्ट अतिथि एसके खेतान और मुख्य अतिथि उदयपुर क्रिकेट एसोसिएशन के महेंद्र शर्मा, कोषाध्यक्ष मनोज चौधरी थे। कोच शबाना खान और शाहिद मकरानी को स्मृति चिह्न भेंट किए गए और राजस्थान वीमन टीम में खेलने के लिए रीजा शेख को भी सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में यूडीसीए के वाइस प्रेसिडेंट अनीश इकबाल, हर्षवर्धन जैन, मोहम्मद शाहिद, यशवंत पालीवाल, राजेन्द्र जैन, आर चंद्रा ने भाग लिया।

माया अध्यक्ष व कौशल्या सचिव

उदयपुर। महिला समाज सोसायटी के चुनाव ओटीसी अंबामाता में हुए। चुनाव अधिकारी नीता मेहता ने बताया कि अध्यक्ष माया कुंभट, सचिव कौशल्या रूंगटा और कोषाध्यक्ष स्वाति भार्गव निर्वाचित की गई। उपाध्यक्ष सुंदरी छितवानी, सह सचिव चंद्रकांता मेहता व सह कोषाध्यक्ष बेला कारवां मनोनीत की गई। इस अवसर पर सदस्याओं ने संकल्प लिया कि वे सिंगल यूज प्लास्टिक का कम से कम उपयोग करेंगी और कपड़े के थैलों व अन्य विकल्पों का ज्यादा उपयोग करेंगी।

रश्मि को नारी रत्न सम्मान

उदयपुर। इनरव्हील क्लब ऑफ उदयपुर ने समाज सेवा के उत्कर्ष कार्य करने पर क्लब अध्यक्ष रश्मि पगारिया को नारी रत्न सेवा सम्मान प्रदान किया। सचिव सीमा चंपावत ने बताया कि पीडीसी चंद्रप्रभा मोदी, एडवाइजर्स शीला तलेसरा, पुष्पा कोठारी, अंजू माहेश्वरी ने यह सम्मान पिछले दो सालों में महिला सशक्तिकरण पर 400 से अधिक सेवा कार्य करने के लिए पगारिया को दिया।

लायंस क्लब लेकसिटी पदस्थापना समारोह

उदयपुर। लायंस क्लब लेकसिटी का 44वां स्थापना समारोह सुखाड़िया विश्वविद्यालय सभागार में हुआ। शुभारंभ मुख्य अतिथि डॉ. लक्ष्यराज सिंह मेवाड़ तथा विशिष्ट अतिथि पीएमजेएफ लायन कुलभूषण मित्तल ने संस्थापक मेल्विन जोंस के चित्र पर माल्यार्पण से किया। निवर्तमान कार्यकारिणी अध्यक्ष लायन केवी रमेश ने मुख्य अतिथि को मेवाड़ी पाग तथा उपरणा धारण करवाया। सचिव लायन दीपक वाही ने वर्ष पर्यंत की सेवा गतिविधियों का प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। मुख्य अतिथि डॉ. लक्ष्यराज सिंह मेवाड़ तथा विशिष्ट अतिथि एमजेफ कुलभूषण मित्तल ने विगत वर्ष में सेवा कार्यों में अपना अमूल्य योगदान देने वाले सभी लॉयन सदस्यों को स्मृति चिन्ह प्रदान कर सम्मानित किया। मुख्य पद स्थापना अधिकारी मित्तल ने सत्र 2023-24 की कार्यकारिणी के अध्यक्ष लायन डॉ दीपेन्द्र सिंह चौहान, सचिव लायन राजमल ओसवाल, कोषाध्यक्ष लायन राजेन्द्र चित्तौड़ा तथा समस्त कार्यकारिणी को शपथ ग्रहण कराई। इस अवसर पर लायन डॉ सिम्मी सिंह द्वारा संपादित वार्षिक न्यूज़ बुलेटिन सेवा मंजूषा का विमोचन भी किया गया। लायन सुजान सिंह को वर्ष 2022-23 का लायन ऑफ द ईयर का खिताब प्रदान किया गया। कार्यक्रम का संचालन लायन माया सिरोया ने तथा धन्यवाद ज्ञापन सचिव लायन राजमल ओसवाल ने किया। इस अवसर पर पास डिस्ट्रिक्ट गवर्नर लायन अनिल नाहर, रीजन चेयरमैन लायन केजी मूंदड़ा, जोन चेयरमैन लायन प्रवीण आंचलिया लॉयन, डॉ. बी एस बम लॉयन, डॉ बी एल दलाल, लायन वी.सी व्यास, लायन दीपक हिंगड़, आर्ट्स कॉलेज के डीन प्रो.सी.आर सुथार, कॉमर्स कॉलेज के डीन प्रो. पी.के सिंह, डीन पी.जी प्रो. नीरज शर्मा, एन.एस राठौड़, प्रो. अतुल त्यागी, लायन आर एस सोजतिया, लायन शैलेंद्र लोढ़ा, लायन वसीम खान, लायन नितिन शुक्ला, के.के. शर्मा, सुधीर पोद्दार , लाल चौधरी, मोहनलाल वैगरवाल, गोपाल प्रजापत, पुष्कर शर्मा, भंवरलाल सालवी आदि उपस्थित रहे।

डॉ. अरविंदर को बेस्ट कॉस्मेटिक डर्मेटोलॉजिस्ट व कोच का अवार्ड

उदयपुर। अर्थ ग्रुप के सीइओ तथा वर्ल्ड रिकॉर्ड होल्डर डॉ. अरविंदर सिंह को जयपुर में आयोजित एक समारोह में बेस्ट कॉस्मेटिक डर्मेटोलॉजिस्ट व कोच अवार्ड से सम्मानित किया गया। यह लंदन में इंटरनेशनल बोर्ड ऑफ कॉस्मेटिक डर्मेटोलॉजी की सेवाएं प्रदान करने के लिए दिया गया। यह बिग इंपेक्ट अवार्ड मशहूर फिल्म अभिनेत्री कीर्ति कुलहरी द्वारा प्राप्त हुआ। अर्थ स्किन व डॉ. अरविंदर सिंह को स्किन, कॉस्मेटोलॉजी व मेडिकल लेजर के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य हेतु विभिन्न राष्ट्रीय व राज्य स्तरीय सम्मान प्राप्त हो चुके हैं। इस मौके पर डॉ. सिंह ने कहा कि अर्थ ग्रुप ने उच्च क्वालिटी व प्रतिबद्धता हमेशा सिद्ध की है और वे उत्कृष्ट सेवाएं देने के लिए संकल्पित हैं।

डॉक्टर्स डे पर सम्मान

उदयपुर। डॉक्टर्स डे पर इंडियन मेडिकल एसोसिएशन एवं शांतिराज हॉस्पिटल व अन्य सवास्थ्य संस्थाओं ने सम्मिलित रूप से डॉक्टर्स को सम्मानित किया। शांतिराज हॉस्पिटल के निदेशक नरेश शर्मा ने बताया कि चिकित्सा सेवा के क्षेत्र में अपनी बेहतर सेवा दे रहे वरिष्ठ चिकित्सक डी.पी. सिंह तथा सर्जिकल स्पेशलिस्ट डॉक्टर सपन जैन सहित 450 डॉक्टरों का सम्मान किया गया। इंडियन मेडिकल एसोसिएशन के अध्यक्ष आनंद गुप्ता ने समारोह में अपने सम्बोधन में कहा कि चिकित्सा एक ईश्वरीय कार्य है इसे संपन्न करने वाला डॉक्टर ईश्वर तुल्य है। किसी भी आहत को राहत पहुंचाने का कार्य इंसानियत की सबसे बड़ी सेवा है।

डॉ. अनुष्का लॉ कॉलेज को एक्सीलेंस अवॉर्ड

उदयपुर। जयपुर में हुए एजुकेशन कॉन्क्लेव-23 में डॉ. अनुष्का लॉ कॉलेज को वर्ष 2022-23 में किए गए विभिन्न सामाजिक कार्यों एवं शिक्षा के क्षेत्र में अपने अमूल्य योगदान के लिए एक्सीलेंस अवॉर्ड से सम्मानित किया गया। समारोह के विशिष्ठ अतिथि शिक्षा मंत्री बीडी कल्ला ने संस्थान के संस्थापक डॉ. एसएस सुराणा को यह सम्मान प्रदान किया। संस्थान के सचिव राजीव सुराणा ने बताया कि डॉ अनुष्का लॉ कॉलेज पिछले दो दशक से उदयपुर में अपनी निरंतर सेवाएं दे रहा है।

सिंघवी 'वृक्षम मित्र' से सम्मानित

उदयपुर। उपमहापौर पारस सिंघवी को वृक्षम् अमृतम् सेवा संस्थान उदयपुर ने वृक्षम् मित्र अलंकरण से सम्मानित किया। अध्यक्ष गोपेश शर्मा ने बताया कि इस अवसर पर नरेश पूर्बिया, रहाड़ा फाउंडेशन की संस्थापिका अर्चना सिंह, वृक्षम् अमृतम् के उपसंरक्षक कृष्ण कांत पानेरी आदि उपस्थित थे।

भाणावत फोर्टी संभागीय अध्यक्ष

उदयपुर। फेडरेशन ऑफ राजस्थान ट्रेड एण्ड इंडस्ट्री फोर्टी उदयपुर के सातवें स्थापना दिवस पर मनीष भाणावत को संभागीय अध्यक्ष नियुक्त किया गया। पूर्व अध्यक्ष निशांत शर्मा ने बताया कि फोर्टी उदयपुर की बैठक में भाणावत का नाम प्रस्तावित किया गया, जिसे ब्रांच कमेटी के चेयरमैन प्रवीण सुथार ने सहमति देकर नियुक्ति दी।

समुत्कर्ष व्याख्यानमाला

उदयपुर। आध्यात्मिक, सांस्कृतिक, भौतिक तथा अन्य सभी दृष्टियों से समाज का उत्थान हमारे संतों-महापुरूषों द्वारा ही हुआ है। संतों ने ही परस्पर एक दूसरे को उन्नत करने का भाव तथा मानव को महामना बनाने वाले धर्म, संस्कृति के सिद्धान्तों को समाज में स्थापित किया। ये बात राष्ट्रवादी विचारक एवं इतिहासकार ओमप्रकाश ने पंडित दीनदयाल उपाध्याय सभागार में समुत्कर्ष व्याख्यान माला में कहीं। समुत्कर्ष समिति की ओर से अमृत महोत्सव के अन्तर्गत मासिक समुत्कर्ष विचार गोष्ठी के 117 माह पूरे होने पर यह आयोजन हुआ। इस अवसर अतिथियों ने समुत्कर्ष पत्रिका के एक सौ सत्ताइसवें अंक का विमोचन किया। अध्यक्षता समिति अध्यक्ष संजय कोठारी ने की। समिति सचिव विनोद चपलोत,संपादक वैद्य रामेश्वर प्रसाद शर्मा, उपसंपादक गोविन्द शर्मा अतिथि रहे। अतिथियों का स्वागत सचिव विनोद चपलोत एवं संचालन सत्यप्रिय मैत्री ने किया।

दूदा पटेल की मूर्ति का अनावरण

उदयपुर। समीपवर्ती ग्राम शोभागपुरा में गत दिनों समाज सेवक स्व. दूदा जी पटेल की मूर्ति का अनावरण समारोह पूर्वक हुआ। जिसमें उदयपुर संभाग से समाज के गणमान्य नागरिक शामिल हुए। इस अवसर पर अखिल भारतीय डांगी संघ के राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष डॉ. मुकेश कुमार डांगी, दिल्ली प्रदेशाध्यक्ष शिवनंदन डांगी, समाज के अध्यक्ष गोपाल पटेल, राष्ट्रीय अध्यक्ष वरदीचंद डांगी, जिलाध्यक्ष विष्णु पटेल, रूपलाल पटेल, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक रोशन पटेल, डॉ. प्रकाश पटेल, वल्लभनगर विधायक प्रीति शक्तावत, उदयपुर डेयरी की पूर्व चेयरमैन डॉ. गीता पटेल, दल्लीचंद पटेल, मोतीलाल डांगी, अखिल भारतीय संघ के प्रदेश उपाध्यक्ष कैलाश डांगी, मां आंजणा युवा संगठन के प्रदेशाध्यक्ष प्रकाश डांगी, लालूराम डांगी, शंकर डांगी, कुका राम डांगी, नारायण डांगी, कमल डांगी, खेमराज डांगी, हिरालाल डांगी, प्रेमचंद पटेल, अंबालाल डांगी, राजेश डांगी, अखिल भारतीय डांगी संघ की महिला अध्यक्ष मांगी डांगी आदि मौजूद थे।

लंच रूम भवन का लोकार्पण

उदयपुर। प्रतापनगर थाने में नए लंच रूम भवन का लोकार्पण मेवाड़ पॉलिटेक्स लिमिटेड के हस्तीमल बापना ट्रस्ट की ओर से हुआ। उद्घाटन कंपनी के मैनेजिंग डायरेक्टर संदीप बापना, डायरेक्टर विनोद बापना एवं सीआई दर्शनसिंह ने किया। कार्यक्रम में पंकज जोशी, सुनील जैन, राजेश सुथार आदि मौजूद थे।

होटल एनराइज बाय सयाजी का उद्घाटन

उदयपुर। हॉस्पिटेलिटी इंडस्ट्री के ब्रांड, सयाजी होटल्स की होटल एनराइज बाय सयाजी का उद्घाटन झाड़ोल रोड पर किया गया। सयाजी होटल्स के मैनेजिंग डायरेक्टर रऊफ धनानी ने बताया कि 'एनराइज बाय सयाजी' के 50 सुसज्जित कमरे मेहमानों को अद्भुत नजारे, शानदार सूर्यास्त और शहर के शोरगुल से दूर राहत देते हैं। होटल में विशाल लॉन 25000 वर्गफीट और 45000 वर्गफीट में और इसका शानदार बॉल-रूम 5000 वर्गफीट में फैला हुआ है। होटल में एक मल्टी-कुज़ीन रेस्तरां है जो इस तरह के जायके की सुविधा देता है।

बोहरा ने किया सूचना केन्द्र का अवलोकन

उदयपुर। धरोहर संरक्षण प्राधिकरण के मुख्य कार्यकारी अधिकारी तथा राजस्थान स्टेट इंस्टीट्यूट ऑफ पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन के एडिशनल डायरेक्टर जनरल आईएएस टीकमचंद बोहरा ने उदयपुर सूचना केन्द्र का दौरा कर सुविधाओं और विकास कार्यों के बारे में जानकारी ली। संयुक्त निदेशक जनसंपर्क डॉ. कमलेश शर्मा ने उनका स्वागत करते हुए वाचनालय एवं पुस्तकालय का अवलोकन कराया। बोहरा ने व्यवस्थाओं की प्रशंसा करते हुए कहा कि शांत और प्राकृतिक वातावरण में विद्यार्थियों को अध्ययन की सुविधा उपलब्ध कराना निश्चित रूप से सराहनीय कार्य है। उन्होंने सूचना केंद्र परिसर में ही रंगमंच के जीर्णोद्धार का भी अवलोकन किया। बोहरा ने इस मौके पर सूचना केंद्र पुस्तकालय के लिए अपनी पुस्तक 'रज भारत की चंदन' की प्रतियां भेंट की।

अर्थ की डॉ. दीपा सिंह सम्मानित

उदयपुर। अर्थ डायग्नोसिस एंड रिसर्च सेंटर की डॉ. दीपा सिंह को सौंदर्य व क्लिनिकल कॉस्मेटोलॉजी के क्षेत्र में जयपुर में सम्पन्न समारोह में फिल्म अभिनेता सोनू सूद ने बेस्ट मेडिकल लेजर व क्लिनिकल कॉस्मेटोलॉजिस्ट के अवॉर्ड से सम्मानित किया। अर्थ स्किन सेंटर लेजर हेयर रिमूवल, पिगमेंटेशन, मेलासमा, मुंहासे, फेस लिफ्ट आदि स्किन व क्लिनिकल कॉस्मेटोलॉजी के लिए विख्यात है। डॉ. दीपा सिंह उदयपुर में अर्थ स्किन तथा जयपुर में अर्थ मरूधर स्किन एंड कॉस्मेटिक की निदेशक हैं। डॉ. दीपा पहले भी वर्ल्ड रिकॉर्ड कायम कर चुकी है और उन्हें वर्ल्ड बुक ऑफ रिकॉर्ड लंदन में भी शामिल किया गया है। डॉ. दीपा को गवर्नर ऑफ महाराष्ट्र ने लेजर क्वीन तथा एक्सीलेंस की उपाधि से भी नवाजा है।

दीपक मेनारिया को प्रतिष्ठा पुरस्कार

उदयपुर। वर्धी वेलनेस फाउंडेशन, लखनऊ द्वारा स्थानीय लघुकथाकार एवं पत्रकार दीपक मेनारिया 'दीपू' को राष्ट्रीय प्रतिष्ठा पुरस्कार 2023 प्रदान किया गया है। फाउंडेशन की संस्थापक मानसी बाजपेई एवं सह संस्थापक सौम्या बाजपेई ने बताया कि 'दीपू' को उनके सामाजिक कार्यों और साहित्य के क्षेत्र में उपलब्धियों पर सम्मानित किया गया है।

सीपीएस ने ओलम्पियाड में मारी बाजी

उदयपुर। न्यू भूपालपुरा स्थित सेंट्रल पब्लिक सीनियर सेकंडरी स्कूल के विद्यार्थियों ने राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सर्वश्रेष्ठ परिणाम लाकर विद्यालय का गौरव बढ़ाया है। साइंस ओलम्पियाड फाउंडेशन, नई दिल्ली की ओर से नेशनल साइंस ओलंपियाड, इंटरनेशनल मैथमेटिक्स ओलंपियाड, इंटरनेशनल इंग्लिश ओलंपियाड, इंटरनेशनल कॉमर्स ओलंपियाड व इंटरनेशनल सोशल साइंस ओलंपियाड में विद्यार्थियों ने उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। नेशनल साइंस ओलम्पियाड अंतरराष्ट्रीय रैंक में दिव्यांशी पूर्बिया, गीत लोढ़ा प्रथम स्थान पर व ध्रुवम सोमपुरा तृतीय स्थान पर रहे। इंटरनेशनल मैथमेटिक्स ओलंपियाड में ध्रुवम सोमपुरा प्रथम, ध्यान वी आर, अध्ययन रांका द्वितीय और मिनी साहू, निहारिका ईनानी तृतीय रहे।

मिलेगी: कुपोषण से मुक्ति

उदयपुर। आदिवासी बच्चों को कुपोषण से मुक्ति दिलाने के लिए संभागीय आयुक्त राजेन्द्र भट्ट की पहल पर नवाचार किया जा रहा है। इसके तहत बच्चों को भामाशाहों के सहयोग से सुपर फूड सहजन के गुणों से युक्त आयुर्वेदिक हेल्थ ड्रिंक मोरविटा उपलब्ध कराया जाएगा। गत दिनों संभागीय आयुक्त भट्ट और तत्कालीन जिला कलक्टर ताराचंद मीणा ने नाई गांव में मेवाड़ पॉलीटेक्स ग्रुप के परिसर में इस नवाचार का शुभारंभ किया। अब जिले के चयनित 800 बच्चों को यह हेल्थ ड्रिंक नि:शुल्क उपलब्ध कराया जाएगा। इस मौके पर जनरल मैनेजर पंकज जोशी ने बताया कि ग्रुप की ओर से पांच लाख रूपये की लागत से मोरविटा हेल्थ ड्रिंक उपलब्ध कराया जा रहा है। प्रारंभ में ग्रुप के जनरल मैनेजर पंकज जोशी, चेयरमैन बीएच बाफना, डायरेक्टर सौरभ बाफना, सुधीर दुग्गड़ आदि ने ग्रुप के सामाजिक सरोकार के कार्यों से अवगत कराया।

चित्तौड़ा जयपुर में सम्मानित

उदयपुर। सूक्ष्मकृति निर्माणकर्ता चन्द्रप्रकाश चित्तौड़ा का सबसे छोटी पतंग बनाने पर गत दिनों इन्फलुएंसर बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स में नाम दर्ज किया गया। इस सम्बंध में जयपुर में आयोजित एक समारोह में उन्हें मुख्य अतिथि कलाविद् हेमजीत मालू, जयेश भट्ट और महिमा जैन ने सम्मानित किया। कार्यक्रम का संचालन अंकित खण्डेलवाल ने किया।

लोकसेवा संस्थान सम्मान समारोह

उदयपुर। गत दिनों एसएमएस लोक सेवा संस्थान की ओर से विभिन्न क्षेत्रों में सम्मानित किया गया। संस्थापक कुंवर विजय सिंह कच्छावा ने बताया कि मुख्य अतिथि शिवसिंह कच्छावा थे। अध्यक्षता डॉ. ओ.पी महात्मा ने की। विशिष्ट अतिथि विष्णु शर्मा हितैषी थे। कथा मर्मज्ञ सत्य नारायण चौबीसा, एडवोकेट त्रिभुवन सिंह चौहान, निशा राजपूत, उमेश शर्मा, घड़ीसाज विजय सिंह, लक्ष्मणसिंह सोलंकी, विधि सोनी, मंजू राजपूत को सम्मानित किया गया। संयोजन एडवोकेट कुंवर शूरवीर सिंह कच्छावा ने किया।

उदयपुर। राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत का बलीचा स्थित न्यू कृषि मंडी यार्ड में आगमन पर मोहम्मद नदीम खान ने उन्हें गहलोत दम्पत्ती का हस्त निर्मित चित्र भेंट किया। इस अवसर पर राजस्व मंत्री रामलाल जाट भी मौजूद थे।

डॉ. पुरोहित अध्यक्ष, कनूजा सचिव

उदयपुर। रोटरी क्लब उदय की नवगठित कार्यकारिणी के अध्यक्ष डॉ. विजय पुरोहित एवं सचिव मनप्रीत सिंह कनूजा मनोनीत किए गए हैं।

प्रत्यूष

समाज में समरसता और भातृत्व भाव की पोषक पत्रिका

प्रत्यूष (बहुरंगी हिन्दी मासिक)

के आज ही सदस्य बनें। मात्र 600 रुपए वार्षिक।

पता: 2, रक्षाबंधन, मेहतों का पाड़ा, धानमण्डी, उदयपुर (राज.) 313 001

संवेदना/श्रद्धांजलि

उदयपुर। प्रमुख उद्यमी एवं समाजसेवी श्री जसवंतसिंह जी भंडारी का 23 जून को देहावसान हो गया। वे अपने पीछे शोकाकुल धर्मपत्नी श्रीमती सुधा भंडारी, पुत्र विनय व तुषार भंडारी, बहनों, भाई-भतीजों, पौत्रों का समृद्ध व विशाल परिवार छोड़ गए हैं।

उदयपुर। श्री कृष्णा साहु का 24 जून को युवावस्था में सड़क हादसे में आकस्मिक निधन हो गया। वे अपने पीछे शोक विह्वल दादा-दादी श्री लालूरामजी-दुर्गादेवी, माता-पिता कैलाश साहु (पूर्व पार्षद)-मंजू देवी, भाई-बहनों सहित विशाल परिवार छोड़ गए हैं।

उदयपुर। हिंदुस्तान जिंक से सेवानिवृत्त श्रीमती मधु भंडारी का 1 जुलाई को निधन हो गया। वे अपने पीछे शोकाकुल पति श्री महेन्द्र भंडारी, पुत्रियां दीपिका, रूचि, दोहित्र ध्रुव, दोहित्री अदविका सहित भाई-भतीजों का संपन्न परिवार छोड़ गई हैं।

उदयपुर। प्रमुख समाजसेवी एवं प्रादेशिक अग्रवाल महासभा के पूर्व अध्यक्ष श्री चंचलकुमार जी गोयल (मोर) का 1 जुलाई को स्वर्गवास हो गया। वे अपने पीछे व्यथित हृदय पुत्र प्रेम गोयल, पुत्रियां मंजू देवी, कुसुमदेवी, वंदना देवी तथा पौत्र-पौत्रियों, भाई-भतीजों का वृहद एवं संपन्न परिवार छोड़ गए हैं।

उदयपुर। जनस्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग के पूर्व अति. मुख्य अभियंता श्री कृष्णचन्द्र जी श्रीमाली का 3 जुलाई को देहावसान हो गया। वे अपने पीछे शोकाकुल धर्मपत्नी श्रीमती विमला देवी, पुत्रियां नीतू त्रिवेदी, रूचिता व्यास, दोहित्र ऋषभ, मनन व कविश तथा भाई-भतीजों का वृहद परिवार छोड़ गए हैं।

उदयपुर। श्री नंदलाल जी नारा का 4 जुलाई को देहावसान हो गया। वे अपने पीछे शोक विह्वल धर्मपत्नी श्रीमती चन्द्रकला देवी, पुत्र उमेश नारा, पुत्रियां पुष्पा धामेचा, सरिता नाचानी, प्रीति सुखवानी, सरिता बजाज व सलोनी खत्री सहित पौत्र-पौत्रियों, दोहित्र-दोहित्रियों का भरापूरा परिवार छोड़ गए हैं।

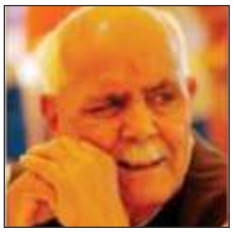

बांसवाड़ा। समाजसेवी श्री शंकरलाल जी अग्रवाल का 4 जुलाई को देवलोकगमन हो गया। वे अपने पीछे पुत्र सर्व श्री गोपीराम अग्रवाल, विनोद अग्रवाल, परमेश्वर अग्रवाल व विश्वंभर जी अग्रवाल सहित भरापूरा परिवार छोड़ गए हैं।

उदयपुर। मुस्लिम मुसाफिर खाना के प्रबंधक जनाब जाकिर शेख का 9 जुलाई को इंतेकाल हो गया। वे अपने पीछे गमज़दा पत्नी शबाना शेख, पुत्र अलतमस, पुत्री शिफा सहित भाई-भतीजों का समृद्ध परिवार छोड़ गए हैं।

उदयपुर। श्री चन्द्रसेन जी अग्रवाल (मित्तल) का 8 जुलाई को देहावसान हो गया। वे 86 वर्ष के थे। वे अपने पीछे व्यथित हृदय पुत्र वीरेन्द्र मित्तल, पुत्रियां डॉ. सुमन, डॉ. सीमा, पौत्र-पौत्रियों व दोहित्र-दोहित्रियों का भरापूरा परिवार छोड़ गए हैं।

उदयपुर। श्रीमती प्रेमदेवी जी बाबेल धर्मपत्नी स्व. रूपलाल जी बाबेल का 10 जुलाई को आकस्मिक निधन हो गया। वे अपने पीछे शोक संतप्त पुत्र जितेन्द्र कुमार, पुत्रियां श्रीमती मीरा बापना, शांति हिंगड़, मंजू नाहर, निर्मला तलेसरा, सुशीला पामेचा, मनभर हिंगड़ व एकता बड़ारा सहित पौत्र-पौत्री, दोहित्र-दोहित्रियों का वृहद व संपन्न परिवार छोड़ गई हैं।

उदयपुर। श्रीमती मोहनीबाई साहू (डूंगरिया) धर्मपत्नी स्व. नारायणलाल जी का 6 जुलाई को देहावसान हो गया। वे अपने पीछे शोकाकुल पुत्र शिवशंकर, शांतिलाल, पुत्री श्रीमती दुर्गादेवी असारमा, पौत्र-पौत्री, दोहित्र व भाई-भतीजों का वृहद व संपन्न परिवार छोड़ गई हैं।

MIRANDA SR. SEC. SCHOOL
An English Medium Co-educational School
ADMISSIONS OPEN
FOR PLAYGROUP TO IX & XI
2023-24
SMART CITY
Honorable Education Minister Of Rajasthan - MR. B.D. KALLA
Felicitated MR. DILIP SINGH YADAV (Director - Miranda Sr. Sec. School)
• Experienced & Quality Teachers
• Focus On Communication Skills
• 24x7 CCTV Surveillance
• Safe Drinking Water
• Holistic Development of Students
• Scholarship To Meritorious Students
Miranda
Sr Secondary School
Enroll Now
www.mirandaschool.org
Hiran Magri, Sec.-5, Udaipur (Raj.)
9414546333

ADMISSION OPEN 2023-24

SANGAM UNIVERSITY
BHILWARA

SANGAM UNIVERSITY
Where Aspirations meets Opportunity
Accredited with NAAC

UGC Recognized (2)F | NAAC Accredited | IIRF RANKING 39th in India 4th in Rajasthan | NCC | NSS | Rover-Ranger | FWA University with Strong Industry Connect

राजस्थान का सबसे प्रगतिशील शैक्षणिक संस्थान

Mohit Sharma
Attended Republic Day Camp (RDC), Delhi 26 Jan 2023

Convocation Ceremony

Hackathon All India Winner

200+ Expert Faculty

Tulsi Chhipa
Gold in All India Inter University, Drop-roball Tournament

International Association

MoU with LSC India

Lok Sabha & Rajya Sabha Visit of Law Students

100+ उद्योग उन्मुख कार्यक्रम में से चुनें

ENGINEERING
B.Tech
CS | AI & Data Science | Civil | Mechanical | Electrical | Industrial | Mining
M.Tech
CS | Mechanical | Electrical | Civil | Mining | Remote Sensing
Polytechnic Diploma
BCA
MCA
PGDCA

FIRE & SAFETY
Diploma
Bachelor Degree
PG Diploma

MANAGEMENT
B.Com (Hons.)
BBA (Hons.)
BBA- Logistics | Retail Mgmt.
MBA- 1Yr/ 2Yr.- Finance | Marketing | Human Resource | Hospital Administration | Agri Business | Business Analytics

ARTS & HUMANITIES
BA | MA- Hindi | English | Education | History | Political Science | Psychology | Drawing & Painting | Dance | Music | Geography
MSW

AGRICULTURE
B.Sc. (Agri.) Hons. | ABM

APPLIED SCIENCE
B.Sc. (Hons.)
Chemistry | Botany | Zoology | Physics | Mathematics | Geology
M.Sc.
Chemistry | Physics | Maths | Zoology | Botany | Geology | Geoinformatics | Geophysics | Environmental Science

LEGAL STUDIES
Approved by BAR COUNCIL OF INDIA
BA,LL.B.
LL.B. (Hindi & English)
LL.M. Criminal Law | Corporate Law | Constitution & Administration Law

PHARMACY
Approved by PHARMACY COUNCIL OF INDIA
B.Pharma
D.Pharma

VOCATIONAL STUDIES
B.Voc.
Graphics | Interior | Fashion | Digital Marketing

LIBRARY SCIENCE
D.Lib
B.Lib
M.Lib

RESEARCH
Ph.D (All Streams)
Ph.D (Part-Time)

सर्वाधिक चयन सत्र 2022-23

SCHOLARSHIPS AVAIL UPTO 100%

A loan that matches your educational ambitions
Avail EDUCATIONAL LOAN
AXIS BANK

Campus - Nh-79, Bhilwara Chittor By-Pass, Bhilwara, Rajasthan- 311001

एडमिशन ऑफिस
यूनिवर्सिटी कैंपस 7891050000 | हर्ष पैलेस भीलवाड़ा 9001097344 | गोल प्याऊ भीलवाड़ा 9001097346 | चित्तौड़गढ़ ऑफिस 9001097364 | गंगापुर ऑफिस 9799633517 | शाहपुरा ऑफिस 9461740508 | प्रतापगढ़ ऑफिस 9784833744

Janardan Rai Nagar Rajasthan Vidyapeeth (Deemed To Be University)

जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ (डीम्ड टू बी विश्वविद्यालय)

Pratap Nagar, Udaipur – 313001 (Raj.) Ph. & Fax : 0294-2492440, Email: admissions@jrnrvu.edu.in

समस्त पाठ्यक्रम विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (UGC) से मान्यता प्राप्त

Manikyalal Verma Shramjeevi College

Faculty of Social Sciences and Humanities : Mobile No. : 9829160606, 9460826362, 9413752492

B.A. : English, Hindi, Sanskrit, History, Sociology, Geography, Economics, Political Science, Public Administration, Environmental Science, Jyotish

M.A. : English, Hindi, Sanskrit, History, Sociology, Geography, Economics, Political Science

Diploma Course : Diploma in Panchgavya, Diploma in Acupressure, P.G. Diploma in GIS & Remote Sensing, Bachelor of Journalism and Mass Communication **Certificate Course** : Spoken English, Proficiency in English and Communication Skills, Culture of Rajasthan, Research Methods and Data Analyst, Human Rights, Acupressure, Sanitation and Modern Society, Health Awareness

Faculty of Commerce : Mobile No. : 9460492196, 9460372183, 9461180053

B.Com., B.B.A., M.Com. (Accounting, Business Administration), Master of NGO Management, P.G. Diploma in Training & Development Certificate Course: Plastic Processing and Manufacturing Skills, Tally ERP-9.0, Goods and Service Tax (GST)

Faculty of Science : Ph. 7852803736, 9828072488

B.Sc. : Physics, Mathematics, Chemistry, Statistics, Computer Science, Botany, Zoology, Biotechnology, Environmental Science, Geology
M.Sc. Chemistry (Inorganic, Organic, Physical, Industrial)
M.Sc. : Mathematics, Physics, Botany, Zoology, Environmental Science, Statistics, Bioinformatics, Biotechnology, Computer science

Department of Law - 9414343363, 9887214600

B.A.LL.B. (5 Year Integrated Course), LL.B. (3 Year Degree Course), LL.M. (2 Years), Ph.D., PG Diploma (1 Year Course) in Labour Law (PGDLL). Cyber Law (PGDCL), Law & Forensic Science (PGDLFS). Accountancy & Taxation (PGDLTA) and Intellectual Property Laws (PGDIPL). LLM 2 years (Criminal and Business Law)
Diploma in Criminal Psychology

Faculty of Computer Science and Information Technology Ph. 2494227, 2494217, 9414737125

B.C.A., M.C.A., M.Sc.(CS), B.Sc. in Data Science, P.G.D.C.A., B.Voc in Software Development, DCA (Diploma in Computer Applications).

Udaipur School of Social Work - Ph. 8118806319, 9829445889

Master of Social Work (MSW), PG Diploma in HRM, PG Diploma in CSR
Master of Social Work (MSW - Self Finance Evening Batch)

School of Agricultural Sciences, Dabok - 9460728763

B.Sc. (Hons.) Agriculture, B.Sc. Horticulture, B.Tech. Food Technology,
M.Sc. in Agronomy, Horticulture, Plant Pathology and Genetics & Plant Breeding

Faculty of Management Studies (FMS)

Ph. : 0294-2490632, 9460322351, 9414161889, 9636803729, 9782049628, 9001556306, 9928544749

B.B.A, M.B.A (H.R / Marketing / Finance / Production & Operation Management / I.B / I.T / Tourism and Travel / Retail Management / Agri-Business / Family Business Management), M.H.R.M.

Manikyalal Verma Shramjeevi Evening College

Mob. - 9414291078, 8209630249

B.A, BA (Additional), B.Lib MA (All Subjects), MA (Music)MA Education, M.Com, M.Sc (Chemistry/Botany /Zoology/Physics/Maths), MA/M.Sc (Psychology), M.Lib PG Diploma in Guidance counseling, PG Diploma in Mental Health Counselling, B.Ed in Special Education (ID), B.Ed Special Education (HI) D.Ed. Special Education (IDD) D.Ed. Special Education (HI), D.Ed. Special Education (VI), (BA/B.Com/B.Sc Integrated BEd special Education Eligibility 10+2), DCBR (Diploma in Community Based Rehabilitation), DISLI (Diploma in Indian sign language interpretation (subject to RCI approval), D.Lib, Diploma in Music

Note :

For more information about the admission in various courses like minimum percentage, fee structure etc. please go through our website : www.jrnrvu.edu.in, respective prospectus or contact concerned department

REGISTRAR

STEP BY STEP HIGH SCHOOL

TO RISE ABOVE
STEP BY STEP
HIGH SCHOOL

CBSE Affilication No.: 1730602

A Coeducational English Medium School

CLASSES FROM PLAY GROUP TO 12TH

New Feature – Play Group, Nursery, Lkg, Hkg at Sector 14

" A School where Learning is Fun"

Admission Open For 2023-24

SECTOR 11, UDAIPUR-313002
Phone: 0294-2483932, 2481567
Email: contact@stepbystephighschool.org

JOGI KA TALAB, SECTOR 14, UDAIPUR-313002
Phone: 9680520421
Website: stepbystephighschool.org

प्रकाशन की तिथि प्रत्येक माह की 23 तारीख वर्ष 21 अंक 4, Postal Registration No. RJ/UD/29-62/2021-23 Posting Date: 27th-28th of Every Month RNI No. RAJHIN/2003/9297 Posting Office: Chetak Circle, Udaipur

'प्रत्यूष' पत्रिका डिलिवर्ड न होने की स्थिति में इस पते पर लौटाएं: पंकज कुमार शर्मा, 2, रक्षाबंधन, मेहतों का पाड़ा, धानमण्डी, उदयपुर (राज.) 313 001